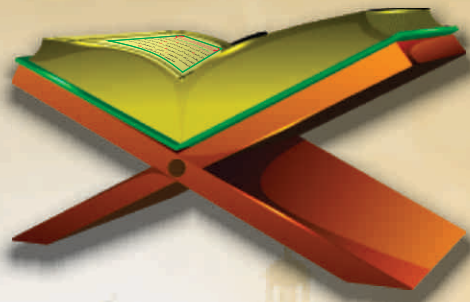


कुआन की शितल छाया



लेखक:

डॉ. मोहम्मद ज़ियाउर्रहमान आजमी

एम.ए.पी.एच.डी.

सुबाई जमीअत अहले हदीस, मुम्बई

कुरआन की शीतल छाया

लेखक:

डॉ. मोहम्मद ज़ियाउर्रहमान आजमी

एम.ए.पी.एच.डी.

सुबाई जमीअत अहले हदीस, मुम्बई

SUBAI JAMIAT AHLE HADEES MUMBAI





अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो
अत्यंत दयावान और कृपाशील है

विषय सूची

प्रकाशक की ओर से	7
कुछ लेखक के बारे में	10

पहला भाग

कुरआन तथा उसके लाने वाले का संक्षिप्त जीवन चरित्र	12
मुहम्मद ﷺ का संक्षिप्त जीवन परिचय	23
मक्का काल	28
आप के चचा अबू तालिब का देहान्त	34
खदिजा का देहान्त	34
मक्के से बाहर इस्लाम का प्रचार	34
इस्लाम मदीने में	35
नबी ﷺ मदीने में	39
मदीने के यदूदियों के साथ प्रतिज्ञा	41
बदर का युद्ध	41
उहद का युद्ध	41
आप ﷺ के चमत्कार	46
कुरआन की प्रमुख शिक्षायें	49
कुरआन और अल्लाह की महान सत्ता	49
कुरआन और इलाह (पूज्य प्रभू)	53
ईश्वर पर विश्वास	59
कुरआन और ईशदूत	63
कुरआन और प्रलय दिवस	68
कुरआन और ज्ञान	71
शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा	73
ज्ञान छिपाने वालों की कड़ी आलोचना	75
कुरआन और समाज	80
संगठन और कुरआन	80
माँ-बाप और कुरआन	82
न्याय और कुरआन	84

कुरआन और राजनीतिक व्यवस्था	88
वास्तविक शासक	88
सर्वोच्च कानून	91
आचार संहिता	91
कुरआन और नैतिक मूल्य	93
मुक्ति मार्ग	93
भलाई का मार्ग	94
क्षमा भाव	97
शान्ति मार्ग	98
प्रेम भावना	99

दूसरा भाग

विश्वास की शीतल छाया में	103
सत्य की खोज	105
दाढ़ी आँसुओं से भीग गई	109
कुरआन और मार्गदर्शन	116
हज़रत उमर और आटे की बोरियाँ	118
हज़रत उमर और मिलावटी दूध	120
हज़रत उमर और समानता	123
प्यारे बेटे के नाम पिता का खत	125
वह अपने किए पर पश्चाताप करने लगी	129
उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ खलीफ़ा बनते हैं	131
एक गिलास पाना	134
हसन बसरी का एक विचारात्मक पत्र	137
यह तुम्हारी बीवी है	141
मदीने में रमज़ान का स्वागत	143
एक वे भी थे!	148
वे भी व्यापार करते थे	151
तब और अब	154
इच्छाओं का अंतिम केन्द्र	156
कुरआन जगत प्रसिद्ध विभूतियों की नजर में	159

SUBAI JAMIAT AHLE HADEES MUMBAI

प्रकाशक की ओर से

इस्लाम पूरे संसार में फैला हुआ एक शांतिपूर्वक धर्म है, जो जीवन के सारे पहलूओं को समेटे हुए है। जिसे अल्लाह तआला ने अपने पवित्र कुरआन के द्वारा सारे समस्याओं के निवारण के रूप में हमारे बीच अपने प्रिय संदेशा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित किया, जहाँ क़यामत तक जीवन के सारे समस्याओं का हल और उसकी शिक्षा पूर्ण अपितु जीवन को पूर्ण रूप से सम्मिलित है। कुरआने करीम अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की ओर से सारे संसार के लिए एक नियम व विधान के रूप में है जो अपने मानने वालों को बेमिसाल जीवन की ओर मार्गदर्शन करता है। कुरआने करीम और उसकी शिक्षा की महानता को स्पष्ट रूप में व्यक्त करने के लिए अल्लाह तआला का यह फ़रमान ही काफ़ी है, अल्लाह तआला का उपदेश है:

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا [الإسراء: ٩]

निःसंदेह यह कुरआन वह मार्ग है जो बहुत ही सीधा है और ईमान वालों को जो नेक आमांल करते हैं इस बात की मंगलसूचना देता है कि उनके लिए बहुत बड़ा बदला है।

ज़ेरे नज़र पुस्तक “कुरआन की शीतल छाया” फ़ज़ीलतुशशैख डॉ. मोहम्मद ज़ियाउर रहमान आज़मी हफ़िज़हुल्लाह की ओर से हिन्दी भाषा में एक उत्तम

परिश्रम है। जिसे आदरणीय डॉ. साहब ने गैर मुस्लिमों के लिए विशेष रूप से लिखा है। पुस्तक के विषय को देखने से अनुमान होता है कि यह पुस्तक अक्काइद, इबादात, मामलात, रहन सहन, अल्लाह और उसके बंदों के अधिकार अथवा जीवन के सारे पहलुओं में कुरआने करीम की बेमिसाल शिक्षाओं और उसके अच्छाइयों व खूबियों पर मुशतमिल आयात और इस्लामी इतिहास के उज्ज्वल कथाओं का संक्षेप व निचोड़ है।

लेखक ने बड़ी श्रेष्ठता व सुन्दरता से इस्लाम की आलमगीरियत और जीवन के सारे पहलुओं में उसकी खूबियों व अच्छाइयों को उजागर किया है।

उमरे के एक सफ़र में अमीरे जमीअत शेख अब्दुस्सलाम सलफ़ी हफ़िज़हुल्लाह ने मदीना तय्यीबा में डॉ. साहब से मुलाक़ात की, वार्तालाप में उन्होंने सुबाई जमीअत मुम्बई की ओर से इस पुस्तक की प्रकाशन की अनुमति मांगी। डॉ. साहब ने बड़ी खुशी से इसकी लिखित अनुमति दी। अल्लाह इन्हें इसका अच्छा बदला दे। आमीन

सुबाई जमीअत अहले हदीस मुम्बई के अधीन तन्मय विभागों में से एक कर्मठ विभाग प्रकाशन का विभाग भी है। इस के अन्तर्गत किताब व सुन्नत की पवित्र शिक्षाओं पर सम्मिलित पुस्तकें समय अनुसार प्रस्तुत की जाती रही हैं, अल-हम्दुलिल्लाह इस विभाग की ओर से गत वर्षों में दसियों पुस्तकें पाठकों के हाथों में आ चुकी हैं, जबकि इस का मासिकपत्र (अल - जमाअ:) पवित्र किताब व सुन्नत पर निर्भर लेखों के द्वारा ईल्म व ज्ञान के प्रकाश बिखेरने में तन्मयता से लगा हुआ है।

सुबाई जमीअत मुम्बई के अमीरे मुहतरम फ़ज़ीलतुशशैख़ अब्दुससलाम सलफ़ी हफ़िज़हुल्लाह अपनी अधिक मसरूफ़ियतों के बावजूद जमीअत व जमाअत की सारी सरगरमियों में पेश पेश रहते हैं और अपनी चौ तरफ़ा योग्यता व क्षमता के द्वारा विशिष्ट रुचि का प्रमाण देते हैं।

प्रकाशन विभाग सुबाई जमीअत अहले हदीस मुम्बई की ओर से इस्लामी भाईयों विशेष रूप में स्वदेशी भाईयों को इस्लाम की अच्छाइयों और खूबियों से सूचित करने और इस्लाम के प्रति भ्रम व गलतफ़हमी को दूर करने के लिए ज़ेरे नज़र पुस्तक “कुरआन की शीतल छाया” का निर्वाचन और इसके प्रकाशन का निर्णय आदरणीय अमीर साहब के इशारों पर सुबाई जमीअत अहले हदीस की मजलिसे इल्मी ने किया है। जो स्वदेशी भाईयों तक इस्लाम का संदेश पहुंचाने के सम्बंध में उनकी गैरत, फिक्रमंदी और प्रमुख रुचि का प्रमाण देती है।

प्रार्थना है कि अल्लाह तआला अमीरे मुहतरम की मनहजी व दावती कोशिशों को कुबूल फ़रमाए और दुनिया व आखिरत में इसका बेहतरीन बदला अज़ा फ़रमाए। आमीन

सुबाई जमीअत की ओर से इस किताब के प्रकाशन पर हम सर्वप्रथम अल्लाह रब्बुल आलमीन का शुक्रिया अदा करते हैं। फिर इसके पश्चात अन्य सहायकों के आभारी हैं। प्रार्थना है कि अल्लाह तआला इस पुस्तक के लेखक और प्रकाशक को अच्छा बदला दे और पाठकगणों के लिए लाभदायक बनाए। आमीन या रब्बल आलमीन।

इनायतुल्लाह सनाबिली मदनी

(प्रकाशन विभाग, सुबाई जमीअतअहले हदीस, मुम्बई)

कुछ लेखक के बारे में

इस पुस्तक के लेखक डॉ. मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आजमी हैं, जो सन १९४३ ई. में एक हिन्दू परिवार में पैदा हुए। हाई स्कूल करने के बाद १९५९ ई. में कुरआन पढ़ने के बाद इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया, फिर अरबी पढ़ने के लिए जामिया दारुस्सलाम उमराबाद, तामिलनाडु चले गए, क्योंकि इस्लाम ग्राहण करने के बाद आजमगढ़, उत्तर प्रदेश में रहना उनके लिए असम्भव हो गया। १९६६ ई. में मौलवी-फ़ाज़िल की डिग्री प्राप्त की। सन १९७० ई. में इस्लामी विश्वविद्यालय मदीना मुनव्वरा से इस्लामी क़ानून में बी.ए. किया। १९७३ ई. में “हज़रत अबू हुरैरह रज़ीयल्लाहु अन्हु और उनकी उल्लिखित हदीसों” के विषय पर शोध कार्य करने के उपलक्ष्य में उन्हें ‘इस्लामिक स्टडीज’ में शाह अब्दुल अज़ीज़ विश्वविद्यालय मक्का मुकर्रमा ने एम. ए. की डिग्री प्रदान की। तत्पश्चात अल-अज़हर विश्वविद्यालय काहिरा से पी.एच. डी की उपाधि प्राप्त की। पी.एच.डी. में उनका विषय था, “पैगम्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद ﷺ का न्याय”। इस विश्वविद्यालय ने १९७७ ई. में उनके शोध कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाधि से उन्हें सम्मानित किया।

डॉ. महोदय ने अरबी, उर्दू और हिन्दी में भारत, पाकिस्तान और मध्य-पूर्व के बहुत से साहित्यिक तथा धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं में अनेकों लेख लिख कर ज्ञान जगत में महत्वपूर्ण योगदान किया है। अब वे १९७८ ई. से मदीना

विश्वविद्यालय में हदीस के प्रोफेसर हैं और अब तक अरबी भाषा में लगभग एक दर्जन पुस्तकें लिख चुके हैं, जो अधिकतर मिस्र एवं लबनान से प्रकाशित हुई हैं, इनमें से कुछ का अनुवाद उर्दू तथा अन्य दूसरी भाषाओं में भी हो चुका है।

प्रस्तुत पुस्तक जिसको डॉ. साहब ने १९६८ ई. में लिखा था जब आप मदीना विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। चूँकि यह किताब गैर मुस्लिम समाज में बहुत लोक प्रिय हुई है, जिसके कारण अब तक इसके पाँच संस्करण निकल चुके हैं। यह इसका छठा संस्करण है, इसमें कुछ लेख अधिक कर दिए गए हैं, जिसके कारण इस पुस्तक का महत्व और बढ़ गया है, आशा है पुस्तक और अधिक पसंद की जाएगी।

पहला भाग

कुरआन

तथा उसके लाने वाले का संक्षिप्त जीवन चरित्र

कुरआन: यह अल्लाह का अंतिम ग्रंथ है, जो अंतिम नबी मुहम्मद ﷺ पर तेइस वर्षों में उतरा। सबसे प्रथम स्वयं नबी ﷺ इसको याद कर लेते थे, फिर आप के साथी (सहाबा) याद कर लेते थे, और नबी ﷺ ही की आज्ञा से इसको विभिन्न वस्तुओं पर लिख लिया जाता था, इस प्रकार पूरा कुरआन जिस प्रकार आज पाया जाता है नबी और आप के सहाबा को स्मरण हो गया था। फिर जब हज़रत अबू बक्र खलीफ़ा बनाए गए तो उन्होंने फैले हुए कुरआन पत्रों को इकट्ठा किया और एक ग्रन्थ के रूप में जमा कर दिया। फिर जब हज़रत उस्मान खलीफ़ा बने तो आप ने इसी ग्रन्थ से विभिन्न प्रतियाँ बनाई और पूर्ण इस्लामी संसार में उसको फैला दिया और आज तक उसी प्रति से कुरआन प्रकाशन होता है। इस प्रकार अल्लाह ने इसमें विभिन्नता पैदा होने से सुरक्षित रखा।

“निःसंदेह कुरआन हम ने ही उतारा है और निः संदेह हम ही इसके रक्षक हैं।”(सूरह हिज़्र-९)

और अब संसार में यह प्रथम एवं अंतिम ग्रन्थ हैं जो अब तक सुरक्षित है, और प्रलय दिवस (क़यामत) तक सुरक्षित रहेगा। इससे पहले जो ग्रन्थ उतरे थे उनमें बहुत सारी तबदीलियाँ (परिवर्तन) हो चुकी हैं।

पहले पहले जब कुरआन लिखा गया तो उसमें बिन्दु नहीं थे। लेकिन जब इस्लामी

संसार अरब से निकल कर अजम तक में फैल गया और बिन्दु के बिना कुरआन पढ़ने में कष्ट होने लगा तो खलीफ़ा ने “अबुल असवद दुवली” को आज्ञा दिया कि वह कुरआन में बिन्दियाँ लगा दे ताकि पढ़ने में गलतियाँ न हों। इस प्रकार अल्लाह ने कुरआन को गलत पढ़ने से भी बचा लिया। फिर जब प्रिन्टिंग प्रेस बन गए तो कुरआन संसार के कोने-कोने में प्रकाशित होने लगा। इस समय सब से बड़ा कुरआन का प्रिंटिंग प्रेस मदीना मुनव्वरा में है जिसका नाम है: “शाह फहद कुरआन प्रेस संस्थान” जिसकी स्थापना सन हिजरी १४०५ (सन ईस्वी ३० अक्टूबर १९८४) में हुई।

यहाँ से २००० ई. तक डेढ़ करोड़ से भी अधिक कुरआन प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार इस संस्थान से सन १९९९ ई. तक उन्तीस भाषाओं में कुरआन का अनुवाद हो चुका है, और वह यह है:

उर्दू, इस्पेनी, अलबानी, इन्डोनेशी, अंग्रेजी, अन्को, उरामी, इगेरिया, बराहोइया, पशतु, बंगाली, बुर्मी, बुस्नी, तामिल, थाईलैंडी, तुर्की, जूलो, सोमाली, चीनी, कश्मीरी, कोरी, फ्रेंच, मक्दूनी, मलयालम, हौसा, यूरबा यूनानी और काज़की।

किसी धार्मिक ग्रन्थ की आज्ञाकारी के लिए सब से प्रथम यह देखना चाहिए कि वह स्वयं अपने विषय में क्या कहता है इसलिए अब आईए देखते हैं कि कुरआन अपने विषय में क्या कहता है।

१-यह अल्लाह की ओर से उतारा गया है।

“और यह कुरआन मेरी ओर ‘वह्य’ किया गया ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें और जिस तक यह पहुँचे सबको सचेत करूँ।” (सूरह अन्आम- १९)

“हे नबी! हम ही ने तुम पर कुरआन एक विशेष ढंग से उतारा” (सूरह दहर- २३)

“हम इस कुरआन के द्वारा जिसको तुम्हारी ओर वह्य कर भेजा है एक

बहुत ही उत्तम प्रिय कहानी सुनाते हैं जिसके विषय में इससे पहले तुम बिल्कुल ही निश्चित थे” (सूरह यूसुफ़- ३)

“हम ने तुम्हें बार-बार दुहराने वाली सात आयतें तथा महा कुरआन दिया।” (सूरह हिज़्र- ८७)

“और तुमको कुरआन (अल्लाह) जो तत्त्वदर्शी तथा ज्ञान वाला है की ओर से दिया जा रहा है” (सूरह नमल- ६)

“क्या इन लोगों के लिए यह अधिक नहीं है कि हमने तुम पर किताब (धर्मग्रन्थ) उतारी, जो इन्हें पढ़कर सुनाई जाती है, निश्चय ही इसमें ईमानवालों के लिए दयालुता तथा अनुस्मारक है” (सूरह अन्नकबूत- ५१)

“यह किताब हम ने तुम्हारी ओर सत्य के साथ उतारी है, अतः तुम अल्लाह ही की इबादत (उपासना) करो धर्म को उसके लिए विशेष करते हुए” (सूरह जुमर- २) (अर्थात् उसके साथ किसी को उपासना में साझीदार मत बनाओ।)

इससे पता चलता है कि कुरआन अल्लाह की किताब है, इस समय संसार में कुरआन के अतिरिक्त कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है, जो प्रत्यक्ष रूप में अल्लाह की किताब होने का दावा करे।

बल्कि कुरआन ने तो नबी ﷺ को भी धमकी दी है कि:

“अगर तुम ने अपनी ओर से कोई बात कह के कुरआन की ओर सम्बन्धित किया तो हम तुम्हारा दाहिना हाथ पकड़ लेते, और तुम्हारी गर्दन की रग काट देते” (सूरह हाक्क़ः - ४५)

और जब ऐसा नहीं हुआ तो मालूम हुआ कि पूरा कुरआन अल्लाह की ही ओर से है। इसलिए एक स्थान पर तो कुरआन ने यह स्पष्ट भी कर दिया कि नबी ﷺ जो कुछ कहते हैं वह वहय के द्वारा ही कहते हैं। (सूरह नजम- ३)

२- कुरआन एक ऐसा धर्मशास्त्र है कि सारे मनुष्य मिल कर भी वैसा ग्रन्थ नहीं बना सकते।

“कह दो! यदि मनुष्य और ‘जिन्न’ इस के लिए इकट्ठा हो जाएं कि इस कुरआन जैसी कोई चीज लाएं, तो वे इस जैसी कोई चीज न ला सकेंगे। चाहे वे परस्पर एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न बन जाएं” (सूरह बनी इस्राईल-८८)

कुरआन ने यह चैलेंज उन लोगों को दिया था जो अपने आपको अरबी भाषा का महान विद्वान विचार करते थे। उनके मुक़ाबले में नबी ﷺ अनपढ़ थे। फिर भी वह कहते थे कि यह मुहम्मद अपनी ओर से लाते हैं इस पर कुरआन ने यह चैलेंज किया कि तुम और जिन्न मिलकर भी क्या ऐसा कुरआन ला सकते हो? उत्तर यही रहा है कि नहीं ला सके।

कुरआन ने केवल दस सूरतें लाने के लिए चैलेंज किया :

“क्या वह कहते हैं: उसने इसे स्वयं गढ़ लिया है, कह दो ! अच्छा इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ, और अल्लाह के अतिरिक्त जिस किसी को चाहो बुला लो यदि तुम सच्चे हो।” (सूरह हूद-१३)

जब वह दस सूरतें लाने में भी असफल रहे तो फिर कुरआन ने केवल एक सूरह लाने का चैलेंज कर दिया।

“यदि तुम उस चीज के विषय में जो हम ने अपने बन्दे पर उतारी है सन्देह में हो तो उस जैसी एक ‘सूरह’ ला कर दिखा दो, और अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिसे चाहो अपनी सहायता के लिए बुला लो, यदि तुम सच्चे हो” (सूरह बक्रा-२३)

३-कुरआन में शिफा (स्वास्थ्य) और रहमत (दयालुता) है।

“और हम जो कुरआन से उतारते हैं इसमें ईमान लाने वालों के लिए शिफा (स्वास्थ्य) और दयालुता है, और अत्याचारियों के लिए उसमें घाटा ही

घाटा है” (सूरह बनी इस्राईल- ८२)

अर्थात् कुरआन हर प्रकार के हृदय तथा शारीरिक रोगों से शिफा करता है। परन्तु अनिवार्य है कि उस पर ईमान लाया जाए, हृदय में उसे बसाया जाए, उसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जाए, और जो लोग उस पर ईमान नहीं लाते, बल्कि उसके ईशवाणी होने को झुठलाते हैं ऐसे लोगों के लिए घाटा ही घाटा है न तो वह संसार में उससे कोई लाभ उठा सकेंगे न प्रलय दिवस में। इसी प्रकार न तो वह उसके द्वारा अपने हृदय का रोग दूर कर सकेंगे न शरीर का।

सूरह तौबा में आया है:

“और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो कुछ लोग यह पूछते हैं कि इस सूरह ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया? तो जो लोग ईमान लाए इस सुरत ने उनके ईमान में प्रगति प्रदान किया और वह प्रसन्न हो उठे, फिर जिनके हृदयों में रोग है इस सूरह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और वह कुफ्र की अवस्था में ही मर गए” (सूरह तौबा- १२४, १२५)

४-कुरआन को अल्लाह ने अरबी भाषा में उतारा

क्योंकि जिस पर उतारा गया था वह अरबी थे। उनके प्रथम संबोधित भी अरबी थे। इसलिए किसी और भाषा में उतारता तो बड़ी सरलता से उसे ठुकरा देते।

“और इसी प्रकार (हे नबी) हम ने तुम्हारी और अरबी कुरआन ‘वह्य’ किया” (सूरह शूरा- ७)

“और यदि हम इसे अजमी (अरबी भाषा के अतिरिक्त) कुरआन बना देते तो ये लोग कहते इसकी बातें क्यों न खोल-खोल कर प्रत्यक्ष की गईं, यह क्या कि एक अजमी और एक अरबी ” (सूरह हा-मीम सज्दा - ४४)

“यह वह पुस्तक है जिसकी बातें खोल-खोल कर प्रत्यक्ष की गई हैं। कुरआन अरबी में उन लोगों के लिए है जो ज्ञान रखते हैं।” (सूरह हा-मीम सज्दा - ३)

५-कुरआन की महानता

कुरआन इस पृथ्वी पर अल्लाह का कलाम है, जिसमें उसने पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के उत्तरदायित्व तथा अधिकारी होने को खोल-खोल कर बयान किया है, ताकि वह दोनों संसारों में सफल रहे, परंतु देखने में यही आया है कि वह इन सब बातों से निश्चेत पड़ा हुआ है। जब कि कुरआन की महानता यह है कि अगर पर्वत जैसी महान वस्तु में भी प्राण होता और उसको कुरआन दिया जाता तो वह काँपने लगता।

“अगर हम कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तुम उसको देखते कि वह अल्लाह के भय से फटा जा रहा है। और यह बातें हम लोगों के लिए इसलिए बयान करते हैं ताकि वह विचार करें” (सूरह हश्र- २१)

इसलिए प्रलय दिवस को नबी ﷺ यह उपलब्ध करेंगे:

“और रसूल कहेंगे, हे रब! निश्चय ही मेरी जाति वालों ने इस कुरआन को छोड़ रखा था” (सूरह फुरक़ान- ३०)

६- कुरआन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसकी शिक्षाएं संसार में रहने वाले सारे मनुष्यों के लिए हैं

इसीलिए कुरआन बार-बार यह कह कर संबोधित करता है ‘ऐ लोगों’, ‘ऐ मनुष्यों’, देखिए उदाहरण के लिए:

“ऐ लोगों अपने उस रब की उपासना करो जिसने तुम्हें और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम उसकी याचना से बच सको” (सूरह बक्रा- २१)

“हे मनुष्य! किस चीज़ ने तुझे अपने उदार रब के बारे में धोखे में डाल रखा है” (सूरह इंफ़ितार- ६)

इस समय पृथ्वी पर यह तन्हा धर्मशास्त्र है जो सारे मनुष्यों को संबोधित करते हुए इसे ग्रहण करने का आदेश देता है इसलिए यह विचार गलत है कि यह किसी एक जाति की धर्मपुस्तक है। बल्कि यह हर उस व्यक्ति की धर्मशास्त्र है जो उसे ग्रहण

कर ले।

इसीलिए सूरह “सबा” में बड़े ही प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह ने बता दिया है कि हे मुहम्मद!

“हम ने तुम्हें सारे ही मनुष्यों के लिए शुभसूचक तथा सचेत करने वाला बनाकर भेजा है, परंतु अधिकतर लोग जानते नहीं” (सूरह सबा- २८)

शुभ-सूचक उनके लिए जो इसे ग्रहण करें, और सचेत करने वाला उनके लिए है जो इसे ठुकरा दें, यह विचार कि कुरआन में जो कुछ आया है उससे मेरा क्या संबन्ध? यह वह लोग हैं जो कुरआन की वास्तविकता को समझते नहीं, बस इनके लिए परलोक में यातना ही यातना है। और ग्रहण करने वालों के लिए स्वर्ग और उसकी नेमतें।

७-कुरआन एक ऐसा धर्मग्रन्थ है कि जिसको जितनी बार भी पढ़ा जाए उसमें हर बार नूतनता तथा नवीनता का अनुभव होता है और ऐसा प्रतीत होता है कि अभी-अभी उतरा है। उसके पाठ से नेत्र भीग जाते हैं। हृदय को शान्ति प्राप्ति हो जाती है और सारी इन्द्रियें स्थिर हो जाती हैं।

“अल्लाह ने सर्वोत्तम बात उतारी है, एक ऐसा ग्रन्थ जिसके सभी भाग परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, और जिन्हें बार-बार दुहराया गया है, उससे उनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अल्लाह से डरते हैं। फिर उनके शरीर और हृदय नर्म पड़ कर अल्लाह का स्मरण करने लगते हैं। यह अल्लाह का मार्गदर्शन है। जिससे वह सीधे मार्ग पर ले आता है जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह ही पथभ्रष्ट कर दे उसके लिए कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं है” (सूरह जुमर- २३)

कुरआन की इन विशेषताओं को जान लेने के पश्चात अब आईए मैं संक्षेप में कुरआन व्याख्या का वर्णन कर दूँ। कुरआन समझने के लिए दो विशेष साधन हैं।

प्रथम: स्वयं कुरआन

द्वितीय: कुरआन के अतिरिक्त साधन

प्रथम: स्वयं कुरआन का अर्थ है कि कुरआन एक बात को विभिन्न प्रकार से बयान करता है। इसलिए अगर आप उस विषय में सम्पूर्ण ज्ञान चाहते हैं तो सबसे प्रथम यह करें कि उन सारी आयतों को इकट्ठा कर लें, और फिर उनको अपने विषय के अनुसार तरतीब दे लें। इस प्रकार आप को कुरआन का मूल सिद्धांत इस विषय में प्रकट हो जाएगा। कुरआन ने स्वयं इसकी ओर विभिन्न आयतों में संकेत किया है।

“अल्लाह ने सर्वोत्तम बात उतारी है, एक ऐसी किताब जिसके सभी भाग परस्पर मिलते-जुलते हैं और बार-बार दुहराए गए हैं” (सूरह जूमर- २३)

“और हम ने इस कुरआन में लोगों के लिए हर एक उदाहरण को विभिन्नत प्रकार से बयान कर दिया है, परंतु अधिकतर लोगों ने इसका इंकार कर दिया” (सूरह बनी इस्राईल- ८९)

तथा देखिए: सूरह कहफ़ आयत नं. ५४, सूरह त्राहा आयत नं. ११३, सूरह अंआम आयत नं. ४६

उदाहरण के लिए देखिए सूरह बक्रा आयत: ३७:

“फिर आदम ने अपने रब से कुछ शब्द पा लिए तो उसने उसका पश्चाताप स्वीकार कर लिया”

यह शब्द क्या थे देखिए सूरह आराफ़ आयत २३:

“दोनों बोले: हमारे रब! हम ने अपने ऊपर अत्याचार किया, यदि तूने हमें क्षमा न किया, और हम पर दया न किया तो निश्चय ही हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे”

इसी प्रकार रसूलों की कहानियाँ तथा जातियों का कथन कुरआन ने भिन्न-भिन्न

स्थानों पर उनसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए बयान किया है।

इन सब आयतों को एक स्थान पर इकट्ठा करें तो उनसे उस नबी के विषय में बहुत कुछ जानकारी तो मिल जाएगी कुरआन का व्याख्या कुरआन से करने के लिए महान विद्वान “शेख मुहम्मद अमीन शनक्रीती” ने “अज़वाउल बयान” नाम की एक तफ़्सीर लिखी है जो आठ भागों में है, और इस समय अरबी तफ़्सीरों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

फिर चूँकि कुरआन अरबी भाषा में उतरा है जैसा पहले आ चुका है इसलिए इसको समझने के लिए अरबी भाषा का विद्वान होना अनिवार्य है, जो लोग कुरआन की व्याख्या अनुवादों से करते हैं उनसे अवश्य त्रुटि हो सकती है। इसी प्रकार जो लोग अनुवाद पढ़कर कुरआन पर टिप्पणी करने लगते हैं वह भी ग़लती करते हैं।

द्वितीय साधन: कुरआन को समझने और उसकी व्याख्या करने का द्वितीय साधन कुरआन लाने वाले मुहम्मद ﷺ की सही हदीस (कथन) तथा आप का व्यवहार है। इसलिए कि कुरआन को उससे अधिक कोई और नहीं समझ सकता जिस पर उतारा गया, इसलिए प्रत्येक कर्म जो मुहम्मद ﷺ ने किया और जो कुछ कहा वही कुरआन की सही व्याख्या है। स्वयं कुरआन में इस ओर संकेत किया गया है। उदहारण के लिए देखिए अल्लाह का यह कहना:

“हम ने इस किताब को तुम्हारी ओर सत्यता के साथ उतारा है, ताकि तुम लोगों के बीच अल्लाह के बताए हुए संविधान के अनुसार निर्णय करो, और तुम विश्वासघात करने वालों की ओर से झगड़ने वाले मत बन जाओ”(सूरह निसा-१०५)

“और हम ने तुम पर ज़िक्र (कुरआन) उतारा है, ताकि तुम लोगों को इसकी व्याख्या बयान करो, जो उनकी ओर उतारा गया है, सम्भव है वह सोच-विचार करें” (सूरह नहल-४४ एवं ६४)

इसी प्रकार एक सहीह हदीस में यह आया है:

“मुझे कुरआन दिया गया है, और उसके साथ उसी की तरह” (मुसनद अहमद)

इसीलिए हदीस इकट्ठा करने वालों ने अपने हदीस ग्रन्थों में तफ़सीर अध्याय रखा है अर्थात् “सुन्नः” जो कुरआन की व्याख्या है, इसलिए कुरआन की कोई व्याख्या जो सही “सुन्नः” से टकराएगी वह अनुचित मानी जाएगी।

कुछ लोगों का विचार है कि कभी-कभी सही “सुन्नः” कुरआन की अपनी व्याख्या से टकरा जाती है, परंतु यह बात बिल्कुल अशुद्ध है क्योंकि सही हदीस का अर्थ ही यह है कि वह कुरआन के विरुद्ध नहीं है।

४- कुरआन की व्याख्या करते हुए हमें स्वयं कुरआन या हदीस में कोई विवरण न मिले तो फिर हमें सहाबा (नबी के साथियों) के वचन की ओर प्रवृत्ति करनी चाहिए क्योंकि कुरआन को उतरते हुए उन्होंने स्वयं देखा है। इसलिए उनके विचार को कुरआन की व्याख्या करते हुए अधिक महत्व देनी चाहिए। विशेषकर चारों खुलफ़ा, अबू बक्र, उमर, उस्मान तथा अली। उनके पश्चात धर्मशास्त्र विद्वान जैसे, अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अब्दुल्लाह बिन अब्बास इत्यादि।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद का एक बहुत प्रसिद्ध कथन है:

“मैं अल्लाह की शपथ खाकर बताता हूँ जिसके अतिरिक्त कोई और नहीं है कि कुरआन में कोई ऐसी आयत नहीं है जिसके विषय मैं मुझे यह ज्ञान न हो कि यह किसके बारे में उतरी, कहाँ उतरी, अगर मुझे यह ज्ञान हो जाए कि किसी के पास कुरआन के विषय में मुझ से अधिक ज्ञान है तो मैं उसकी ओर अपनी सवारी फेर दूँ”

एक सहीह हदीस में अब्दुल्लाह बिन अब्बास के लिए नबी ﷺ ने यह दुआ की:

“हे अल्लाह इसको दीन में समझ-बूझ दे और कुरआन की व्याख्या सिखा” इसलिए उनको “तरजुमानुल कुरआन” कहा गया है। (कुरआन के

महान विद्वान)

५-और फिर इसके बाद “ताबई” के वचन को देखना चाहिए (ताबई जिसने सहाबी से ज्ञान सीखा हो) क्योंकि इन्होंने कुरआन की व्याख्या सहाबा से लिया है। इन “ताबईयों” में मुजाहिद, सईद बिन जुबैर इत्यादि हैं।

मुहम्मद ﷺ का संक्षिप्त जीवन परिचय

इस्लाम से पहले अरबों में विभिन्न विश्वास के लोग पाए जाते थे। उनको दो दिलों में बाट सकते हैं। एक अधर्मी जो अल्लाह ही का इंकार करते थे। और कहते थे कि हमारे इस जीवन के पश्चात कोई और जीवन नहीं है। हम तो केवल इस जीवन में ही खायेँ पीयेँगे और फिर मर जाएँगे, न हमें दुबारा उठाया जाएगा और न हम से प्रत्यपकार का बदला लिया जाएगा।

दूसरा दल धार्मिक लोगों का था। यह भी दो भागों में बटे हुए थे। एक उनका जो एकेश्वरवाद पर विश्वास करते थे। जिनको “हनीफ़िया” कहा जाता था परंतु यह केवल चन्द लोग थे। दूसरा भाग उनका था जो मूर्ति पूजा करते थे। उनका विश्वास था कि फरिश्ते और पूर्वजों की आत्मायें आध्यात्मिक शक्ति हैं इनकी पूजा से अल्लाह को प्रसन्न किया जा सकता है इसीलिए इन्होंने उनकी मूर्तियाँ बना रखी थीं, जिनके आगे सर झुकाते थे, और उनसे अपनी आवश्यकताएं माँगा करते थे। और यह विश्वास रखते थे कि यह लोग अल्लाह के पास हमारा अनुशंसा करेंगे।

इन बुतों में प्रसिद्ध बुत यह थे: हुबल, वद, सुवाअ, यगूस, यऊक़, नस्र, उज़्ज़ा, लात और मनात। इसी प्रकार हज़रत इब्राहीम, हज़रत ईसा, हज़रत मरियम के भी बुत बना रखे थे। बल्कि उनको तो काबे में रखा हुआ था।

ऐसी दशा में हज़रत मुहम्मद ﷺ को अल्लाह ने नबी बनाकर भेजा, ताकि लोगों को मूर्ति पूजा छोड़कर एक अल्लाह की उपासना का निमन्त्रण दें और अधर्मियों को धर्म का मार्ग प्रदान करें।

मुहम्मद ﷺ के जीवन को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं।

पहला भाग: जो आप के जन्म से प्रारम्भ होता है और नुबूवत मिलने तक अर्थात् चालीस वर्ष की आयु तक फैला हुआ है। **दूसरा भाग:** जो नुबूवत के पश्चात

अर्थात् चालीस वर्ष की आयु से प्रारम्भ होता है और आप के अंतिम जीवन पर समाप्त होता है।

पहला भाग: आप के जीवन चरित्र से प्रथम हम यहाँ कुछ अरब देश और मक्का नगर पर प्रकाश डालते हैं। अरब की भूमि सीरिया से लेकर यमन और लाल सागर से लेकर अरब खाड़ी तक फैला हुआ है। इनका वंश इस्माईल बिन इब्राहीम से प्रारम्भ होता है और हज़रत मुहम्मद ﷺ हज़रत इस्माईल ही की संतान से थे।

आप का जन्म १२ रबीउल अव्वल, सोमवार तदनुसार २० अथवा २२ अप्रैल ५६९ ई. को मक्के में हुआ।^① आप के पिता अब्दुल्लाह का पहले ही देहान्त हो चुका था। सहीह अहदीस में आया है कि आप की माता ने देखा कि आप के जन्म के बाद एक ऐसा प्रकाश निकला जिसने शाम तक के जगत को जगमगा दिया।^② जब आप पैदा हुए तो किसी निकट के गाँव में भेज दिए गए जहाँ आप ने “हलीमा सादिया” का दूध पिया और देहात के खुले वातावरण में पलते रहे। परंतु यहाँ एक ऐसा चमत्कार घटित हुआ जिस से घबरा कर हलीमा ने आप की माता आमिना के पास वापस कर दिया। जैसा कि सहीह मुस्लिम में वर्णन किया गया है:

“आप ﷺ कुछ मित्रों के संघ खेल रहे थे कि इतने में जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आए और आप को नीचे गिरा कर आप के सीने को फाड़ा और उसमें से आप के हृदय को निकाला और फिर उसको “ज़मज़म” के पानी से जो एक सोने के बरतन में लाए थे उसको धोया, फिर उसको अपने स्थान पर वापस कर दिया।^③

उस समय आप पाँच वर्ष के थे। इस चमत्कार का अर्थ है कि अल्लाह ने आप के हृदय से हर प्रकार के गलत विचारों, शिर्क एवं मूर्ति पूजा इत्यादि को निकाल

^① जिसको “हाथी वर्ष” भी कहते हैं। इसलिए कि इसी वर्ष “हब्शा” के बादशाह ने काबे पर आक्रमण किया था जिसका वर्णन कुरआन में भी आया है और अरब किसी महान घटना को ऐतिहासिक दिवस का चिन्ह मानते थे।

^② मुस्तदरक हाकिम (२/६००) मुसनद अहमद (४/१२७)

^③ सहीह मुस्लिम (१/१४७)

दिया। और एक प्रकार से आप को भविष्य में दी जाने वाली नुबूवत के लिए तैयार किया जाने लगा। अभी छः वर्ष के भी न होने पाए थे कि आप की माता आमिना का भी देहान्त हो गया। अब आप एक अनाथ जीवन व्यतीत करने लगे। मगर आप के दादा “अब्दुल मुत्तलिब” ने अब आप के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी ले ली परंतु जब आप की आयु आठ वर्ष की हुई तो वह भी देहान्त कर गए और अपने पुत्र अबु तालिब को आप का उत्तरदायी बनाया। अबु तालिब को आप से बहुत प्रेम था। वह हर प्रकार से आप का विचार रखते थे। अपने साथ व्यापार आदि की यात्रा में भी साथ रखते थे। आप ﷺ भी उनकी हर प्रकार सहायता करते थे। सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में है कि आप मक्के वालों की बकरियाँ चराया करते थे।^① इससे स्पष्ट होता है की अबु तालिब की आर्थिक अवस्था कुछ अच्छी नहीं थी इसलिए आप बकरियाँ चरा कर उनकी सहायता करते थे।”

आपका पहला विवाह:

अभी आप पचीस वर्ष के एक युवक थे कि आप की चर्चा पूरे कुरैश में प्रसिद्ध हो गई कि आप बड़े सच्चे और नेक आदर्श के हैं। यह सुनकर कुरैश ही की एक मान्य महिला जिनका नाम खदीजा था। इस समय खदीजा की आयु ४० वर्ष की थी। जो दो बार विधवा हो चुकी थीं। आप ﷺ को विवाह का पैगाम दिया, जिसे आप ने स्वीकार कर लिया। विवाह के बाद आप हज़रत खदीजा के घर में रहने लगे जो “मरवा” से थोड़े फ़ासले पर है। आज कल वहाँ कुरआन पाठशाला बना हुआ है जहाँ छोटे-छोटे बच्चे कुरआन स्मरण करते हैं, आप हिजरत करने तक इसी घर में रहे। हज़रत खदीजा से छः बच्चे पैदा हुए, दो लड़के क़ासिम और अब्दुल्लाह जिनकी उपाधि त्रैय्यब और त़ाहिर थी। दोनों पुत्र छोटी आयु ही में देहान्त कर गए, चार पुत्रियाँ ज़ैनब, उम्मे कुलसूम, फ़ातिमा और रूक़ैया, यह चारों मुसलमान हुईं। हिजरत के तीन वर्ष पूर्व हज़रत खदीजा का देहान्त हो गया।

① सहीह बुखारी (४/१४१) सहीह मुस्लिम (१४/४-५)

जब आप की आयु पैंतीस वर्ष की हो गई तो कुरैश ने “काबे” को दुबारा बनाने की योजना बनाई परंतु जब “हज्रे अस्वद” को अपने स्थान पर रखने का समय आया तो आपस में भिन्न हो गए बल्कि युद्ध के निकट हो गए, क्योंकि प्रत्येक कुटुम की इच्छा थी कि इस पवित्र काम को हम करें। अंत में सबसे अधिक आयु के पुरुष ने यह परामर्श दिया कि कल जो व्यक्ति सबसे पहले काबे में प्रवेश करेगा वही मध्यस्थ होगा। दूसरे दिन मुहम्मद ﷺ ने सब से पहले काबे में प्रवेश किया, आप को देखते ही सारे कुटुम वाले कह उठे कि यह तो बड़े न्यायधारी हैं हम इनको पंच स्वीकृत करते हैं। जब यह समस्या आप के समक्ष रखी गई तो आप ने एक चादर मंगाया और उसमें “हज्रे अस्वद” को रख दिया और सभी कुटुम वालों ने कहा चादर का कोई भाग पकड़ कर उसको ऊपर उठाओ, फिर आप ने हज्रे अस्वद को चादर में से निकाला और उसके स्थान पर रख दिया।^① इस प्रकार आप के इस उपाय से एक भंयकर युद्ध रूक गया। इसमें जहाँ आप के बुद्धिमान होने का लक्ष्य मिलता है वहीं यह बात भी सिद्ध हो जाती है कि आप नुबूत से प्रथम ही अपनी जाति में निक्षेप प्रसिद्ध थे।

चालीस वर्ष के होने वाले थे कि आप को ऐसे स्वप्न दिखाई देने लगे जो दूसरे दिन वैसा ही होता, यह एक प्रकार से आप को बताया जा रहा था कि आप पर “वह्यी” उतरने वाली है। अब आप को जब भी अवसर मिलता “हिरा” नामी पर्वत पर चले जाते और अल्लाह के स्मरण में लग जाते, अधिकतर तन्हा रहते और इस तन्हाई में अल्लाह और उसके बनाए हुए संसार पर विचार करते रहते। आप अपनी जाति को देखते जो मूर्ति पूजा में लगी हुई थी तो इससे आप को बड़ा दुख होता था। आप चाहते थे कि लोग शिर्क और मूर्ति पूजा छोड़ कर अल्लाह की उपासना करें, जिसने उनको और सारे संसार को बनाया है। इसीलिए आप को जब भी अवसर मिलता हिरा नामी पर्वत की एक गुफा में चले जाते और अल्लाह

^① देखिए: मुस्नद अहमद (३/४२५) तथा हाकिम मुस्तदरक (३/४५८) हाकिम ने सहीह कहा है।

के ध्यान और उपासना में लग जाते।

जब आप की आयु चालीस वर्ष की हो गई तो सोमवार के दिन रमज़ान में एक चमत्कार प्रकट हुआ। आप अल्लाह की याद में लीन थे कि ज़िब्रील आए और कहा: मैं अल्लाह का फरिश्ता हूँ और उसी के आदेश से आप के पास “वह्यी” लेकर आया हूँ, इसलिए आप पढ़िए, आप ने कहा: मैं पढ़ना नहीं जानता तब उसने आप को पूरी शक्ति से अपनी ओर खींच कर भींचा और फिर छोड़ दिया और कहा, पढ़िए! आप ने फिर कहा मैं पढ़ना नहीं जानता, उसने फिर अपनी ओर खींच कर भींचा और छोड़ दिया, फिर कहने लगा, पढ़िए! आपने फिर कहा मैं पढ़ना नहीं जानता। तीसरी बार फरिश्ते ने कहा:

“पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने मनुष्य को जमे हुए रक्त से पैदा किया, पढ़ो तेरा रब बड़ा महान है, जिसने क़लम के द्वारा शिक्षा दी, मनुष्य को वह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह नहीं जानता था।” (सूरह अलक़-१-५)

यह पहली वह्यी थी, इसके पश्चात आप तुरंत घर लौट आए। आप का हृदय बड़े जोर से धड़क रहा था, आप ने घर जाते ही अपनी पत्नी ख़दीजा से कहा, मुझे कम्बल उढ़ा दो, जब आपका मन शांत हुआ तब आप ने सारी कथा ख़दीजा को सुनाई और यह भी कहा, मुझे अपनी जान का भय है, आप की पत्नी ने आप को तसल्ली दी और कहा : यह कैसे हो सकता है आप को अल्लाह कदापि कष्ट नहीं पहुँचाएगा। आप तो सम्बन्धियों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, सदैव सत्य बोलते हैं, लोगों का बोझ उठाते हैं, मेहमानों का आवभगत करते हैं, अनार्थों की सहायता करते हैं तो ऐसे व्यक्ति को अल्लाह कैसे कष्ट देगा। फिर वह आप को अपने चचा के पुत्र “वरक़ा बिन नोफ़ल” के पास ले गई, जो ईसाई धर्म ग्रहण कर चुके थे और ईसाई धर्म कि पुस्तकें भी पढ़ चुके थे तथा इंजील को अरबी भाषा में लिखते थे। उस समय उनकी आयु ९० वर्ष की थी। उसने आप से सारा हाल सुनने के बाद कहा, अल्लाह की शपथ! यह तो वही फरिश्ता है जो मूसा के पास

आया था, मुझे विश्वास है कि आप को अल्लाह ने रसूल बनाया है। काश! मैं उस समय तक जीवित रह सकता जब आप कि जाति आप की विरोधी बन जाएगी और आप को यहाँ से निकाल देगी। आप ने आश्चर्य चकित होकर पूछा, क्या मुझे यहाँ से निकाल दिया जाएगा? उसने कहा, हाँ। फिर कहा, काश मैं उस समय जीवित रहता तो आप की भरपूर सहायता करता। इसके कुछ समय बाद वर्का का देहान्त हो गया।

फिर छः मास तक “वह्यी” नहीं आई जिसके कारण आप बहुत दुखी दिखाई देने लगे, यह एक प्रकार से आप की परीक्षा थी कि आप ‘वह्यी’ (जो अल्लाह) की ओर से होती है और वह जो शैतान की ओर से हृदय में डाली जाती है में अंतर कर सकें। फिर छः मास के पश्चात “वह्यी” यह थी।

“हे कमली ओढ़ने वाले उठ! और लोगों को उनकी गुमराही से डरा, और अपने रब की महानता बयान कर और अपने आप को हर प्रकार की गंदगी से पवित्र रख।” (सूरह मुदस्सिर: १-५)

(अर्थात् वह गंदगी चाहे शिर्क की हो या मैल कुचैल की)^①

अब आप के कंधों पर भटकती हुई मानव जाति को सत्य मार्ग दिखाने की महान जिम्मेदारी डाल दी गई, यहाँ से आप की नबूवत प्रारम्भ होती है। जिसके दो काल हैं। एक मक्का काल जो तेरह वर्ष तक और दूसरा मदीना काल, जो दस वर्ष तक आप के मृत्यु पर समाप्त होता है।

अब आईए प्रत्येक काल पर संक्षेप में प्रकाश डालते हैं।

मक्का काल:

जब मुहम्मद ﷺ ने इस्लाम धर्म का प्रचार आरम्भ किया तो सबसे पहले जो ईमान लायीं वह आप की महान पत्नी हज़रत खदीजा थीं जिन्होंने आप की भरपूर

^① देखिए: बुखारी (८/६७८) तथा मुस्लिम (१/१४३)

सहायता की। फिर हज़रत अली जो आप के चचा अबू तालिब के पुत्र थे वह भी इस्लाम लाए, उनकी आयु उस समय केवल दस वर्ष की थी, और अधिक आयु वालों में से हज़रत अबू बक्र थे जिनकी आयु उस समय अड़तीस वर्ष की थी, इस्लाम लाए और सेवकों में हज़रत ज़ैद बिन हारिस: इस्लाम लाए।

सहीह बुख़ारी^① की एक हदीस से प्रतीत होता है कि हज़रत साद बिन अबी वक्रकास तीसरे व्यक्ति हैं जो इस्लाम लाए। अर्थात् हज़रत ख़दीजा तथा हज़रत अली के पश्चात जो इस्लाम लाए वह साद थे।

तीन वर्ष तक आप गुप्त निमंत्रण देते रहे और लोग इस्लाम में प्रवेश करते रहे। आप ने जिन्नो को भी इस्लाम की ओर बुलाया, और उनके एक समूह ने इस्लाम ग्रहण कर लिया।

तीन वर्ष व्यतीत होने के बाद अल्लाह ने यह आयत उतारी:

“और अपने सगे-सम्बन्धियों को अल्लाह से डराओ” (सूरह शुअरा: २१४)

अर्थात् अपने निकटतम नातेदारों को इस्लाम का निमंत्रण दो और उनको आने वाली यातना से सचेत करो। वह यह कि मृत्यु के पश्चात आने वाले जीवन में केवल इस्लाम पर विश्वास लाने से ही स्वर्ग में प्रवेश पा सकते हैं, दूसरी दशा में वह सदैव के लिए नर्क में डाल दिए जाएंगे।

इस आयत के उतरने के बाद आप सफ़ा नामी एक पहाड़ी पर चढ़ गए और वहाँ खड़े होकर पुकारा: “या सबाहा”^② यह सुनकर कुरैश वंश के लोग इकट्ठा हो गए। अब आप ने एक-एक समूह को पुकार-पुकार कर कहा: अगर मैं तुमसे यह कहूँ कि इस पहाड़ी के पीछे से तुम पर आक्रमण होने वाला है तो क्या तुम मेरी

^①सहीह बुख़ारी (७१८३, १७०)

^②इसका परिभाषिक अर्थ है: भोर में आक्रमण करना! अरबों में यह रीति थी कि किसी भीषण भय के समय कोई व्यक्ति ऊँची पहाड़ी पर चढ़ कर यह शब्द कहता था और लोग इसको सुनकर इकट्ठा हो जाते थे।

बात को सत्य मानोगे ? तो लोगों ने कहा: हम ने कभी आप को झूठ बोलते हुए नहीं पाया है इसलिए आप की बात पर विश्वास करेंगे। तब आप ने उनको संबोधित करके कहा: मैं तुम को अल्लाह की यातना से सचेत करता हूँ।^① इसी प्रकार आप ने उनको मूर्ति पूजा तथा शिर्क से वर्जित किया और एक ईश्वर की उपासना की ओर बुलाया और यह भी बता दिया कि अगर तुमने मेरी बात न सुनी तो तुम्हें कठोर तथा भयानक यातना घेर लेगी।

लोग यह बातें सुनकर बहुत झिल्लाए और कहने लगे: क्या इसीलिए तुम ने हमें इकट्ठा किया था ? उनमें अबु लहब भी था जिसने कहा: तुम्हारा नाश हो, क्या तुम ने हमें इसीलिए इकट्ठा किया था ? इस पर अल्लाह ने सूरह लहब अवतरित किया जिसका अनुवाद यह है:

“अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए, वह स्वयं भी विनष्ट हो गया। न उसका धन उसके काम आया, न कुछ जो उसने कमाया था। वह शीघ्र ही भड़कती हुई अग्नि में प्रवेश करेगा। और उसकी स्त्री भी जो ईंधन लादने वाली है। उसकी गर्दन में खजूर के रेशों की रस्सी पड़ी होगी।”

अब आप ने प्रत्यक्ष रूप से इस्लाम का निमन्त्रण देना प्रारम्भ कर दिया। और लोगों को भिन्न-भिन्न अवसरों पर यह भाषण देने लगे कि इस संसार का रचियता तो केवल एक अल्लाह है। इसलिए वही उपासना योग्य है उसको छोड़कर किसी और की उपासना करना किसी और से सहायता माँगना, किसी और के सामने सर झुकाना सब निषेध है और अल्लाह ने आप को अंतिम नबी बनाकर भेजा है। आप पर विश्वास किए बिना कोई सफलता नहीं प्राप्त कर सकता।

एक तरफ आप पूरी शक्ति से इस्लाम का निमन्त्रण दे रहे थे तो दूसरी ओर पूरी शक्ति से कुरैश आप के विरुद्ध संगठन कर रहे थे।

^① देखिए: सहीह बुखारी (८/७३७) तथा सहीह मुस्लिम (१/१९४)

कुरआन बराबर उतरता जा रहा था जिसमें समय के अनुकूल ठीक-ठीक अनुदेश दिए जा रहे थे। जो हृदयों में प्रवेश होकर नए समाज की नींव रख रहा था। आप की चर्चा अब मक्का से निकल कर दूसरे शहरों में पहुँचने लगी और लोग समूह बनाकर आते, कुरआन सुनते और इस्लाम स्वीकार कर लेते। इधर कुरैश आप के विरुद्ध झूठी बातें फैलाने में लगे रहे। कभी आप को कवि कहा, कभी उम्मत “ज़िमाद” जो अज़्द शनोआ वंश का था एक बार मक्के आया और उसने सुना की कोई नबी आया है जिसको मक्के वाले उम्मत कहते हैं। वह जिन्नों को उतारना जानता था, इसलिए आप के पास पहुँच गया। और कहा: मैं आप का जिन्न उतार सकता हूँ। नबी ﷺ ने पढ़ा, सारी प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं हम उसी की प्रशंसा करते हैं और उसी से सहायता माँगते हैं। जिसको अल्लाह सत्य मार्ग दिखा दे उसको कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसको गुमराह कर दे उसे कोई सत्य मार्ग पर नहीं चला सकता। मैं गवाही देता हूँ कि उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद उसके दास तथा रसूल हैं। ज़िमाद ने कहा: आप इसको दुबारा सुनाएं, इस प्रकार उसने तीन बार सुना और फिर कहने लगा: मैं अल्लाह की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने पुरोहितों, जादूगरों और कवियों को बार-बार सुना है परंतु आप से जो शब्द मैंने सुने हैं किसी और से कभी नहीं सुना, फिर उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया, अपनी ओर से तथा अपनी जाति की ओर से इस्लाम पर बैयत कर ली।^①

कुरआन और उसकी शिक्षा लोगों के दिलों में उतर रही थी और मक्के के काफिर विभिन्न जतनों से लोगों को इससे दूर रख रहे थे। यहाँ तक कि जब उनकी कोई चाल सफल होती हुई दिखाई नहीं दी तो उन्होंने मुहम्मद ﷺ और आप के साथियों को जो इस्लाम स्वीकार कर चुके थे उनको कष्ट पहुँचाने की ठान ली।

^① देखिए: सहीह मुस्लिम (२/५९३) इसी प्रकार अबू ज़र के इस्लाम स्वीकार करने की घटना के लिए देखिए: सहीह बुखारी (७/१७३) तथा सहीह मुस्लिम (४/१९२३)

एक समय ऐसा हुआ कि आप काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे, कुछ मक्के के काफिर आए और उन्होंने आप के ऊपर जब आप सज्दे में गए तो ऊँट की ओझड़ी तथा उसका रक्त इत्यादी आप के ऊपर डाल दिया जिसके कारण आप सज्दे से उठ नहीं पा रहे थे। इसकी सूचना आप की पूत्री फ़ातिमा को हुई तो वह भागती हुई आई और आप के ऊपर से गंदगी साफ किया। नबी ﷺ को इससे बड़ा कष्ट हुआ। आप ने नमाज़ के पश्चात कुरैश को तीन बार शाप दिया और अमर बिन हिशाम, उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन ऊत्बा, उमय्या बिन ख़लफ़, उक्ब़ा बिन अबी मुईत और उमारा बिन वलीद के नष्ट होने की शाप दी।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद कहते हैं कि बदर के रण क्षेत्र में मैंने सबको कत्ल होते हुए देखा और इन सबको एक कुएं में डाल दिया गया।

नबी ﷺ ने उनको देखकर कहा: इन कुएं वालों को धिक्कार लगी है।

मक्के के काफिर नबी ﷺ को तथा आप के साथियों को विभिन्न प्रकार से कष्ट पहुँचाते रहे नए मुसलमानों को तरह-तरह से सताते रहे, जिनको पढ़ कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, किसी को अरब के रेगिस्तानों में गर्म धूप में लिटा देते उनके सीने पर गर्म पत्थर रखते, किसी को पानी में डुबकियाँ देते। किसी के गले में गर्म-गर्म सलाख डाल देते। बिलाल नामक सेवक को तो बच्चों को दिया जो आप के गले में रस्सी डाल कर मक्का की गलियों में ऐसे लेकर फिरते थे जैसे कोई गाय और बकरी लेकर फिरता है। यह सब होने के बावजूद भी किसी ने इस्लाम धर्म नहीं छोड़ा। नबी ﷺ ने निर्णय किया कि कुछ मुसलमानों को हब्शा (जिसको इथोपिया) कहते हैं भेज दिया जाए। क्योंकि आप ने वहाँ के राजा नजाशी के विषय में सुन रखा था कि वह बड़ा सदाचारी और न्यायशील है। लेकिन मक्के के काफिरों ने इन देश त्याग लोगों का पीछा हब्शा तक किया और राजा के समक्ष इनके विरुद्ध भड़काया। राजा ने इन देश त्यागियों को अपने दरबार में बुलाया और उनसे विभिन्न प्रकार के प्रश्न किए उनमें से एक यह था कि तुम लोग हज़रत

ईसा के विषय में क्या विचार रखते हो ? इन देश त्यागियों ने हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब को अपना प्रतिनिधि बनाया। उन्होंने “सूरह मरियम” पढ़कर सुनाई जिसमें बताया गया है कि ईसा अल्लाह के दास हैं उन्होंने लोगों को अल्लाह ही की उपासना का संदेश दिया उसमें इस बात का खंडन किया गया है कि अल्लाह ने किसी को अपना पुत्र बनाया। (सूरह मरयम-१९) इसके अतिरिक्त भी आप ने इस्लाम की शिक्षा संक्षिप्त शब्दों में प्रकट किया यह सुनकर राजा “नजाशी” रो पड़ा यहाँ तक कि उसकी दाढ़ी आँसूओं से भीग गई और उसके पास जो ईसाई पादरी बैठे थे वह भी रो पड़े, फिर नजाशी ने कहा: अल्लाह की शपथ! यह वाणी उसी दीप से निकला है जिसको लेकर “मूसा” आए थे तुम लोग मेरी सल्तनत में शांति पूर्वक रहो तुम्हें यहाँ किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। सहीह अहदीसों से यह भी प्रकट होता है कि स्वयं राजा नजाशी भी गुप्त में इस्लाम स्वीकार कर लिया और मुहम्मद ﷺ के नबी होने की पुष्टि की। जब हब्शा से मुसलमानों को वापस लाने में मक्का के काफ़िर असफल रहे तो उन्होंने एक और चाल चली वह सामाजिक बहिष्कार था। उन्होंने बनू हाशिम को बता दिया कि जब तक तुम मुहम्मद ﷺ की हत्या नहीं कर देते या उनको हमारे सुपुर्द नहीं कर देते तुम्हारे संग हर प्रकार का सामाजिक बहिष्कार किया जाएगा। यह बड़ा ही कठिन समय था मगर बनू हाशिम ने आप को नहीं छोड़ा आप के चचा अबू तालिब बनू हाशिम को लेकर एक घाटी में चले गए। जहाँ वह बकरियाँ चराकर अपना जीवन व्यतीत करते थे। खाने पीने की कोई वस्तु उनको प्राप्त नहीं होती थी। सहीह हदीसों से स्पष्ट होता है कि वृक्ष के पत्ते भी खाने पड़े थे। तीन वर्ष तक वह इस सामाजिक बहिष्कार में पड़े रहे। कुरआन उतर रहा था, और अल्लाह उनको पूरे धैर्य के साथ इन कठिनाईयों को झेलने का हुक्म दे रहा था। तीन वर्ष व्यतीत होने के पश्चात स्वयं मक्के वालों में भिन्नता पैदा हो गई और उन्होंने स्वयं ही सामाजिक बहिष्कार उठा लिया। नबी ﷺ ने एक समय मक्के वालों के लिए शाप भी दिया जिसके

कारण ऐसा सूखा पड़ा कि लोगों को मुर्दार खाना पड़ा। अबू सुफ़ियान जो मक्के के सरदारों में से थे और अभी मुसलमान नहीं हुए थे। नबी ﷺ के पास भागते हुए आए और आप से सूखा समाप्त होने की दुआ कराई, आप की दुआ से सूखा समाप्त हुआ और आकाश में जो धुआँ दिखाई दे रहा था, जिसको देख कर मक्के वाले भयभीत होते थे वह छँट गया, परंतु वह फिर भी मुसलमान नहीं हुए।

आप के चचा अबू तालिब का देहान्त:

सामाजिक बहिष्कार समाप्त होने के कुछ ही दिनों बाद अबू तालिब का देहान्त हो गया जो आप के लिए बहुत बड़े सहायक थे। उनके कारण मक्के के काफिर आप ﷺ को किसी प्रकार से कष्ट पहुँचाने से बचते थे परंतु देहान्त के बाद अब वह स्वतंत्र हो गए थे और अब तो और अधिक आप को एवं आप के साथियों को सताने लगे।

खदीजा का देहान्त:

चचा के देहान्त के कुछ समय पश्चात आप कि पत्नी खदीजा का भी देहान्त हो गया जिसके कारण आप बहुत दुखी हुए।

मक्के से बाहर इस्लाम का प्रचार:

जब आप ने देखा कि मक्के वाले आप के लिए अधिक कठोर बन गए हैं तो आप ने मक्के से बाहर इस्लाम प्रचार की योजना बनाई और वहाँ से निकटतम नगर त्राईफ़ चले गए जहाँ बनू सक्रीफ़ का वंश रहता था। आप ने उनको इस्लाम का संदेश सुनाया परंतु उन्होंने आप को पत्थर मारा जिसके कारण आप के पाँव से रक्त बहने लगा, आप बहुत दुखी हुए यहाँ तक कि अल्लाह की ओर से यह संदेश आया कि अगर आप कहें तो पर्वत चलने लगें और मक्के वालों को तथा उसके आसपास रहने वालों को कुचल कर रख दें। परंतु आप के हृदय में उस समय कोई ऐसा क्रोध पैदा नहीं हुआ बल्कि आप ने दुआ की। ऐ अल्लाह इनको सत्यमार्ग दिखा। सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की एक हदीस से यह भी प्रकट होता है कि आप

ने कहा: मैं विश्वास करता हूँ कि इनकी कोख से ऐसे लोग पैदा होंगे जो केवल तेरी ही उपासना करेंगे और किसी प्रकार का शिर्क नहीं करेंगे।^①

तार्ईफ़ में दस दिन बिताने के पश्चात आप मक्के वापस आ गए अल्लाह ने आप के हृदय को शांति प्रदान करने के लिए आप को सातों आकाश की यात्रा कराई। वह इस प्रकार कि आप को मक्के से पहले बैतुल मुक़द्दस लाया गया फिर वहाँ से आप को आकाशों की यात्रा कराई गई आप ने इस यात्रा में बहुत कुछ देखा।^②

इसी यात्रा में मुसलमानों पर पाँच समय की नमाज़ फ़र्ज़ की गई, आप ने स्वर्ग और नर्क को देखा, आप से पूछा गया: क्या आप ने अल्लाह को भी देखा? उत्तर दिया: वह तो एक नूर (प्रकाश) है उसे कैसे देखा जा सकता है अर्थात् अल्लाह ने इस यात्रा के द्वारा नबी ﷺ को वह सब कुछ दिया जो हमारे नेत्रों से ओझल है। जिससे आप का हृदय प्रफुल्लित हो उठा और आप अधिक शक्ति के साथ इस्लाम परिचय में लग गए।

इस्लाम मदीने में:

यूँ तो इस्लाम की चर्चा तक मदीने तक पहुँच चुकी थी, परंतु आप हज के अवसर पर वंश के सरदारों के पास जाते और इस्लाम का संदेश पहुँचाते। यह आप की नुबूवत का दसवाँ वर्ष था। आपने अक्रबा नाम के स्थान पर मदीने से आए हुए हाजियों से भेंट किया। उनको इस्लाम का संदेश पहुँचाया जिसको सुनकर वह लोग मुसलमान हो गए थे। क्योंकि उन्होंने मदीने के यहूदियों से सुन रखा था कि अंतिम नबी आने वाला है, जिसकी पहचान यह है कि जब उन्होंने नबी ﷺ की बातें सुनी तो उनको विश्वास हो गया कि यह वही नबी है जिनकी सूचना यहूदी दिया करते थे।

दूसरे वर्ष आप ने फिर हज के अवसर पर हाजियों के सामने इस्लाम का संदेश रखा। मदीने से ७२ आदमी हज पर आए थे वह मुसलमान हो गए और उन्होंने हर

① सहीह बुखारी (६/३१२) सहीह मुस्लिम (३/१४२०)

② देखिए: कुरआन (सूरह इन्श) तथा सहीह बुखारी (१/४५८) सहीह मुस्लिम (१/१४८)

प्रकार से आप की रक्षा करने का वचन दिया और मदीने वापस चले गए। जहाँ उन्होंने इस्लाम का प्रचार प्रारम्भ कर दिया और नबी ﷺ का मदीने आने की प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन आप हिजरत करने के लिए वह्यी का इंतजार करने लगे। सहीह बुखारी तथा सहीह मुस्लिम में यह हदीस बयान की गई है कि आप को स्वप्न में दिखाया गया कि आप मक्का से एक ऐसे स्थान पर हिजरत कर रहे हैं जो खजूर के बागों से भरा हुआ है तो आप ने विचार किया कि शायद यह “यमामा” या “हजर” नाम के नगर हैं। फिर देखा आपने तो यह “यसरिब” है।^① (मदीने का नाम “यसरिब” था) फिर आप की हिजरत के बाद उसका नाम मदीना पड़ा। इस्लाम अब मक्के से निकल कर मदीने में फैलने लगा, मक्के के काफिर चिंता में पड़ गए कि कहीं ऐसा न हो जाए कि मक्के से बाहर मुहम्मद के अनुयाईयों की संख्या बढ़ जाए और बाद में हमारे लिए समस्या बन जाए। इसलिए उन्होंने यह उपाय सोचा कि क्यों न मुहम्मद ﷺ को ही समाप्त कर दें, इसके लिए कुरैश वंश के सारे गोत्र जैसे बनी नौफल, बनी अब्द शम्स, बनी अब्दुदार, बनी असद, बनी मखजूम, बनी सहम तथा बनी जुम्ह “दार नदवा” में इकट्ठा हुए।^② और यह निर्णय पाया कि हर गोत्र से एक-एक युवक लिया जाए और उनको चमकती हुई तलवार थमा दी जाए भोर होते हुए सब मुहम्मद पर टूट पड़ें और उसकी हत्या कर दें। इस प्रकार हम उससे मुक्ति पा जाएंगे और बनू हाशिम सबसे बदला नहीं ले पाएंगे और हम सब मिल कर उनको रक्त बहा का बदला रूप्यों में दे देंगे। अल्लाह ने उनकी योजना की सूचना नबी ﷺ को दे दी। सूरह अंफाल की आयत (३०) इसी ओर संकेत करती है जो यह है:

“और (वह समय याद करो) जब काफिर लोग तुम्हारे साथ चाल चल रहे थे कि तुमको कारावास कर दें, या तुम्हारी हत्या कर दें, या तुम्हें देश से निकाल दें, वह अपनी चाल चल रहे थे अल्लाह अपनी चाल चल रहा था और

^① देखिए: सहीह बुखारी (७/७२६) तथा सहीह मुस्लिम (४/१७७९)

^② देखिए: इब्ने हिशाम (१/४८१)

अल्लाह सबसे उत्तम चाल चलने वाला है।”

और आप को हुक्म दिया गया है कि अब आप भी मदीने हजरत कर जाएं। आप ﷺ ने हजरत अली रज़ीयल्लाहु अन्हु को बुलाया और काफिरों की जो अमानत आप के पास थी उनको अली को समर्पित किया और आज्ञा दिया कि मेरे जाने के बाद उनके मालिकों तक पहुँचा कर तुम मदीना आ जाना। वह इस प्रकार की आप ने हजरत अली को अपने बिस्तर पर लिटा दिया और सूरह यासीन पढ़ते हुए घर से बाहर निकल गए जब सूरह यासीन की आयत ९ पर पहुँचे: “और हम ने उनके आगे एक दीवार खड़ी कर दी और एक दीवार उनके पीछे, फिर उन पर पर्दा डाल दिया जिसके कारण उनको कुछ भी सुझाई नहीं देता।” तो देखा काफिर जो आप की हत्या करने के लिए आप के द्वार पर इकट्ठे हुए थे ऊँघ रहे हैं।

आप ने एक मुट्ठी मिट्टी उठाई और उनके ऊपर फेंक दिया फिर वह नींद से न उठ सके। जब आप वहाँ से निकल गए तो किसी ने आकर उन लोगो को सूचित किया मुहम्मद तो निकल गए। फिर उन्होंने घर के अंदर प्रवेश किया तो देखा वहाँ तो अली सो रहे हैं। और आप अबू बक्र के घर चले गए और वहाँ से दोनो मिलकर मदीने के लिए निकल पड़े। यह २० जून ६२२ ई. सोमवार का दिन था इसी दिन से मुसलमानों ने अपना हिजरी कैलेन्डर आरम्भ किया।

जब मक्के में काफिरों को आप के बच कर निकल जाने की सूचना हुई तो आप के पीछे लग गए, आप उनसे बचने के लिए “सौर” नामी पर्वत की एक गुफा में छुप गए। कहानी यह बयान की जाती है कि काफिर आप दोनों को खोजते हुए उस गुफा तक पहुँच गए परंतु यह देख कर कि गुफा के मुँह पर तो मकड़ी ने जाला लगाया हुआ है।^① यह आप की रक्षा के लिए एक चमत्कार था जिसके कारण काफिर आप को गुफा में तलाश किए बिना लौट गए।

① देखिए: मुसनद अहमद (१/३४८) परंतु इसकी सनद में एक रावी जिसका नाम उस्मान बिन अग्र बिन साज जज़री है ज़र्ईफ़ है।

इस प्रकार दोनों नबी ﷺ तथा अबू बक्र गुफा में तीन दिन तक छुपे रहे। इसमें वह समय भी आया जब काफिर लोग गुफा के दहाने पहुँच गए। अबू बक्र ने घबरा कर कहा: हे अल्लाह के नबी! अगर यह लोग अपने पैरों के नीचे गुफा में झाँकेंगे तो हमें देख लेंगे। नबी ﷺ ने कहा : अबू बक्र हम दो ही नहीं हैं बल्कि हमारे साथ हमारा अल्लाह भी है।^①

सूरह तौबा की आयत ४० भी इसी ओर संकेत करती है:

“यदि तुम उसकी सहायता न भी करोगे तो (उसका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा) अल्लाह ने तो उसकी सहायता उस समय की जब काफिरों ने उसे निकाल दिया था, वह दो में से एक था (अर्थात् दूसरे अबू बक्र थे) जब वह दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था चिन्ता मत करो अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने उस पर अपनी ओर से शांति उतारी और उसकी सहायता ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम ने देखा नहीं और कुफ्र करने वालों को नीचा कर दिया, और अल्लाह के बोल को ऊँचा रखा और अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्त्वदर्शी है।”

जब कुरैश को भली-भाँति ज्ञान हो गया कि मुहम्मद ﷺ अपने साथी अबू बक्र के साथ मक्के से निकलने में सफल हो गए तो उन्होंने यह घोषणा कर दी कि जो कोई उन दोनों की हत्या कर देगा या जीवित पकड़ कर लाएगा उसको सौ ऊँट की भेंट दी जाएगी। यह सुनकर “सुराका बिन मालिक” आप को पकड़ने के लिए निकल पड़ा और एक ऐसा चमत्कार हुआ कि वह स्वयं मुसलमान हो गया। वह यह कि जब वह दोनों के निकट पहुँच गया तो क्या देखता है कि उसके घोड़े के दोनों सामने के पाँव धरती में गड़ गए हैं और वह घोड़े से नीचे गिर पड़ा, फिर वह उठ कर चिल्लाया और कहा: मैं सुराका बिन मालिक हूँ मैं आप को कोई कष्ट नहीं देना चाहता और न ही आप का बुरा चाहता हूँ क्योंकि मुझे ज्ञात हो गया कि

① देखिए: सहीह बुखारी(७/७२६)

मुहम्मद का धर्म फैल कर रहेगा। नबी ﷺ ने अबू बक्र से कहा: इससे पूछो क्या चाहता है? जब अबू बक्र ने मुझसे पूछा तो मैंने कहा: मुझे आप लिख कर एक पुर्जा दे दें। नबी ﷺ ने अबू बक्र से कहा: लिख कर दे दो। तो उन्होंने मुझे एक पुर्जा लिख कर थमा दिया मैं उसको लेकर वापस चला आया।

फिर जब नबी ﷺ हुनैन और तार्इफ के जिहाद से वापस आ रहे थे तो सुराका ने वह पुर्जा दिखाया और मुसलमान हो गए।^①

मदीने के वासियों को ज्ञान हो गया था कि नबी ﷺ मक्के से निकल चुके हैं इसलिए वह रोज़ाना मदीने से बाहर आप की प्रतीक्षा करते और जब सूर्य की गर्मी अधिक हो जाती तो वापस चले जाते। एक दिन ऐसा हुआ कि जब सब लोग अपने घरों को चले गए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने कुबा^② में प्रवेश किया वहाँ आप चौदह दिन ठहरे रहे। इस्लाम की सबसे पहली मस्जिद आप ने यहीं बनाई जिसका वर्णन कुरआन में भी आया है।^③

नबी ﷺ मदीने में:

नबुवत के तेरह वर्ष बाद जब आप की आयु तिरपन वर्ष हो गई थी, आप मदीने पहुँचे। मदीने का हर व्यक्ति इच्छा रखता था कि आप उसके यहाँ पधारे आप के लिए यह निर्णय करना कठिन हो गया कि किसकी प्रार्थना स्वीकार करें और किसकी न करें। इसलिए आप ने फरमाया: मेरी ऊँटनी को छोड़ दो यह अल्लाह की आज्ञा से जहाँ बैठ जाएगी मैं वही ठहरूँगा।^④ ऊँटनी घूमती हुई अबू अय्यूब के द्वार पर रुक गई। और फिर आप उतरे और वहाँ ठहर गए। वहाँ कुछ खुला मैदान

^① इस कहानी का कुछ वर्णन सहीह बुक़ारी में भी आया है देखिए: (७/२३०) तथा इब्ने हिशाम (१/४९८-४९०)

^② “कुबा” मदीने से सात किलोमीटर दूर एक बस्ती है।

^③ देखिए: सूरा तौबा आयत नं.: १०८

^④ देखिए: इब्ने हिशाम (१/४९५) तथा अलबिदाया व अन्रहिया (३/२००) इसकी इस्नाद ‘हसन’ है क्योंकि एक रावी जिसका नाम इताफ बिन खालिद ‘सदूक’ के पद का है।

था जैसे खलियान होता है, जहाँ लोग खजूर सुखाया करते थे। आप ने पूछा: यह खलियान किसका है? बताया गया बनु नज्जार के अनाथ बच्चों का है।^③ आप ने उसको खरीद कर वहाँ मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और मुसलमानों के साथ आपने स्वयं भी मस्जिद बनाने में सहायता दी। मदीने के वासियों ने मक्के से आने वाले मुसलमानों की पूरी सहायता की जिसके कारण उनका नाम अंसार पड़ गया। उनके काम से प्रसन्न होकर नबी ने फरमाया: अगर मुझे हिजरत न करनी पड़ती तो मेरी इच्छा होती कि मैं अंसार वंश से होता।^②

फिर आप ने मक्के से आने वालों की समस्या इस प्रकार दूर की कि मदीने वालों को मक्के से आने वाले एक व्यक्ति को सौंप दिया और कहा: जाओ आज से तुम दोनों भाई-भाई हो। मदीने वाले जो अंसार कहलाए (सहायता करने वाले) मक्के वाले जो मुहाजिर कहलाए (अल्लाह के मार्ग में घर बार छोड़ने वाले) बड़ी प्रसन्नता से अपने घर ले गए और अपना घर, अपना सामान और खजूर के खेत सबका आधा अपने मुहाजिर भाई को सौंप दिया। इतिहास के ग्रन्थों में यह भी लिखा है कि अगर किसी के पास दो पत्नी थीं तो उसने मुहाजिर भाई से कहा: इन दोनों में से जो तुम्हें पसन्द हो मैं उसे तलाक दे देता हूँ, और तुम विवाह कर लो।^④

इस प्रकार अंसार ने ऐसा आदर्श पेश किया जो प्रलय दिवस तक प्रकाश दिखाता रहेगा। कुरआन ने उनकी प्रशंसा इस प्रकार की:

“और जो लोग इनसे पहले से इस घर (मदीने) में बसे हुए हैं, और ईमान रखते हैं, वे उनसे प्रेम करते हैं जो हिजरत करके उनके यहाँ आएँ और अपने

^① देखिए: सहीह बुखारी (७/ २ ६५)

^② देखिए: सहीह बुखारी (७/ १ १ २)

^③ इस प्रकार की एक कहानी साद बिन रबीय (अंसारी) और अब्दुर्रहमान बिन आफ (मुहाजिर) के साथ पेश आयी लेकिन अब्दुर्रहमान ने दुआ देकर कहा: मुझे तो बस तुम बाजार दिखा दो और फिर वह व्यापार करने लगे। और अपनी कमाई से एक अंसारी स्त्री से विवाह किया। नबी ने जब उनके हाथ पर गेरूआ रंगे देखा तो पूछा: यह क्या है? उत्तर दिया: एक अंसारी स्त्री से विवाह किया है। आप ने फरमाया: फिर तो तुम को वलीमा करना चाहिए चाहे वह एक बकरी ही क्यों न हो। देखिए: सुनन निसाई (६/ १ ३७)

दिलों में उससे कोई खटक नहीं पाते जो कुछ उनको दिया जाए और उन्हें अपने से प्रथ रखते हैं चाहे स्वयं उन्हें आवश्यकता ही क्यों न हो। और जो लोग अपने मन के लोभ से बचे रहें वही सफलता प्राप्त करने वाले हैं।” (हद्यः ९)

मुहाजिर भाई भी कोई लालची नहीं थे। उन्होंने उनके बरताव का उत्तम प्रतिशोध दिया।

मदीने के यहूदियों के साथ प्रतिज्ञा:

मदीने में अरब और यहूदी आबाद थे। इस्लाम अरबों में बड़ी तेजी से फैल रहा था बल्कि अगर यह कहा जाए तो सहीह है कि कोई ऐसा घर नहीं था जिसमें कोई व्यक्ति मुसलमान न हो गया हो। और अब यह भय था कि मक्के के काफ़िर दूसरे अरबवासियों को नबी ﷺ तथा मुसलमानों के विरूद्ध भड़का कर कहीं युद्ध न छेड़ दें। इसलिए ﷺ नबी ने मदीने के यहूदियों से एक प्रतिज्ञा कर लिया वह यह कि बाहर से आक्रमण होने की दशा में वह मुसलमानों की सहायता करेंगे और इस्लाम की बढ़ती हुई शक्ति से उनको कोई हानि नहीं पहुँचेगी। और मदीने पर किसी ने चढ़ाई की तो मुसलमान उसकी सुरक्षा करेंगे।

बदर का युद्ध:

बदर उस गाँव का नाम है जो मदीने से ८० मील के निकट दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह युद्ध इसी स्थान पर सन २ हिजरी को हुआ, मुसलमान इस लड़ाई से विजयी हुए। परंतु इस युद्ध ने दूसरे अरबों को चौकन्ना कर दिया और इस्लाम की बढ़ती हुई शक्ति से वह लोग बौखला गए।

उहद का युद्ध:

उहद मदीने की एक पहाड़ी है, इस युद्ध का कारण यह था कि बदर में जो सरदार मारे गए उनका बदला लेने के लिए सन ३ हिजरी में मक्के वालों ने मदीने पर आक्रमण कर दिया, लेकिन अभी वह उहद तक पहुँचे थे कि नबी ﷺ और

मुसलमानों ने वहीं घेर लिया परंतु इस युद्ध में मुसलमानों को बहुत हानि उठानी पड़ी स्वयं नबी ﷺ को बहुत हानि हुई।

नबी ﷺ दस वर्ष तक मदीने में रहे इस बीच आप ने बहुत सारे युद्ध किए जिनमें प्रसिद्ध ये हैं: खन्दक, हुदैबिया, खैबर, मक्के की विजय, हुनैन और तबूक। हिजरत के दसवें वर्ष आप ने हज किया जिसमें एक लाख बीस हजार मुसलमान सम्मिलित हुए। आप ने ९ जिलहिज्जा को अरफात के मैदान में एक ऐतिहासिक भाषण दिया जिसमें आप ने अत्यंत महत्व पूर्ण आदेश दिए उनमें से कुछ यह हैं।

१. अरबी और गैर अरबी (जिनको अजमी कहते हैं) में कोई भेद भाव नहीं, हम एक आदम की संतान हैं और आदम को अल्लाह ने मिट्टी से बनाया।

२. मुसलमान परस्पर भाई-भाई हैं।

३. अपने गुलामों के साथ अच्छा बरताव करो, जो स्वयं खाओ उनको खिलाओ और जो स्वयं पहनो उनको पहनाओ।

४. औरतों के विषय में अल्लाह से डरो, तुम्हारा उन पर और उनका तुम पर अधिकार है।

५. मैं तुम्हारे लिए दो चीजे छोड़े जा रहा हूँ तुम उनको शक्ति के साथ पकड़े रहोगे तो कभी भी सत्य मार्ग से नहीं भटकोगे वह अल्लाह का ग्रन्थ कुरआन और नबी की सुन्नत है।

फिर आप ने लोगों को सम्बोधित कर के फरमाया: तुम से अल्लाह के यहाँ मेरे विषय में पूछा जाएगा तो क्या कहोगे? लोगों ने उत्तर दिया: हम यही कहेंगे कि आप ने अल्लाह का संदेश हम तक पहुँचा दिया। आप ने आकाश की ओर ऊँगली उठाकर फरमाया: हे अल्लाह तू साक्षी रहना।

अल्लाह ने आप को जिस कार्य के लिए नियुक्त किया था पूर कर लिया। आप का लाया हुआ धर्म अरब द्वीप से निकल कर निकट देशों तक फैल गया और

अल्लाह ने भी इस्लाम धर्म को पूर्ण होने की घोषणा कर दी:

“आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी नेमत (अनुकम्पा) पूरी कर दी, और मैंने तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसंद किया।” (सूरह माएद: ४)

इस आयत के उतरने से कुछ लोगों को विश्वास हो गया कि अब आप हमसे विदा होने वाले हैं। और ऐसा ही हुआ। हज से आने के बाद आप बीमार हो गए और १२ रबीउल अव्वल सन् ११ हिजरी अर्थात् ६४२ ईस्वी को आप का देहान्त हो गया। आप का जिस घर में देहान्त हुआ था वहीं दफन कर दिया गया। जो अब मस्जिदे नबवी से मिला हुआ है।

आप ﷺ के देहान्त से पहले पूरा कुरआन लिपिबद्ध हो चुका था और बहुत से मुसलमानों ने उसे हृदय स्मरण कर लिया था। कुरआन इस समय हमारे सामने जिस क्रम और जिस रूप में मौजूद है यह वही है जिसको नबी ﷺ छोड़ कर गए थे। और आज भी संसार में ऐसे लाखों मुसलमान हैं जिनको कुरआन स्मरण है।

अब आईए संक्षेप में यह बताता चलूँ कि कुरआन आप के विषय में क्या कहता है:

१. आप को अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा:

“वही है जिसने अपने रसूल (अर्थात् मुहम्मद ﷺ) को मार्गदर्शन तथा सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे दूसरे धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान करे चाहे मुश्रिकों को बुरा ही क्यों न लगे।” (सूरह अस्सफ़: ९)

“हमने तुम्हें सत्य धर्म के साथ शुभ सूचना देने वाला (मोमिनों को) और डराने वाला (काफिरों को) बनाकर भेजा है। और तुम से भड़कती हुई आगवालों के विषय (जहन्नमी लोगों) में कुछ भी पूछा नहीं जाएगा।” (सूरह बकर:- ११९)

“हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा जो तुम पर साक्षी होंगे, जैसा कि हमने फिरऔन की ओर एक रसूल भेजा था।” (सूरह मुज़म्मिल : १५)

२. मुहम्मद ﷺ अंतिम नबी बना कर भेजे गए हैं। अतः आप के पश्चात अब कोई नबी नहीं आएगा, अब प्रलय दिवस तक संसार के कल्याण का एक मात्र साधन आप ﷺ पर विश्वास लाने, और आप के आदेशों के पालन करने में है। क्योंकि अल्लाह ने सम्पूर्ण संसार के लिए आप को अंतिम रसूल बना कर भेजा है।

“मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं, परंतु वह अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक हैं। और अल्लाह हर वस्तु का ज्ञान रखने वाला है।” (सूरह अहज़ाब: ४०)

कुरआन ने “खातम” शब्द प्रयुक्त किया है जिसका अर्थ मुहर (SEAL) भी होता है। इस प्रकार आप अंतिम नबी हैं आप के आ जाने के पश्चात अल्लाह ने नबियों के सिलसिले पर मुहर लगा दी, इसलिए अब कोई नबी नहीं आएगा। नबी ﷺ ने भी इसकी घोषणा कर दी कि मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।

३. अल्लाह ने आप के महान स्वभाव की प्रशंसा की है। आप नबूवत से पहले भी अपनी जाति में अमीन कहलते थे। नबूवत के बाद आप का स्वभाव और उच्च हो गया। इसी ओर कुरआन संकेत करता है:

“नून कलम और जो वे उससे लिखते हैं उसकी शपथ, तुम अपने रब की कृपा से उन्मत्त नहीं हो और निश्चय ही तुम्हारे लिए ऐसा बदला है जो कभी समाप्त नहीं होगा और निःसंदेह तुम महान स्वभाव वाले हो, तुम और यह काफ़िर जल्द ही देख लेंगे कि तुम में से कौन भ्रम में पड़ा हुआ है।” (सूरह कलम- १-६)

४- आप ﷺ के हाथ पर बैयत करना अल्लाह से बैयत करना है:

“जो लोग तुम से बैयत करते हैं वह अल्लाह ही से बैयत करते हैं अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है। अब जिसने (इस बैयत) को तोड़ दिया तो वह तोड़कर अपना ही बुरा करेगा। और जिसने उसे पूरा किया जिसकी प्रतिज्ञा अल्लाह से की है उसे वह बहुत बड़ा बदला प्रदान करेगा।” (सूरह फत्ह: ९०)

अरब लोग जब किसी बात का संकल्प करते थे तो एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर अल्लाह की शपथ लेते थे जिसको “बैयत” कहते हैं। और फिर इसको तोड़ना बहुत बुरा समझते थे। ऊपर की आयत में इसी की ओर संकेत किया गया है कि जो लोग मुहम्मद ﷺ के हाथ पर बैयत करते हैं वह वास्तव में अल्लाह से बैयत करते हैं। इस लिए इसके तोड़ने से बचना चाहिए, इसमें जहाँ बैयत का महत्व बताया गया है वहीं नबी ﷺ के पद की ओर संकेत किया गया है।

५-आप ﷺ वह्य के अनुसार ही धर्म प्रचार करते थे:

“शपथ है तारे की जब वह नीचे आया। तुम्हारा साथी न तो भटका है और न तो मार्ग से फिरा है। और ऐसा नहीं की जो चाहता है कह देता है, वह तो बस वह्य होती है जो उस पर की जाती है।” (सूरह नजम: १-४)

“मेरी ओर तो केवल इसलिए वह्य की जाती है कि मैं खुला-खुला सचेत करने वाला हूँ।” (सूरह साद: ७०)

“कहो! शबसे बड़ी गवाही किसकी है? कहो! अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच साक्षी है। और यह कुरआन मेरी ओर वह्य किया गया है, ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें और जिस किसी को यह पहुँचे सचेत करूँ।” (सूरह अंआम: १९)

“कहो! मैं तो तुम जैसा केवल एक मनुष्य हूँ (अर्थात् पूज्य नहीं हूँ) परंतु मेरी ओर वह्य आती है कि तुम्हारा पूज्य तो बस एक ही है।” (सूरह कहफ: ११०)

६. आपको अल्लाह ने सारे संसार वालों के लिए नबी बनाकर भेजा:

“और (हे मुहम्मद) हम ने तो तुम्हें सारे मनुष्यों के लिए शुभ सूचक और सचेत करने वाला बना कर भेजा है। परंतु अधिक तर लोग जानते नहीं।” (सूरह सबा: २८)

नबी ﷺ ने भी इसकी पुष्टि की है। आप ने फरमाया:

((नबी केवल अपनी जाति के लिए भेजे जाते थे परंतु मुझे सारे मनुष्यों के लिए भेजा गया है)) (सहीह बुखारी १/८६)

दूसरी हदीस में है:

((मैं सारे मनुष्यों की ओर भेजा गया हूँ, और मेरे द्वारा नबूवत समाप्त कर दी गई है)) (सहीह मुस्लिम १/३७१)

इसीलिए इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद एक मुसलमान का दुसरे से कोई भेदभाव नहीं होता है। और नया मुसलमान इस्लामी समाज में उस प्रकार मिल जाता है जैसे पुराने मुसलमान हों। रंग, जाति, भाषा तथा देश के पृथक होने का इस्लामी समाज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कोई भी मुसलमान किसी मुसलमान के घर विवाह कर सकता है, मस्जिद में एक-दूसरे के साथ मिलकर नमाज पढ़ सकता है और कुरआन का विद्वान बन सकता है। अर्थात् सामान्य रूप में एक दूसरे में कोई भेदभाव नहीं रहता और कहीं यह पाया जाता है तो वह इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध है।

७. आप ﷺ के चमत्कार:

वैसे तो नबी ﷺ के हाथों बहुत से चमत्कार प्रकट हुए जिनका वर्णन हदीस ग्रन्थों में आया है। जैसे चाँद के दो टुकड़े हो जाना।^① नबी ﷺ की ऊँगलियों से पानी के सोते बह निकलना।^② खंदक के युद्ध में दो-तीन आदमियों का भोजन एक हज़ार आदमियों के लिए हो जाना।^③ साईब बिन यज़ीद जो बचपन से ही पीड़ित रहने लगे, और जिनकी मौसी लेकर नबी ﷺ के पास गई और दुआ एवं प्रार्थना की, जिसके कारण साईब बिन यज़ीद सवैद के लिए स्वस्थ हो गए। यहाँ तक कि चौरानवे वर्ष तक जीवित रहे मगर फिर कभी पीड़ित नहीं हुए।^④ इस प्रकार के

① देखिए: सहीह बुखारी (६/६३१)

② देखिए: सहीह बुखारी (६/५८७)

③ देखिए: सहीह बुखारी (७/३९५)

④ देखिए: मुसनद अहमद (५/२८)

बहुत सारे चमत्कार हदीस ग्रन्थों में वर्णित हुए हैं। परंतु मैं यहाँ एक ऐसे चमत्कार का वर्णन करना चाहता हूँ जो महाप्रलय दिवस तक रहने वाला है। और वह आप पर कुरआन का उतरना जो आप का महान चमत्कार है। क्योंकि इससे पूर्व बता चुका हूँ कि जब “हिरा” नामी गुफा में हज़रत जिब्रील कुरआन की “वह्य” लेकर आए और आप को कहा: पढ़, तो आप ने उत्तर दिया मुझे पढ़ना नहीं आता। इसकी पुष्टि कुरआन भी करता है कि आप को पढ़ना लिखना नहीं आता था:

“कहो ऐ लोगो! मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल बनाकर भेजा गया हूँ जो आकाशों और धरती का स्वामी है। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है, अतः अल्लाह और उसके रसूल नबी जो, “उम्मी” है पर ईमान लाओ।” (सूरह आराफ: १५८)

“उम्मी” का अर्थ है “अनपढ़” जिसको लिखना पढ़ना न आता हो। नबी ﷺ जिस नगर और समाज में पैदा हुए थे वह उम्मी लोग थे इसलिए आप ﷺ भी उम्मी रह गए। फिर ऐसे व्यक्ति पर कुरआन जैसा महान ग्रन्थ उतरना यह इतना बड़ा चमत्कार है जिसका संसार में कोई उदाहरण नहीं है। इसीलिए कुरआन ने स्वयं बार-बार चैलेन्ज किया है कि अगर तुमको इसे अल्लाह की ओर से होने की शंका है तो इस जैसा लाकर दिखाओ:

“कह दो! यदि मनुष्य और जिन्न इस बात के लिए इकट्ठा हो जाएं कि इस कुरआन जैसा कोई ग्रन्थ लायें तो वे इस जैसा कोई ग्रन्थ नहीं ला सकेंगे चाहे वे परस्पर एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न बन जाए।” (सूरह इस्ता: ८८)

लेकिन मक्के के काफिर और मुशरिक ऐसा ग्रन्थ लाने में असमर्थ रहे। जब कि वे अपने आप को अरबी भाषा का महान विद्वान विचार करते थे।

फिर कुरआन ने दुबारा चैलेन्ज किया कि अगर पूर्ण कुरआन जैसा ग्रन्थ नहीं ला सकते तो उसकी दस सूरतों जैसा ही कुरआन लाकर दिखाओ:

“क्या यह कहते हैं: उसने इसे स्वयं गढ़ लिया है। कह दो! अच्छा तो तुम इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरते ले आओ, और अल्लाह के अतिरिक्त जिस किसी को बुला सकते हो बुला लो यदि तुम सच्चे हो।” (सूरह हूद: १३)

जब दस सूरतें भी लाने में असमर्थ रहे तो उसने तीसरी बार चैलेन्ज किया:

“क्या यह लोग कहते हैं कि इसने उसे स्वयं गढ़ लिया है? कहो! यदि तुम सच्चे हो तो एक ही सूरा उसके समान बना कर लाओ, और अल्लाह के अतिरिक्त जिसको बुला सकते हो बुला लो।” (सूरह यूनस: ३८)

मगर ऐसा भी करने में वे असमर्थ रहे। कुरआन का यह चैलेन्ज आज भी बाकी है और महा प्रलय दिवस तक बाकी रहेगा बल्कि एक स्थान पर तो उसने यह चैलेन्ज भी दे दिया है कि एक “आयत” ही लारक दिखा दो:

“क्या यह कहते हैं: इसने यह बात अपनी ओर से बना ली है? नहीं बल्कि ये ईमान नहीं लाना चाहते, अच्छा यदि ये सच्चे हैं तो इस जैसी कोई एक बात तो लाकर दिखाएं।” (सूरह तूर: ३३, ३४)

नबी ﷺ का सबसे बड़ा चमत्कार यह कुरआन है जो आप पर उतरा, जब कि आप “उम्मी” थे परंतु आप का लाया हुआ कुरआन करोड़ों मनुष्यों को प्रभावित कर गया, और करता रहेगा और प्रलय दिवस तक कोई भी उस जैसा कुरआन लाने में समर्थ नहीं हो सकता।

कुरआन
की प्रमुख शिक्षाएं

कुरआन और अल्लाह की महान सत्ता

कुरआन ईश्वर की महान सत्ता को विभिन्न प्रकार से बयान करता है और यह कि पृथ्वी और आकाश में जो कुछ भी है सबको उसी ने बनाया है। इसलिए कण-कण उसकी महान सत्ता के गीत गाते हैं। और उसी की बड़ाई बयान करते हैं। अब यह मनुष्य की गलती है कि अपने जैसों को ईश्वर बना बैठे और उनकी उपासना करे। आईए कुरआन की कुछ आयत (श्लोक) का अध्ययन करें और उसकी महान सत्ता के गीत गाएं।

“या फिर उदाहरण के रूप में उस व्यक्ति को देखो, जिसका एक ऐसी बस्ती पर से जान हुआ जो अपनी छतों पर औंधी गिरी पड़ी थी, उसने कहा: “यह आबादी तो विनष्ट हो चुकी है, इसे अल्लाह किस प्रकार पुनः जीवन प्रदान करेगा?” इस पर अल्लाह ने उसके प्राण ग्रस्त लिए और सौ वर्ष तक वह निर्जीव पड़ा रहा। फिर अल्लाह ने उसे पुनः जीवनदान दिया और उससे पूछा: “बताओ कितनी अवधि तक पड़े रहे हो?” उसने कहा: “एक दिन या कुछ घण्टे रहा हूँगा।” कहा: “तुम पर सौ वर्ष इसी दशा में बीत चुके हैं। अब तनिक अपने खाने और पीने को देखो कि उसमें तनिक परिवर्तन नहीं आया है। दूसरी ओर तनिक अपने गदहे को भी देखो (कि उसका पंजर तक जीर्ण हो रहा है) और यह हमने इसलिए किया है कि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना देना चाहते हैं। फिर देखो कि हड्डियों के इस पंजर को हम किस प्रकार उठा कर माँस और चर्म उस पर चढ़ाते हैं।” इस प्रकार जब वास्तविकता उसके समक्ष प्रकट हो गई, तो उसने कहा:

“मैं जानता हूँ कि अल्लाह को हर चीज का सामर्थ्य प्राप्त है।” (२:२५९)

“अल्लाह ने स्वयं इस बात की गवाही दी है कि उसके सिवा कोई आराध्य नहीं है और फरिश्ते तथा सब ज्ञानवान भी सच्चाई और न्याय के साथ इस पर गवाह हैं कि उस बलशाली गहरी समझ वाले के सिवा वास्तव में कोई आराध्य नहीं है।” (३:१८)

“कहो! ऐ प्रभु, राज्य के स्वामी तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे छीन ले। जिसे चाहे शक्ति-सम्मान प्रदान करे और जिसको चाहे अपमानित कर दे, भलाई तेरे अधिकार में है। निःसंदेह तुझे हर चीज का सामर्थ्य प्राप्त है। रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में। निर्जीव में से जीवधारी को निकालता है और जीवधारी में से निर्जीव को, और जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है।” (३:२६, २७)

“निश्चय ही कुफ़्र किया, उन लोगों ने जिन्होंने कहा कि मरियम का बेटा मसीह ही अल्लाह है। हे नबी, उनसे कहो कि अगर अल्लाह मरियम के बेटे मसीह को और उसकी माता और समस्त धरती वालों को विनष्ट कर देना चाहे तो किसकी शक्ति है जो उसको इस निश्चय से रोक सके? अल्लाह तो धरती और आसमानों का और उन सब चीज़ों का मालिक है जो धरती और आसमानों के बीच पाई जाती हैं, जो कुछ चाहता है पैदा करता है और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।” (५:१७)

“हे नबी, उनसे कहो, कभी तुमने यह भी सोचा कि अगर अल्लाह तुम्हारे देखने और सुनने की शक्ति तुम से छीन ले और तुम्हारे दिलों पर ठप्पा लगा दे तो अल्लाह के अतिरिक्त और कौन ईश्वर है जो ये शक्तियाँ तुम्हें वापस दिला सकता हो? देखो, किस तरह हम बार-बार अपनी निशानियाँ उनके समने प्रस्तुत करते हैं और फिर ये किस तरह उनसे निगाह चुरा जाते हैं।” (६:४६)

“उसने हर चीज़ को पैदा किया है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है। यह है अल्लाह तुम्हारा प्रभु, कोई आराध्य उसके सिवा नहीं है, हर चीज़ का सृष्टा, अतः तुम उसी

की उपासना करो और वह हर चीज़ का भारधारक है।” (६:१०१, १०२)

“(रही उसकी सम्भावना तो) हमें किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करने के लिए इससे अधिक कुछ करना नहीं होता कि उसे आदेश दें “हो जा” और बस वह हो जाती है।” (१६:४०)

“और वही है जिसने पानी से एक आदमी पैदा किया, फिर उससे वंश और ससुराल के दो अलग सिलसिले चलाए। तेरा प्रभु बड़ा ही सामर्थ्यवान है।” (२५:५४)

“अल्लाह ही तो है जिसने निर्बलता की दशा से तुम्हारे सृजन का आरम्भ किया, फिर उस निर्बलता के पश्चात तुम्हें शक्ति प्रदान की, फिर उस शक्ति के पश्चात तुम्हें निर्बल और बूढ़ कर दिया। वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है। और वह सब कुछ जानने वाला, हर चीज़ का सामर्थ्य रखने वाला है।” (३०:५४)

“प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों और धरती का आविष्कार करने वाला हऔर फरिश्तों को संदेशवाहक नियुक्त करने वाला है, (ऐसे फरिश्ते) जिनके दो-दो, तीन-तीन और चार-चार भुजायें हैं। वह अपनी सृष्टि संरचना में जैसी चाहता है अभिवृद्धि करता है। निःसंदेह अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।” (३५:१)

“क्या ये लोग धरती में कभी चले-फिरे नहीं हैं कि इन्हें उन लोगों का परिणाम दिखाई देता जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं और इनसे बहुत अधिक शक्तिशाली थे? अल्लाह को कोई चीज़ विवश करने वाली नहीं है, न आसमानों में और न धरती में। वह सब कुछ जानता है और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।” (३५:४४)

“अल्लाह हर चीज़ का सृष्टा है और वही हर चीज़ पर निगहबान है। धरती और आकाशों के खज़ानों की कुँजियाँ उसी के पास हैं। और जो लोग अल्लाह की

आयतों का इंकार करते हैं वही घाटे में रहने वाले हैं।” (३९:६२, ६३)

धरती और आकाशों के राज्य का मालिक वही है, जीवन प्रदान करता है और मृत्यु देता है, और उसे हर चीज का सामर्थ्य प्राप्त है। (५७:२)

अल्लाह की महान सत्ता की ओर संकेत करने वाली यह कुछ आयतें हैं। जिनसे प्रकट होता है कि इस संसार का रचयिता केवल वही है, इसमें उसका कोई साझी नहीं है। कुरआन ने भूले हुए इस पाठ को विभिन्न प्रकार से याद दिलाया ताकि इसके द्वारा केवल अल्लाह के पूज्य (इलाह) होने को प्रमाणित किया जा सके जो सारे नबियों के आदेश का निचोड़ है।

कुरआन और इलाह (पूज्य प्रभु)

कुरआन की शिक्षा का मूल उद्देश्य एक ईश्वर की उपासना है। और यही सम्पूर्ण नबियों की शिक्षा थी। लेकिन लोगों ने उसे भुला दिया था और उसमें परिवर्तन कर दिया था। तब परमेश्वर ने अपनी अंतिम पुस्तक के द्वारा उसे फिर जीवित किया और उन लोगों पर कुरआन ने कड़ी आलोचना की जो एक ईश्वर को छोड़ कर बहुत सारे देवी देवताओं को अपना भगवान समझते हैं और उनकी पूजा करते हैं। कुरआन विभिन्न प्रमाणों द्वारा सिद्ध करता है कि इस संसार को बनाने और चलाने वाला जब एक है तो वही पूज्यनीय भी है।

नीचे कुरआन की कुछ आयात बयान करता हूँ, उनको ध्यान से पढ़ें और विचार करें तो आप को प्रतीत होगा कि यह तो आप के हृदय का स्वर है।

“उनका कहना है कि अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया है। अल्लाह पाक है इन बातों से। वास्तविक तथ्य यह है कि धरती और आकाशों में पाई जाने वाली सभी चीजों का वह मालिक है, सबके सब उसके आज्ञाकारी हैं, वह आकाशों और धरती का आविष्कार है, और जिस बार का वह निर्णय करता है, उसके लिए बस वह आदेश देता है कि “हो जा ” और वह हो जाती है।”
(२:११६, ११७)

“अल्लाह वह जीवन्त नित्य सत्ता है जो सम्पूर्ण जगत को संभाले हुए है, उसके सिवा कोई प्रभु पूज्य नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊँघ लगती है। आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है। कौन है जो उसके यहाँ उसकी अनुमति के बिना सिफारिश कर सके ? जो कुछ लोगों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है उसे भी वह जानता है, उसके ज्ञान में से कोई चीज लोगों के ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती, यह और बात है कि किसी

चीज़ का ज्ञान वह स्वयं ही उनको देना चाहे। उसकी कुर्सी ने आकाशों और धरती को घेरा हुआ और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देने वाला कार्य नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।” (२:२५५)

“अल्लाह ने स्वयं इस बात की गवाही दी है कि उसके सिवा कोई उपासक नहीं है और फ़रिश्ते और सब ज्ञानवान भी सच्चाई और न्याय के साथ इस पर गवाह हैं कि उस बलशाली गहरी समझ वाले के सिवा वास्तव में कोई ईश नहीं है।” (३:१८)

“अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं है, वह तुम सब को पुनरुज्जीवन के दिन इकठ्ठा करेगा जिसके आने में कोई संदेह नहीं, और अल्लाह की बात से बढ़ कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है।” (४:८७)

“हे किताब वालों! अपने धर्म में अत्युक्ति से काम न लो और अल्लाह से लगा कर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहो। मसीह मरियम का बेटा इसके सिवा कुछ न था कि अल्लाह का एक रसूल था और एक आदेश था जो अल्लाह ने मरियम की ओर भेजा और एक आत्मा थी अल्लाह की ओर अतः तुम अल्लाह और उसके रसूलों को मानो और न कहो कि “तीन” हैं। बाज़ आ जाओ, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। अल्लाह तो बस एक ही पूज्य है। यह उसकी महिमा के प्रतिकूल बात है कि उसका कोई पूत्र है। धरती और आकाशों की सारी वस्तुओं का वह स्वामी है, और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति और उनकी खबर रखने के लिए बस वही काफी है।” (४:१७१)

“निश्चय ही कुफ़्र किया उन लोगों ने जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन में एक है, हालांकि एक अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है। अगर ये लोग अपनी इन बातों से बाज़ न आएँ तो इनमें से जिस-जिस ने कुफ़्र किया है उसको दुखद यातना दी जाएगी। फिर क्या ये अल्लाह की ओर लौटेंगे नहीं और उसमें क्षमा की प्रार्थना न करेंगे? अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान है।” (५:७३, ७४)

“इनसे पूछो, आकाशों और धरती में जो कुछ है किसका है ? कहो ! सब अल्लाह का है, उनसे दयालुता को अपने लिए अनिवार्य कर लिया है (इसीलिए वह अवज्ञाओं और उद्वण्डताओं पर तुम्हें जल्दी नहीं पकड़ता) पुनरुज्जीवन के दिन वह तुम सबको अवश्य इकठ्ठा करेगा, यह बिल्कुल एक असंदिग्ध तथ्य है, मगर जिन लोगों ने अपने आप को स्वयं तबाही के खतरे में डाल लिया है वे इसे नहीं मानते।”

रात के अंधेरे और दिन के उजाले में जो कुछ ठहरा हुआ है, सब अल्लाह का है और वह सब कुछ सुनता है और जानता है। कहो, अल्लाह को छोड़ कर क्या मैं किसी और को अपना पूज्य बना लूँ ? उस अल्लाह को छोड़ कर जो धरती और आकाश का सृष्टा है और जो रोज़ी देता है रोज़ी लेता नहीं है। कहो, मुझे तो यही आदेश हुआ है कि सबसे पहले मैं उसके आगे आज्ञापालन की भावना से झुक जाऊँ (और ताकीद की गई है कि कोई ईश्वर का साझीदार बनाता है तो बनाए) तू कदापि मुशरिकों (बहुदेववादियों) में सम्मिलित न हो, कहो, अगर मैं अपने प्रभु की अवज्ञा करूँ तो डरता हूँ कि एक बड़े (भयानक) दिन मुझे दण्ड भुगतना पड़ेगा। उस दिन जो दण्ड से बच गया उस पर अल्लाह ने बड़ी ही दया की और यही खुली सफलता है। अगर अल्लाह तुम्हें किसी प्रकार की हानि पहुँचाए तो उसके सिवा कोई नहीं जो तुम्हें हानि से बचा सके, और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो उसे हर चीज का सामर्थ्य प्राप्त है। उसे अपने बन्दों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है और वह जानता और खबर रखता है।

इनसे पूछो, किसकी गवाही सबसे बढ़कर है ? कहो, मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है, और यह कुरआन मेरी ओर “वह्य” (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है ताकि तुम्हें और जिस जिसको यह पहुँचे सबको सावधान कर दूँ। क्या वास्तव में तुम लोग यह गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं ? कहो, मैं तो इसकी गवाही कदापि नहीं दे सकता ? कहो, ईश्वर तो वही एक

है और मैं उस शिर्क (बहुदेववाद) से विरक्त हूँ जिसमें तुम पड़े हो।”(६:१२,१९)

“यह एक संदेश है सब मानवों के लिए, और यह भेजा गया है इसलिए कि उनको इसके द्वारा सावधान कर दिया जाए और वे जान लें कि वास्तव में पूज्यनीय बस एक ही है और जो बुद्धिमान हों वे होश में आ जाएँ।”(१४:५२)

“ता. हा. ! हमने यह कुरआन तुम पर इसलिए अवतरित नहीं किया है कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ। यह तो एक अनुस्मारक है प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो डरे। उतारा गया है उस सत्ता की ओर से जिसने पैदा किया है धरती को और उच्च आकाशों को। वह करुणामय (ब्रह्माण्ड के) अर्श (सिंहासन) पर स्थिर है। स्वामी है उन सब चीज़ों का जो आकाशों और धरती में हैं और जो धरती और आकाश के बीच में हैं और जो मिट्टी के नीचे है। तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, वह तो चुपके से कही बात भी बल्कि उससे बढ़ कर छिपी बात भी जानता है। वह अल्लाह है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं उसके लिए उत्तम नाम हैं।”(२०:१-८)

“जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरे संरक्षक बना लिए हैं उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है जो अपना एक घर बनाती है और सब घरों से अधिक कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही होता है। क्या अच्छी बात होती कि ये लोग ज्ञान रखते। ये लोग अल्लाह को छोड़कर जिस चीज़ को भी पुकारते हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है और वही प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है। ये मिसालें हम लोगों के (प्रबोधन) के लिए देते हैं किंतु इनको वही लोग समझते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं। अल्लाह के आकाशों और धरती को हक के साथ पैदा किया है, वास्तव में इसमें एक निशानी है ईमान वालों के लिए।”(२९:४१-४४)

“यदि तुम इन लोगों से पूछो कि धरती और आकाशों को किसने पैदा

किया है और चंद्रमा और सूर्य को किसने वशीभूत कर रखा है तो अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने, फिर ये किधर से धोखा खा रहे हैं? अल्लाह ही है जो अपने बंदों में से जिसकी चाहता है जीविका विस्तीर्ण करता है और जिसकी चाहता है तंग करता है, निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। और यदि तुम इनसे पूछो, किसने आकाश से पानी बरसाया और उसके द्वारा मुर्दा पड़ी हुई भूमि को जीवन प्रदान किया तो वे अवश्य कहेंगे अल्लाह ने। कहो, प्रशंसा अल्लाह के लिए है किंतु इनमें से अधिकतर लोग समझते नहीं हैं।” (२९:६१, ६३)

“यदि अल्लाह किसी को बेटा बनाना चाहता है तो अपने पैदा किए हुए में से जिसको चाहता चुन लेता, पाक है वह इससे (कि कोई उसका बेटा हो), वह अल्लाह है अकेला और सब पर प्रभुत्वशाली। उसने आकाशों और धरती को हक के साथ पैदा किया है। वही दिन पर रात और रात पर दिन को लपेटता है। उसी ने सूर्य और चंद्रमा को इस प्रकार वशीभूत कर रखा है कि प्रत्येक एक नियमित समय तक चले जा रहे हैं। जान रखो, वह प्रभुत्वशाली है और क्षमा करने वाला है। उसी ने तुमको एक जीव से पैदा किया, फिर वही है जिसने उस जीव से उसका जोड़ा बनाया। और उसी ने तुम्हारे लिए चौपायों में आठ नर और मादा पैदा किए। वह तुम्हारी माताओं के पेटों में तीन-तीन अंधकारमय परदों के भीतर तुम्हें एक के पश्चात एक रूप देता चला जाता है। यही अल्लाह (जिसके ये कार्य हैं) तुम्हारा प्रभु है, राज्य उसी का है, कोई पूज्य उसके सिवा नहीं है, फिर तुम किधर से फिराए जा रहे हो?” (३९:४-६)

“कहो वह अल्लाह है, यकता! अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मोहताज हैं न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान और कोई उसका समकक्ष नहीं है।” (११२:१-४)

कुरआन में एक अल्लाह की उपासना के लिए इलाह (إله) शब्द का प्रयोग हुआ है जो अरब इस्लाम से पहले थे वह उसके अर्थ से परिचित थे, वह

समझते थे कि इलाह वह है जिसकी उपासना की जाए और वह भी इलाह है जो उपासना के योग्य हो। इस प्रकार वह अल्लाह को उपासना योग्य समझ कर अल्लाह की भी उपासना करते थे, और उनकी भी जिनको उनके माता-पिता उपासना करते चले आ रहे थे। कुरआन ने इस दूसरे इलाह की पूरी शक्ति से निंदा की और यह बार-बार विभिन्न प्रकार से प्रकट किया कि इलाह तो केवल एक है और वह है अल्लाह। क्योंकि वही उपासना के योग्य है। शेष जिनकी तुम पूजा पाठ कर रहे हो वह इसके योग्य नहीं। और जिसको हम “कलिमा-शहादत” कहते हैं उसका यह एक भाग्य है। अर्थात् (अशहदु अन ला इलाहा इल्लल्लाह) जिसका अर्थ है: मैं साक्षी देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इलाह (पूज्य) नहीं है और जिस पर विश्वास करने तथा मुहम्मद ﷺ की नबूवत पर विश्वास करने के पश्चात ही एक व्यक्ति इस्लाम में प्रवेश कर सकता है।

ईश्वर पर विश्वास

कुरआन मूल रूप से एक ईश्वर पर विश्वास करने का आदेश देता है।

“(मुसलमानों!) कहो कि: हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस (मार्गदर्शन) पर जो हमारी ओर उतरा है और जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब और उनकी संतान की ओर उतरा था और जो मूसा और जो दूसरे सभी पैगम्बरों को उनके प्रभु की ओर से दिया गया था। हम उनके बीच कोई अंतर नहीं करते और हम अल्लाह के मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।”(२:१३६)

“(अब) क्या ये लोग अल्लाह के दीन (ईश्वरीय धर्म) को छोड़ कर कोई और धर्म चाहते हैं? हालाँकि आकाशों और धरती की सारी चीज़ें स्वेच्छा से अथवा विवशता पूर्वक अल्लाह की आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं और उसी की ओर सबको पलटना है? हे नबी, कहो कि हम अल्लाह को मानते हैं, उस शिक्षा को मानते हैं जो हम पर उतारी गई है, उन शिक्षाओं को भी मानते हैं जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब और याकूब की संतान पर उतरी थीं, और उन आदेशों को भी मानते हैं जो मूसा, ईसा और दूसरे पैगम्बरों को उनके प्रभु की ओर से दिए गए। हम उनके बीच अंतर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं। इस आज्ञा पालन (इस्लाम) के सिवा जो व्यक्ति कोई अन्य दीन अपनाना चाहे उसका दीन कदापि स्वीकार न किया जाएगा और परलोक में वह असफल रहेगा।”(३:८३-८५)

“अब (संसार में) वह उत्तम गरोह तुम हो जिसे मानवों के मार्गदर्शन और सुधार के लिए मैदान में लाया गया है। तुम नेकी का आदेश देते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। ये किताब वाले मानते तो इन्हीं के हक में अच्छा था।”(३:११०)

“आखिर इन लोगों पर क्या आपदा आ जाती अगर ये अल्लाह और अंतिम दिन को मानते और जो कुछ अल्लाह ने दिया है उसमें से खर्च करते। अगर ये ऐसा करते तो अल्लाह से इनकी नेकी का हाल छुपा न रहता। अल्लाह किसी पर रत्ती भर भी अत्याचार नहीं करता अगर कोई एक नेकी करे तो अल्लाह उसे दो गुना करता है और फिर अपनी ओर से बड़ा बदला देता है। फिर सोचो कि उस समय ये क्या करेंगे जब हम हर समुदाय में से एक गवाह खड़ा करेंगे और आप को उन लोगों पर गवाह बनाकर लाएंगे। उस समय वे सब लोग जिन्होंने रसूल की बात न मानी और उसकी अवज्ञा करते रहे, कामना करेंगे की क्या ही अच्छा होता की धरती फट जाए और वे उस में समाँ जायें। वहाँ ये अपनी कोई बात अल्लाह से न छुपा सकेंगे।” (४: ३९-४२)

“परिणाम न तुम्हारी कामनाओं पर निर्भर करता है न किताब वालों की कामनाओं पर। जो भी बुराई करेगा उसका फल पाएंगा और अल्लाह के मुकाबले में अपने लिए कोई समर्थक और सहायक न पा सकेगा। और जो अच्छे काम करेगा चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह आस्थावान हो। तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उनका तनिक हक न मारा जाएगा। उस व्यक्ति से अच्छा और किसका दीन हो सकता है जिसने अल्लाह के आगे सिर झुका दिया और वह सदाचारी भी हो और एकचित हो कर इब्राहीम के तरीके का अनुसरण किया, उस इब्राहीम के तरीके का जिसे अल्लाह ने अपना मित्र बना लिया था। आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह का है और हर चीज को अल्लाह अपने घेरे में लिए हुए है।” (४: १२३-१२६)

“फिर जब मूसा का क्रोध शांत हुआ तो उसने उन पटिकाओं को उठा लिया जिनके लेख में मार्गदर्शन और दयालुता थी उन लोगों के लिए जो अपने प्रभु से डरते हैं, और उसने अपनी जाति के सत्तर आदमियों को चुना ताकि वे (उसके साथ) हमारे नियमित किए हुए समय पर उपस्थित हों। जब उन लोगों को

एक प्रचण्ड भूकम्प ने आ पकड़ा तो मूसा ने निवेदन किया, हे मेरे प्रभु, आप चाहते तो पहले ही इनको और मुझे विनष्ट कर सकते थे। क्या आप उस अपराध में जो हम में से कुछ नादानों ने किया था हम सबको विनष्ट कर देंगे? यह तो आपकी डाली हुई एक परीक्षा थी जिसके द्वारा आप जिसे चाहते हैं पथभ्रष्ट कर देते हैं और जिसे चाहते हैं राह पर लगा देते हैं। हमारे सरपरस्त तो आप ही हैं। अतः हमें राह पर लगा देते हैं। हमारे सरपरस्त तो आप ही हैं। अतः हमें क्षमा कर दीजिए और हम पर दया कीजिए, आप सबसे बढ़ कर क्षमाशील हैं। और हमारे लिए इस लोक की भलाई भी लिख दीजिए और परलोक की भी, हम आप की ओर पलट आए। उत्तर में कहा गया, दण्ड तो मैं जिसे चाहता हूँ देता हूँ मगर मेरी दयालुता हर चीज पर छाई हुई है और उसे मैं उन लोगों के हक में लिखूँगा जो अवज्ञा से बचेंगे, दान देंगे और मेरी आयतों पर ईमान लाएंगे।

(अतः आज यह दयालुता न लोगों का हिस्सा है) जो उस पैगम्बर उम्मी नबी ﷺ का अनुसरण करें जिसका उल्लेख उन्हें अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा हुआ मिलता है। वह उन्हें नेकी का हुक्म देता है, बुराई से रोकता है, उनके लिए स्वच्छ चीजें वैध और अस्वच्छ चीजें अवैध करता है, और उन पर से वह बोझ उतारता है जो उन पर लदे हुए थे और वे बन्धन खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे। अतः जो लोग उस पर ईमान लाएं और उसकी सहायता और समर्थन करें और उस प्रकाश का अनुसरण ग्रहण करें जो उसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफल होने वाले हैं। हे नबी! कहो, हे मानव, मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का पैगम्बर हूँ जो धरती और आकाशों के राज्य का मालिक है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है, वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है, अतः मानो अल्लाह को और उसके भेजे हुए उम्मी नबी को जो अल्लाह और उसकी बातों को मानता है और उसके अनुयायी बनो, आशा है कि तुम सीधा मार्ग पा लोगे।”(७:१५४-१५८)

“अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करने वाले (देवक) तो वह लोग हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन को मानें, और नमाज़ का आयोजन करें, दान दें और अल्लाह के सिवा किसी से न डरें उन्हीं से यह आशा है कि सीदी राह चलेंगे।”(९:१८)

कुरआन और ईशदूत

कुरआन इस बात की पुष्टि करता है कि ईश्वर ने हर जाति में अपने ईशदूत भेजे जिन्होंने ईश्वर की शिक्षा लोगों तक पहुँचाई, अब अगर कोई व्यक्ति यह प्रश्न करे कि हमें कैसे ज्ञान होगा कि कौन ईशदूत है कौन नहीं? तो इस विषय में कुछ कसौटियाँ हैं इन पर उसको परखा जा सकता है।

१. वह अपनी जाति में सर्वश्रेष्ठ होगा।
२. वह ईश्वर की ओर बुलाएगा।
३. उसके हाथों बहुत सारे चमत्कार होंगे। और ये चमत्कार उस क्षेत्र में होंगे जिनमें उसकी जाति के लोग अपने आप को बड़ा समझते होंगे।
४. वह स्पष्ट रूप से यह एलान करेगा कि मैं ईशदूत हूँ। इसलिए मेरी उपासना मत करो। क्योंकि मैं भी तुम्हारी तरह एक मनुष्य हूँ।
५. वह जो कुछ कहेगा सबसे पहले वह स्वयं उस पर अमल करेगा।

ईशदूतों का यह सिलसिला चलता रहा, यहाँ तक कि अंतिम दूत (हज़रत मुहम्मद ﷺ) आए और प्रलय तक के लिए ईश शिक्षा मनुष्यों तक पहुँचा दिया और वह है कुरआन और आप की हदीस। अब मैं ईशदूत के विषय में कुरआन की कुछ आयात बयान करता हूँ।

“(मसुलमानों!) कहों कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस (मार्गदर्शन) पर जो हमारी ओर उतरा है और जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब और उनकी संतान की ओर उतरा था और जो मुसा और ईसा तथा दूसरे पैगम्बरों को उनके प्रभु की ओर से दिया गया था। हम उनके बीच कोई अंतर नहीं करते और हम उसी की आज्ञा मानने वाले हैं।”

फिर यदि वे उसी तरह ईमान लाएं, जिस तरह तुम ईमान लाए हो, तो सीधे मार्ग पर हैं, और अगर इससे मुँह फेरें, तो खुली बात है कि वे हठधर्मी में पड़ गए हैं। अतः

विश्वास रखो कि उनके मुकाबले में अल्लाह तुम्हारी सहायता के लिए काफी है। वह सब कुछ सुनता और जानता है।” (२:१३६)

“नेकी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे पूर्व की ओर कर लिए या पश्चिम की ओर, बल्कि नेकी यह है कि आदमी अल्लाह को और अंतिम दिन को और फरिश्तों को और अल्लाह की उतारी हुई किताब और उसके संदेशवाहकों को दिल से माने, और अल्लाह के प्रेम में अपना मन भाता धन नातेदारों और अनाथों पर, निर्धनों और मुसाफिरोँ पर, सहायतार्थ हाथ फैलाने वालों पर और गुलामों की रिहाई पर खर्च करे, नमाज़ का आयोजन करे और दान दे, और (नेक) वे लोग हैं कि वचन दें तो उसे पूरा करें, और तंगी और विपत्ति के समय में और सत्य तथा असत्य के युद्ध में धैर्य दिखाएं। ये हैं सच्चे लगो और यही लोग सुचिन्तित हैं।” (२:१७७)

“इन रसूलों में से किसी को हम ने किसी पर श्रेष्ठता प्रदान किया। उनमें कोई ऐसा था जिससे अल्लाह ने स्वयं बातें की, किसी को उसने ऊँचे दरजे दिए, और अंत में ईसा मरियम के बेटे को खुली निशानियाँ प्रदान कीं और पवित्र आत्मा से उसकी सहायता की। यदि अल्लाह चाहता तो सम्भव था कि इन रसूलों के पश्चात जो लोग खुली निशानियाँ देख चुके थे, वे आपस में न लड़ते। परंतु उन्होंने परस्पर विभेद किया, फिर किसी ने माना और किसी ने इंकार की नीति अपनाई! हाँ, अल्लाह चाहता, तो वे कदापि न लड़ते, मगर अल्लाह जो चाहता है करता है।” (२:२५३)

“रसूल (ईश्वरीय संदेशवाहक) ने उस मार्गदर्शन को माना जो उसके प्रभु की ओर से उस पर उतरा है। और जो लोग इस रसूल के मानने वाले हैं, उन्होंने भी इस मार्गदर्शन को दिल से मान लिया है। ये सब अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों को मानते हैं और इनका कहना यह है कि हम अल्लाह के रसूलों को एक-दूसरे से अलग नहीं करते, हमने सुना

और आज्ञाकारी हुए। (मालिक) हम तुझसे क्षमा के इच्छुक हैं और हमें तेरी ही ओर पलटना है।” (२:२८५)

“हे नबी! कहो कि हम अल्लाह को मानते हैं, उस शिक्षा को मानते हैं जो हम पर उतारी गई है, उन शिक्षाओं को भी मानते हैं जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब और याकूब की संतान पर उतरी थीं, और उन आदेशों को भी मानते हैं जो मूसा और ईसा तथा दूसरे पैगम्बरों को उनके प्रभु की ओर से दिए गए। हम उनके बीच अंतर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं। इस आज्ञापालन (इस्लाम) के सिवा जो व्यक्ति कोई और दीन अपनाना चाहे उसका दीन कदापि स्वीकार न किया जाएगा और परलोक में वह असफल रहेगा।” (३:८४, ८५)

“नहीं, हे नबी! तुम्हारे प्रभु की कसम ये कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के मतभेद में ये तुमको फैसला करने वाला न मान लें, फिर जो कुछ तुम फैसला करो उस पर अपने दिलों में भी कोई तंगी न पायें, बल्कि स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लें।” (४:६५)

“हे ईमान लाने वालों! ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उसकी किताब पर जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी है और हर उस किताब पर जो इससे पहले वह उतार चुका है। जिसने अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और अंतिम दिन का इंकार किया वह गुमराही में भटक कर बहुत दूर निकल गया।” (४:१३६)

“जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ इंकार की नीति अपनाते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अंतर करें, और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे, और इंकार तथा ईमान के बीच में एक राह निकालना चाहते हैं, वे सब पक्के काफिर हैं और ऐसे काफिरो के लिए हमने वह यातना तैयार कर रखी है जो उन्हें अपमानित कर देने वाली होगी।

इसके विपरीत जो लोग अल्लाह और उसके सभी रसूलों को मानें, और उनके बीच अंतर न करें, उनको हम अवश्य उनकी मजदूरियाँ देंगे, और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।”(४:१५०-१५२)

“हे किताब वालो! अपने धर्म में अत्युक्ति से काम न लो और अल्लाह से लगा कर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहो। मसीह ईसा मरियम का बेटा इसके सिवा कुछ न था कि अल्लाह का एक रसूल था और एक आदेश था जो अल्लाह की ओर से (जिसने मरियम के गर्भ में बच्चे का रूप धारण किया) अतः तुम अल्लाह और उसके रसूलों को मानों और न कहो कि “तीन” हैं। बाज आ जाओ, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। अल्लाह तो बस एक ही पूज्य है। वह पाक है इससे कि कोई उसका बेटा हो। धरती और आकाशों की सारी वस्तुओं का वही मालिक है, और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति और उनकी खबर रखने के लिए बस वही काफी है।”(४:१७१)

“अल्लाह ने इस्राईल की संतान से दृढ़ प्रतिज्ञा कराई थी और उनमें बारह सरदार नियुक्त थे और उनसे कहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, अगर तुमने नमाज़ कायम रखी और दना दिया और मेरे रसूलों को माना और उनकी सहायता की और अपने अल्लाह को अच्छा श्रृण देते रहे तो विश्वास रखो कि मैं तुम्हारी बुराईयाँ तुमसे दूर कर दूँगा और तुम को ऐसे बाग में प्रवेश कराऊँगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, मगर इसके बाद जिसने तुम में से इंकार की नीति अपनाई तो वास्तव में उसने सुगम एवं सीधे मार्ग को गुम कर दिया।”(५:१२)

“यह था हमारा वह तर्क जो हमने इब्राहीम को उसकी जाति वालों के मुकाबले में प्रदान किया। हम जिसे चाहते हैं ऊँचे पद प्रदान करते हैं। सत्य यह है कि तुम्हारा प्रभु अत्यंत बुद्धिमान और सर्वज्ञ है।

फिर हमने इब्राहीम को इसहाक और याकूब जैसे पुत्र दिए और हर एक का पथ प्रदर्शन किया। (वह सीधा मार्ग जो) उससे पहले नूह को दिखाया था। और

उसकी संतति से हमेन दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ, मूसा और हारून को (सीधा मार्ग दिखाया) इस प्रकार हम सत्कर्मियों लोगों को उनकी नेकी का बदला देते हैं। (उसी की संतान से) जकरिया, यह्या, ईसा और इलयास को (मार्ग दिखाया) हर एक इनमें नेक था। (उसी के वंशज से) इस्माईल, अील-यास, यूनस और लूत को (रास्ता दिखाया)। इनमें से हर एक को हमने सारे संसार वालों के मुकाबले में आगे रखा। यह भी कि उनके पूर्वजों और उनकी संतति और उनके भाई-बन्धुओं में से बहुतों को हमने अपना कृपा पात्र बनाया, उन्हें अपनी सेवा के लिए चुन लिया और उन्हें सीधा मार्ग दिखाया। यह अल्लाह का मार्गदर्शन है जिसके साथ वह अपने बंदों में से जिसको चाहता है पथ प्रदर्शन करता है। लेकिन अगर कहीं वे लोग शिर्क (बहुदेववाद) में पड़े होते तो उनका सब किया कराया नष्ट हो जाता। ये वे लोग थे जिनको हमने किताब और निर्णय शक्ति और पैगम्बरी प्रदान की थी। अब यदि ये लोग इसको मानने से इंकार करते हैं तो (परवाह नहीं) हमने कुछ और लोगों को यह कृपानिधि सौंप दी है जो इसका इंकार नहीं करते।” (६:८३-८९)

कुरआना और प्रलय दिवस

प्रलय दिवस पर ईमान लाना कुरआन की प्रमुख शिक्षाओं में से एक है। क्योंकि मनुष्य इस जीवन में जो कुछ अच्छा या बुरा करता है उसको कभी भी पूरा-पूरा फल नहीं मिलता तो यह उस पर बहुत बड़ा जुल्म होगा अगर उसको ईश्वर के सामने अपने अच्छे या बुरे कर्तव्यों का हिसाब न देना पड़े और बड़ी बात तो यह है कि क्या इस संसार के बाद कोई संसार नहीं? अगर ऐसा नहीं तो फिर अच्छाई और बुराई किस लिए? और ऐसा भी तो होता है कि हम जिसको बुरा कहते हैं दूसरा उसको अच्छा कहता है और जिसको वह अच्छा कहता है हम उसको बुरा कहते हैं। इसलिए प्रलय दिवस अनिवार्य है जहाँ अच्छाई और बुराई का सही फैसला होगा और अपने-अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक मिलेगा। अब आईए कुरआन की निम्न लिखित आयत (श्लोक) को ध्यान से पढ़ें और उन पर विचार करें।

“जो किताब तुम पर उतारी गई है (अर्थात् कुरआन) और जो किताबें तुम से पहले उतारी गई थीं उन सबको मानते हैं, और परलोक में विश्वास रखते हैं। ऐसे लोग अपने प्रभु की ओर से सीधे मार्ग पर हैं और वही पूर्ण काम हैं।” (२:४,५)

“और डरो उस दिन से जब कोई किसी के तनिक भी काम न आएगा, न किसी से कोई अर्थ दण्ड स्वीकार किया जाएगा, न कोई सिफारिश ही आदमी को लाभ पहुँचा सकेगी, और न अपराधियों को कहीं से कोई सहायता पहुँच सकेगी।” (२:१२३)

“नेकी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे पूर्व की ओर कर लिए या पश्चिम की ओर, बल्कि नेकी यह है कि आदमी अल्लाह को और अंतिम दिन को और फरिश्तो को और अल्लाह की उतारी हुई किताब और उसके संदेशवाहकों को

दिल से नो, और अल्लाह के प्रेम में अपना मनभाता धन नातेदारों और अनाथों पर, निर्धनों और मुसाफिरों पर सहायतार्थ हाथ फैलाने वालों पर और गुलामों की रिहाई पर खर्च करे, उपासना (नमाज़) का आयोजन करे और दान दे। और नेक वे लोग हैं कि वचन दें तो उसे पुरा करें, और तंगी और विपत्ति के समय में और सत्य और असत्य के युद्ध में धैर्य दिखाएं। ये हैं सच्चे लोग और यही लोग सुचिन्तित हैं।” (२:११७)

“पालनहार, तू निश्चय ही सब लोगों को एक दिन इकट्ठा करने वाला है, जिसके आने में कई संदेह नहीं। तू कदापि अपने वादे से टलने वाला नहीं है।” (३:९)

“और वे लोग भी अल्लाह को पसन्द नहीं हैं, जो अपने माल केवल लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं और वास्तव में न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न अंतिम दिन पर। सच यह है कि शैतान जिसका साथी हुआ उसे बहुत ही बुरा साथ प्राप्त हुआ।” (४:३८)

“हे लोगों जो ईमान लाए हो, बात मानो अल्लाह की और बात मानो रसूल की और उन लोगों की जो तुमसे से आदेश देने के अधिकारी हों, फिर अगर तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा खड़ा हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो अगर तुम वास्तव में अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखत हो। यही एक सही कार्य प्रणाली है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।” (४:५९)

“और याद करो जब कि तुम्हारे प्रभु ने घोषणा कर दी कि वह पुनरुज्जीवन के दिन तक निरंतर ऐसे लोग उन (इस्त्राईलियों) पर नियुक्त करता रहेगा जो इनको बहुत ही यातना देंगे। निश्चय ही तुम्हारा प्रभु दण्ड देने में तीव्र है और निश्चय ही वह क्षमा और दया से भी काम लेने वाला है।” (७:१६७)

“अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करने वाले (सेवक) तो वही लोग हो

सकते हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन को मानें, और नमाज़ का आयोजन करें, दान दें, और अल्लाह के सिवा किसी से न डरें। उन ही से यह आशा है कि सीधी राह चलेंगे। क्या तुम लोगों ने हाजियों को पानी पिलाने और प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) की मुजाविरी करने को उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है जो ईमान लाया अल्लाह पर और अंतिम दिन पर और जिसने संघर्ष किया अल्लाह के मार्ग में ? अल्लाह की दृष्टि में तो ये दोनों बराबर नहीं है और अल्लाह अत्याचारियों को राह पर नहीं लगाया करता।” (९:१८, १९)

“(आज ये दुनिया की जिंदगी में मस्त हैं) और जिस दिन अल्लाह इनको इकट्ठा करेगा तो (यही दुनिया की जिंदगी इन्हें ऐसी लगेगी) मानो ये केवल एक घड़ी भर आपस में जान-पहचान करने को ठहरे थे। (उस समय सिद्ध हो जाएगा कि) वास्तव में बड़े घाट में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और कदापि वे सीधे मार्ग पर न थे।” (१०:४५)

“तुम्हारा पूज्य प्रभु बस एक ही पूज्य है। किंतु जो लोग परलोक को नहीं मानते उनके दिलों में इंकार बस कर रह गया है और वे घमण्ड में पड़ गए हैं। अल्लाह निश्चय ही इन सबकी करतूद जानता है छुपी हुई भी और खुली हुई भी। वह उन लोगों को कदापि पसंद नहीं करता जो अहंकार में पड़े हुए हों।” (१६:२२, २३)

“वास्तविकता यह है कि जो लोग परलोक को नहीं मानते उनके लिए हमने उनकी करतूतों को शोभायमान बना दिया है, इसलिए वे भटकते फिरते हैं।” (२७:४)

“अलिफ. लाम. मीम. यह तत्त्वदर्शिता युक्त ग्रन्थ की आयतें हैं, मार्गदर्शन और दयालुता उत्तमकार लोगों के लिए, जो नमाज कायम करते हैं, जकात देते हैं और परलोक पर विश्वास रखते हैं।” (३१:१-४)

कुरआन और ज्ञान

लोगों का ख्याल है कि धर्म और ज्ञान एक जगह जमा नहीं हो सकते, क्योंकि धर्म की रूप रेखा अंध विश्वास पर स्थित है, जहाँ ज्ञान की रौशनी पहुँच कर हलचल मचा देती है। इसलिए धार्मिक पुरुषों ने लोगों के ज्ञान प्राप्त करने पर रोक लगा रखी है। यही वजह थी कि जब यूरोप में ज्ञान की रौशनी फैली तो पोप व्याकुल हो उठे और उन्होंने ईसाई मत को बचाने के लिए विद्वानों की कड़ी आलोचना शुरू कर दी, यहाँ तक कि सैंकड़ों वैज्ञानिक फाँसी के तख्ते पर लटका दिए गए और उनकी मेहनत के फल को आग में डाल दिया गया, जिसके नतीजे में ऐसे विचार फैलने लगे कि धर्म और ज्ञान कभी भी एक स्थान पर जमा नहीं हो सकते और आज फिर इसी विचार को पूरी शक्ति के साथ लोगों में फैलाया जा रहा है।

वैसे हम धार्मिक इतिहास का अध्ययन करते हैं तो पता चलता है कि बहुत सारे धर्मों की स्थापना अंधविश्वास पर ही हुई है, और धर्म की व्याख्या ख्याली बातों से की गई है। इन्हें जब ज्ञान की कसौटी पर रख कर परखा जाता है तो दोनों में बड़ा अंतर दिखाई पड़ता है। इसलिए कि आज के ज्ञानी लोग देवी देवताओं की कहानियों में यकीन नहीं रखते। इतिहास के ख्याली सूरमाओं से उनका विश्वास उठता जा रहा है। धर्म के रस्मों रिवाज में उनको कोई कशिश नहीं दिखाई देती और अब वे पूजा पाठ से बेजार दिखाई देते हैं। उनकी इस हालत ने उनको ईश्वर का बागी बना दिया है।

बीसवीं शताब्दी में यह है धर्म की विकृत अवधारणा। शायद इंसानी बुद्धि की वह अंतिम पहुँच है, जब वह स्थान और समय की हद पर कर अपने ज्ञान की रौशनी में ही अपने भविष्य को प्रत्यक्ष देखना चाहता है। अब वह धरती पर रहते हुए आकाश की सैर कर रहा है। अब इसका पाँव चाँद के सौन्दर्य को भी रौंदने लगा है। शायद इसी लिए आज के वैज्ञानिक युग में भी कुछ लोग धर्म को केवल कुछ

अंधविश्वासों का मजमूआ समझने पर तुले हुए हैं, जिस के कारण धर्म का एक गलत रूप लोगों के सामने आने लगा है।

इस समय मैं दूसरे धर्मों से हट कर केवल इस्लाम की उन शिक्षाओं को आप के सामने पेश करना चाहता हूँ जिसमें उसने ज्ञान प्राप्त करने पर पूरा-पूरा जोर दिया है और ज्ञान रहित विश्वास को कोई महत्व नहीं दिया है। इसको पढ़ते हुए आप आज से चौदह सौ साल पहले का माहौल अपने सामने रखें तो आप को अच्छी तरह मालूम हो जाएगा कि इस्लाम की शिक्षा कितनी वैज्ञानिक और सत्यता पर आधारित है कि उसने ऐसे समय में भी ज्ञान प्राप्त करने की शिक्षा दी जब ज्ञान नाम की कोई चीज नहीं थी। जीवन या तो खाने-पीने का नाम था या फिर कुछ देवी देवताओं के प्रति अंधविश्वास का।

कुरआन की सबसे पहली आयत जो ईश्वर के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद ﷺ पर अवतरित हुई वह यह थी:

“पढ़ अपने पालनहार का नाम लेकर, जिसने पैदा किया। पैदा किया इंसान को एक लोथड़े से। पढ़ और तेरा पालनहार बड़ा ही उदार है, जिसने ज्ञान सिखाया, कलम के द्वारा, ज्ञान दिया इंसान को उस चीज का जिस को वह नहीं जानता था।”(९६:१-५)

इन आयतों पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि इस्लाम शिक्षा पर कितना बल देता है, जिसकी पहली पुकार ही ज्ञान प्राप्त करने से सम्बंध रखती है और सही बात तो यह है कि जिस धर्म का आरम्भ ही शिक्षा और ज्ञान से हो उसका अंत कितना अधिक ज्ञान से पूर्ण होगा।

आगे के पृष्ठों में हम साबित करेंगे कि कुरआन कितना वैज्ञानिक ग्रंथ है जिसमें ज्ञान का एक ऐसा भण्डार है कि उस पर जितना भी विचार किया जाए अंत होने को नहीं आता।

शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा:

कुरआन कहता है:

“ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर गिरोह में से एक टोली निकलती ताकि वे धर्म में समझ पैदा करते और वे अपने लोगों को होशियार करते, जब कि वे उनकी ओर पलटते। इस तरह शायद वे बुरे कामों से बच जाते।” (९:१२२)

कुरआन की यह एक आयत उन सब आरोपो को झुठलाने के लिए काफी है, जिनके अनुसार इस्लाम ज्ञान और विज्ञान के खिलाफ है। अगर ऐसी बात होती तो कुरआन इस तरह पुकार कर आवाज़ न लगाता कि ऐ लोगों! अपने घरों से शिक्षा प्राप्त करने के लिए निकलो, ताकि संसार को सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म और अच्छे बुरे कर्मों से सचेत कर सको।

आज सारा संसार जुल्म की आग में झुलस रहा है, जब कि इंसान धरती पर रहते हुए आकाश का स्वप्न देखने लगा है। मगर जिस सुख चैन के लिए उसने अपनी पूँजी खर्च कर डाली है वह उसको अब तक प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए कि वह अपने सत्य मार्ग से मुँह मोड़कर किसी और रास्ते पर चल पड़ा है। उसकी शिक्षा का मकसद था कि संसार की सही रहनुमाई और मार्गदर्शन करे, परन्तु आज वह एटम बम बनाकर उसको गलत जगह इस्तेमाल कर रहा है और अपनी ताकत को इंसानों की भलाई के बजाए उसे नष्ट-विनष्ट करने में लगा हुआ है। अगर शिक्षा इसी का नाम है तो वास्तव में इस्लाम इसके खिलाफ है, मगर वह शिक्षा जो इंसान को इंसान बनाने के लिए प्राप्त की जाए इस्लाम के खिलाफ कभी नहीं रहा न है और न रहेगा। आप को ताज्जुब होगा कि कुरआन अपने नबी को सम्बोधित कर के कहता है:

“हे (मुहम्मद) जान लो कि अल्लाह के अलावा और कोई इबादत के लायक नहीं।” (४७:१९)

इसमें इस बात की तरफ इशारा है कि ईश्वर की प्रार्थना और इबादत उस समय तक

सही नहीं होगी जब तक पुजारी को यह न मालूम हो जाए कि लायक तो केवल ईश्वर है। दूसरे शब्दों में ये कह सकते हैं कि उपासक को चाहिए कि उपासना करने से पहले अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त कर ले। अगर ऐसा नहीं किया तो उसकी उपासना कोई महत्व नहीं रखती।

इसमें उन लोगों के लिए चेतावनी है जो धर्म को केवल अंधविश्वासों का योग समझते हैं और उसकी वास्तविकता से अच्छी तरह परिचित होने की चेष्टा नहीं करते। हो सकता है कि उनका यह दृष्टिकोण दूसरे धर्मों के लिए सत्य हो परंतु इस्लाम इसके बिलकुल विपरीत है।

मैं अपनी इस बात को कुछ और स्पष्ट करने के लिए यहाँ हज़रत मुहम्मद ﷺ की कुछ पवित्र शिक्षाएं नकल कर रहा हूँ ताकि इस्लाम में शिक्षा के महत्व को भली-भाँति समझा जा सके।

कैस बिन कसीर कहते हैं कि एक बार मैं हज़रत अबू दरदा के साथ दमिश्क की मस्जिद में बैठा था कि इतने में एक आदमी आया और कहने लगा, ऐ अबू दरदा! मैं मदीने से आप के पास इसलिए आया हूँ कि मुझे खबर मिली है कि मुहम्मद ﷺ की हदीस बयाना करते हैं।

अबू दरदा ने फरमाया, मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ से सुना है, आप फरमाते थे:

((जो व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने के लिए रास्ता तय करके आगे बढ़ता है उसके रास्ते में फरिश्ते पर बिछाते हैं और ईश्वर उसके रास्ते को आसान कर देता है।))
(अबू दाऊद तथा तिर्मिजी)

हज़रत अनस रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया:

((जो व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने के लिए निकलता है वह अल्लाह के रास्ते में है, यहाँ तक कि वापस आ जाए)) (तिर्मिजी)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया:
 ((जिसके साथ ईश्वर भलाई करना चाहता है उसको धर्म में सूझ-बूझ प्रदान कर देता है।)) (तिर्मिजी)

अबू दरदा कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ का उपदेश है कि:
 ((शिक्षित व्यक्ति की विशेषता उपासक पर उसी प्रकार है, जिस प्रकार चौदहवीं के चाँद की विशेषता सारे सितारों पर। और शिक्षित लोग नबियों के वारिस हैं और नबी दीनार तथा दिरहम नहीं छोड़ कर जाते, बल्कि वे शिक्षा और ज्ञान छोड़ते हैं, इसलिए जिसने शिक्षा ग्रहण की उसने बहुत बड़ा भाग्य प्राप्त किया।) (तिर्मिजी)

अबू हुरैरह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया:
 ((ज्ञान की बात मोमिन की खोई हुई सम्पत्ति है। इसलिए वह उस को जहाँ भी पायें उसक वही हकदार है।)) (तिर्मिजी)

ये तो कुछ वे हदीसें हुई जो शिक्षा प्राप्त करने पर उभारती हैं। अब आईए आप को कुछ ऐसी हदीसें भी सुनाऊँ जो ज्ञान छिपाने और उसको दूसरों तक न पहुँचाने पर कड़ी आलोचना करती है। इस प्रकार आप को मालूम हो जाएगा कि इस्लाम शिक्षा प्राप्त करने पर किस तरह उभारता है और दूसरे शब्दों में इस्लाम कितना वैज्ञानिक धर्म है।

ज्ञान छिपाने वालों की कड़ी आलोचना:

शिक्षा की इसी विशेषता के कारण कुरआन उन लोगों की कड़ी आलोचना करता है जो ज्ञान रखते हुए भी उसको दूसरों से छिपाते हैं और उस को समाज में फैलाने की कोशिश करते ताकि और लोग उससे लाभ उठा सकें, इससे यह बात भली—भाँति स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम में शिक्षा का कितना महत्व है।

आईए आप के सामने कुरआन की कुछ ऐसी आयतों का अर्थ स्पष्ट कर दूँ जो

ज्ञान छिपाने वालों की कड़ी आलोचना करती है:

“और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जिसके पास ईश्वर की ओर से गवाही हो और वह उसे छिपाए” (२:१४०)

गवाही का अर्थ उलमा यह लेते हैं कि यहूदियों और ईसाईयों की किताबों में मुहम्मद ﷺ के आने की खबर दी गई थी, परंतु उन्होंने उसको छिपा दिया और नबी ने अपने नबी होने का दावा किया तो उन्होंने आप को ठुकरा दिया।^①

यह अर्थ अपने स्थान पर सही है मगर आप इसको और भी विस्तृत कीजिए और उस में हर उस गवाही को शामिल कर लीजिए जो अल्लाह ने आप को सौंपी है, चाहे वह

① हिन्दु धर्म के ग्रंथ वेद और पुराणों में भी हजरत मुहम्मद ﷺ के आने की सूचना दी गई है। इसके कुछ नमूने यहाँ पेश करते हैं।

((एक-दूसरे देश में एक आचार्य अपने मित्रों के साथ आएंगे उनका नाम महामद होगा वे रेगिस्तानी क्षेत्र में आएंगे।)) (भविष्य पुराण अ० ३२३ सू० ५/८)

स्पष्ट रूप से इस श्लोक और सूत्र में नाम और स्थान के संकेत हैं। आने वाले महान पुरुष की अन्य निशानियाँ इस प्रकार बयान हुई हैं:

((पैदाईशी तौर पर उनका खतना किया हुआ होगा, उनके जटा नहीं होगी, वे दाढ़ी रखे हुए होंगे, गोशत खाएंगे, अपना संदेश स्पष्ट शब्दों में जोरदार तरीके से प्रसारित करेंगे, अपने संदेश के मानने वालों को मूसलाई नाम से पुकारेंगे।))

इस श्लोक को ध्यानपूर्वक देखिए। खतने का रिवाज हिंदुओं में नहीं था। जटा यहाँ का धार्मिक निशान था। आने वाले महान पुरुष अर्थात् मुहम्मद ﷺ के अंदर ये सभी पातें पाई जाती हैं। फिर इस संदेश के मानने वालों के लिए मूसलाई का नाम है। यह शब्द मुस्लिम और मुसलमान की ओर संकेत करता है। अर्थवेद अध्याय २० में हम निम्नलिखित श्लोक देख सकते हैं:

((हे भगतो! इस को ध्यान से सुनो, प्रशंसा किया गया, प्रशंसा किया जाने वाला वह महामहे महान ऋषि साठ हजार नव्वे लोगों के बीच आएगा।))

मुहम्मद के मायने हैं जिसकी प्रशंसा की गई हो। आप ﷺ की पैदाईश के समय मक्का की आबादी साठ हजार थी।

कुरआन मजीद नबी ﷺ को 'जगत के रहमत' के नाम से याद करता है। ऋग्वेद में भी है:

((रहमत का नाम पाने वाला, प्रशंसा किया हुआ दस हजार साथियों के साथ आएगा।)) (मंत्र ५/२८)

इसी तरह वेद में महामहे और महामद के नाम से भी ﷺ के आगमन का उल्लेख है।

(“دراسات في اليهودية والمسيحية وأديان الهند”)

शिक्षा हो या किसी विशेष वस्तु का ज्ञान, जो मानव समाज के लिए लाभदायक हो।

“सत्य को असत्य से गड-मड न करो और जानते बूझते सत्य को न छिपाओ।” (२:४२)

“रसूल पर पहुँचा-देने के अलावा और कोई जिम्मेदारी नहीं, और अल्लाह सब जानता है जो कुछ तुम खुले करते हो और जो छिपाते हो।” (५:९९)

“और याद करो जब अल्लाह ने उन लोगों से जिन्हें किताब दी गई थी यह पक्का वादा लिया कि तुम इस किताब को लोगों के सामने भली-भाँति स्पष्ट करोगे और उसे छिपाओगे नहीं तो उन्होंने उसे पीठ पीछे डाल दिया और थोड़े मूल्य पर उसका सौदा किया तो क्या ही बुरा सौदा है जो ये करते हैं।” (३:१८७)

इन आयतों से यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है कि पिछली जातियों ने अल्लाह की ओर से दी गई किताब को लोगों से छिपा रखा और उसको भली-भाँति उन तक नहीं पहुँचाया और यह एक प्रकार का बहुत बड़ा अत्याचार है क्योंकि यह किताब ज्ञान का भंडार थी उसको छिपाने वाला बहुत बड़ा अत्याचारी और धर्म विरोधी व्यक्ति है। कुरआन में है:

“निस्सन्देह जो लोग हमारी उतारी हुई खुली-खुली निशानियों और मार्गदर्शन को छिपाते हैं, जब कि हम उसे लोगों की रहनुमाई के लिए अपनी किताब में खोल कर बयान कर चुके हैं, वही हैं जिन पर अल्लाह की फटकार पड़ती है और फटकारने वाले जिन्हें फटकारतें हैं।” (२:१५९)

“निस्सन्देह जो लोग उस चीज को छिपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है, और उनके बदले थोड़ा मूल्य प्राप्त करते हैं, वे अपने पे में आग के सिवा किसी और चीज़ को नहीं भर रहे हैं और कयामत के दिन न तो अल्लाह उनसे बात करेगा और न उन्हें पाक करेगा। उनके लिए दुखदायिनी यातना है।” (२:१७४)

ये वे कुछ आयते हैं जो ज्ञान छिपाने वालों पर कड़ी आलोचना करती हैं,

इनसे भली प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम में शिक्षा का कितना महत्व है। अब आईए अल्लाह के रसूल ﷺ के कथनों की रौशनी में इस बात को और स्पष्ट करूँ।

अबू दुरैर रह रज़ीयल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है, फरमाया अल्लाह के रसूल ﷺ ने:

((जिससे कोई ज्ञान की बात पूछी गई हो और वह उसको जानता हो, मगर उसने उसको छिपा दिया, उसे प्रलय के दिन आग की लगाम लगाई जाएगी।)) (तिर्मिज़ी तथा अबू दाऊद)

इस हदीस में उन लोगों की कड़ी आलोचना है जो ज्ञान रखते हुए भी उसको लोगों तक नहीं पहुँचाते जिसके कारण वह ज्ञान कुछ लोगों तक ही रुक जाता है और उसका लाभ दूसरों को नहीं पहुँचता, क्योंकि दूसरों तक ज्ञान पहुँचाने में उसकी बढ़ोत्तरी है और अपने तक रख लेना उसके लिए नुकसान है। यह भी हो सकता है कि ज्ञान जिसे दूसरे तक पहुँचाया गया है, वह उससे अधिक समझ रखने वाला हो और उसके द्वारा अधिक फायदा उठावे जैसा कि एक दूसरी हदीस में आया है।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه रज़ीयल्लाहु अन्हु का कहना है कि मैंने अल्लाह के रसूल को यह कहते सुना:

((अल्लाह उस बंदे को खुश रखे जिसने मेरी बात सुनी, उसे याद रखा और ठीक रूप में लोगों तक पहुँचाया, क्योंकि प्रायः ऐसा होता है कि समझ और विवेक की बात का पहुँचाने वाला स्वयं समझदार नहीं होता और ऐसा भी होता है कि समझ और विवेक की बात का पहुँचाने वाला ऐसे व्यक्ति तक पहुँचा देता है जो कि उससे कहीं ज्यादा विवेकशील होता है।)) (तिर्मिज़ी तथा अबू दाऊद)

इस हदीस में जिस बात की ओर इशारा किया गया है वह यह है कि ज्ञान वालों को ज्ञान छिपाना नहीं चाहिए। इसकी वजह से पूरे समाज का नुकसान होता है, क्योंकि ज्ञान धारक प्रायः अपने ज्ञान का लाभ नहीं समझता। इसलिए अगर वह दूसरों तक वह ज्ञान पहुँचा देता है तो दूसरे उससे इच्छानुसार लाभ उठा सकते हैं क्योंकि ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति में यह सलाहियत नहीं रखी है कि अच्छी बातों को समाज में लागू

कर सके। इसलिए इस हदीस में एक प्रकार से उन लोगों की आलोचना है जो ज्ञान को दूसरों तक नहीं पहुँचाते।

हाँ इतनी बात जरूर याद रखनी चाहिए कि ज्ञान पहुँचाते हुए उस व्यक्ति को भी अच्छी तरह देख लेना चाहिए, जिसको शिक्षा दी जा रही है कि कहीं वह उस शिक्षा के कारण फितने में न पड़ जाए जैसा कि एक हदी में आया है: अब्दुल्लाह बिन मसऊद से उल्लिखित है, उन्होंने कहा कि:

((लोगों को हदीस सुनाते समय उनकी समझ-बूझ का ख्याल रखो। कहीं ऐसा न हो कि तुम उनको ऐसी बातें बता दो जो उनकी समझ से ऊँची हों और उनके कारण एक प्रकार का फितना पैदा हो जाए।)) (मुस्लिम)

यद्यपि यह नबी ﷺ की हदीस नहीं है, परंतु इससे यह बात भली प्रकार स्पष्ट होती है कि हदीस बयान करते समय लोगों की समझ-बूझ का सदैव ख्याल रखा जाना चाहिए।

यह बातें हमारे समाज के लिए कितनी वैज्ञानिक है कि आज संसार में जो हंगामा और शोर मचा हुआ है उसका एक कारण यह भी है कि हमारे नेता भाषण करते समय यह भूल जाते हैं कि उनकी बातों से समाज पर क्या बुरा असर पड़ेगा।

इस बारे में मैं इतना ही कहूँगा कि जरा कुरआन पर एक नजर (दृष्टि) डाल कर देखें इसमें आप को बहुमूल्य हीरे मिलेंगे, जिस का अगर विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाए तो संसार के सारे कागज़ और रोशनाई समाप्त हो जाए फिर भी उनकी तह तक मनुष्य नहीं पहुँच सकता। इसी और कुरआन संकेत करता है:

“और धरती में जितने वृक्ष हैं यादि वे सब लेखनी हो जाएं और यह समुद्र हो, जिसे सात और समुद्र रोशनाई पहुँचाए, तब भी अल्लाह की बातें (लिखने से) समाप्त नहीं होगी, निश्चय ही अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।” (३१: २७)

कुरआन और समाज

१. संगठन और कुरआन

दुनिया में दो तरह के इंसान पाए जाते हैं। एक वे जो अपने लिए जीते हैं और अपने लिए ही मरते हैं, दूसरे वे कि जिनका जीना-मरना दूसरों के लिए होता है। पहली तरह के लोगों में और पृथ्वी के दूसरे कीड़े-मकोड़ों और पशुओं में कोई विशेष अंतर नहीं है। रहे दूसरे प्रकार के लोग तो यही वे हैं जिनको संसार ने बहुत ऊँचा स्थान दिया है। इन्हीं के कारण संसार चल रहा है। जिस दिन इनका वजूद खत्म हो जाएगा उस दिन यह हरी-भरी दुनिया भी खत्म हो जाएगी। जीते जी दुनिया मौत की गोद में दिखाई देगी। इस लिए संसार के सभी धर्मों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। दूसरों की मदद पर उभारा है और इसको मानवता का उच्च धर्म बताया है। मनुष्य तो वही है जो मनुष्य के लिए मरे !!

अब आईए हम देखें कि कुरआन ने इसके लिए क्या शिक्षा दी है।

“भलाई के कामों और ईश भय के कामों में एक दूसरे की मदद करो। हाँ, बुरे कामों में और किसी पर अत्याचार करने में मददगार मत बनो।” (५: २)

वास्तव में यह आयत सामाजिक जीवन बिताने का बेहतरीन रास्ता बतला रही है और वह यह कि जब समाज के कुछ अच्छे लोग समाज की बुराईयों को मिटाने की कोशिश करना चाहें तो उनको चाहिए कि सबसे पहले एक संघ या जमाअत बनाएं उसमें उन लोगों को दाखिल करें जो समाज की सेवा करना चाहते हैं या यूँ कहिए कि उन सभी लोगों को चाहिए कि स्वयं आगे बढ़कर इस संघ की सहायता करें जो समाज से बुराईयाँ मिटाना चाहता है। क्योंकि एक व्यक्ति अकेला समाज की बुराईयों का सामना नहीं कर सकता, एक तो उसकी ताकत इतनी कम होगी कि कोई उसकी ओर ध्यान भी नहीं देगा, दूसरे वह खुद बहुत जल्द थक हार कर बैठ जाएगा। आप संसार के किसी भी बड़े से बड़े सेवक का जीवन चरित्र उठा

कर देखें तो आप को उनके पीछे पूरी एक सेना दिखाई देगी, जिन्होंने उनका हाथ बटाया, उनको साहस दिया और अंत में वे अपने मिशन में सफल होकर इस संसार से विदा हो गए।

सूरह माएदा की इस आयत में इसी बात की ओर इशारा किया गया है, जब कोई व्यक्ति भलाई की ओर तुम को बुलाए तो तुम्हारे लिए अनिवार्य हो जाता है कि उसकी मदद करो। कहीं ऐसा न हो कि इस हलचल में उस बेचारे की आवाज़ दब कर रह जाए और बुरे लोग ऊपर उठते रहें। इसी की ओर एक दूसरी आयत इशारा कर रही है।

“जो लोग ईश मार्ग से विमुख हैं, वे एक-दूसरे के सहायक हैं (अर्थात् दूसरों को भी उसी और पुकारते हैं) इसलिए वह जन-समूह जो ईश मार्ग अपनाना चाहते हैं अगर आपस में प्रेम-भाव और महानता का बरताव नहीं करेंगे तो फिर यह पृथ्वी दंगे फसाद का अखाड़ा बन जाएगी।” (८:७३)

देखा आप ने इसने तो साफ-साफ व्यक्त कर दिया कि सामाजिक सेवा के लिए एक-दूसरे के साथ हमदर्दी का बरताव बहुत ही जरूरी है, नहीं तो यह ज़मीन मानवता के पुण्य रक्त से भर जाएगी और उस समय ईश भक्तों को सिर छिपाने की जगह नहीं मिलेगी।

इस आयत का मतलब तो वे लोग भली-भँति समझ सकते हैं जिनको कभी यूरोप की यात्रा करने का अवसर मिला हो या जिन्होंने यूरोप का इतिहास ही पढ़ा हो कि आज वहाँ मानवता की कैसी दुर्दशा हो रही है। बाप-बेटी और बहन-भाई में कोई अंतर नहीं, खुली सड़क पर व्याभिचार हो रहा है। पार्कों और कलबों में नंगा नाच हो रहा है। स्थान-स्थान पर शराब की दुकानें खुली पड़ी हैं। नवयुवक और कोमल कुमारियाँ यौवन मस्ती का नाटक खेल रहे हैं। कालेज और विश्वविद्यालय जो कि सभ्यता सिखाने के पुण्य स्थान थे अब व्याभिचार के अड्डे बन गए हैं। मिली-जुली शिक्षा के कारण अस्सी प्रतिशत लड़कियाँ आयु से पहले

माँ बन जाती हैं। मैं कहाँ तक उनका वर्णन करूँ, बस यूँ समझ लीजिए कि वह कौन सी बुराई है जो आज यूरोप के खुले बाजारों में नहीं पाई जाती। यह इस बात का नतीजा है कि ईश भक्तों ने आपस में मिलकर इन बुराईयों के विरुद्ध कोई संघ नहीं बनाया, बल्कि वे स्वयं आपस में ही लड़ते रहे। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि आज एशिया भी इन्हीं के मार्ग पर चलना चाहत है। यहाँ भी ईश भक्तों की आपस में लड़ाई छिड़ गई है और अगर यही दशा रही तो यहाँ भी कोई ईश्वर का नाम लेने वाला नहीं रहेगा। वह माँ-बहने जिनकी इज्जत व आबरू के लिए हम जानें निछावर करते हैं कल खुली सड़क पर नंगे नाटक खेलेंगी। इसी की ओर कुरआन संकेत करता है:

“लोगों के गुनाहों के कारण पृथ्वी और समुद्र में फساد फैल गया।” (३०:४१)

ईश भक्तों की विशेषता बताते हुए कुरआन कहता है:

“ईमान लाने वाले पुरुष और ईमान लाने वाली नारियाँ आपस में एक-दूसरे के संरक्षक मित्र होते हैं। अच्छे कामों की शिक्षा देते हैं और बुरे कामों से रोकते हैं। नमाज़ कायम करते हैं और उसके मार्ग में खर्च करते हैं, अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाओं का पालन करते हैं। ऐसे ही लोगों पर अल्लाह दया करेगा, निःसंदेह अल्लाह बड़ी ताकत और हिकमत वाला है।” (९:७१)

उस गिरोह को कुरआन ने सफलता का वरदान दिया है जो भलाई की शिक्षा देता है, कहता है:

“तुम में एक ऐसा गिरोह होना चाहिए जो लोगों को भलाई की ओर बुलाए और नेकी का हुक्म दे और बुराईयों से रोके, बस यही लोग हैं जो सफलता प्राप्त करने योग्य हैं।” (३:१०४)

२. माँ-बाप और कुरआन

माँ-बाप की सेवा इंसान के दिल की पुकार है। मैं तो समझता हूँ कि अगर ईश्वर

हमको इसका हुक्म न भी देता तो भी इंसान इससे वंचित नहीं रह सकता था, क्योंकि जब हम अपने जन्म दिवस से लेकर बड़े होने तक के इस दौर पर विचार करते हैं तो बड़ी आसानी से यह बात समझ में आ सकती है कि माँ-बाप ही ने हमको पाल पोसकर बड़ा किया। अगर वह हमारी ओर ध्यान न देते तो हम एक दिन भी संसार में जीवित न रह सकते थे। इन्होंने हमारी शिक्षा-दीक्षा का अच्छे से अच्छा प्रबंध किया, अगर वे ऐसा न करते तो हम बिल्कुल मूर्ख रहते। अपने सुख चैन को तज कर हम पर अपनी गाढ़ी कमाई खर्च की, अगर वे ऐसा न करते तो हम एक-एक पाई के लिए तरस जाते। तो क्या वह व्यक्ति जिसने हमारे लिए यह सब कुछ किया उसके प्रति हमारा कर्तव्य नहीं।

कुरआन ने इस सिलसिले में बड़ी शिष्टाचारमय एवं उत्तम शिक्षाएं दी हैं:

“और तेरे रब ने फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो, माँ बाप के साथ उत्तम व्यवहार करो, उन दोनों में से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उनको ‘उफ तक मत कोह और न उनको झिड़को बल्कि उनके साथ मीठी मीठी बातें करो और उनके लिए दयालुता के साथ विनम्रता की भुजा झुका दो और कहो, हे मेरे रब जिस प्रकार इन्होंने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया तू भी इन पर दया कर।” (१७: २३, २४)

“और हमने इंसान को ताकीद की है कि वह अपने माँ और बाप के साथ उत्तम व्यवहार करें। लेकिन अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी चीज़ को मेरा साझी ठहराए जिसके बारे में तुझे कोई ज्ञान नहीं है तो उनकी इस बात को ठुकरा देना। (याद रखो कि) तुम्हें मेरी ही ओर वापस लौट कर आना है फिर मैं बता दूँगा कि तुम क्या कुछ करते थे।” (२९: ८)

इस आयत में एक खास बात यह बताई गई है कि अगर माँ-बाप ईश्वरीय आज्ञाओं का उल्लंघन कराएँ तो संतान को चाहिए कि वह ऐसा करने से इंकार कर दें, क्योंकि ईश्वर ही ने हम को पैदा किया, उसने हमारे लिए दयावान, माँ-

बाप दिए। उसी ने दुनिया जहान की बेशुमार चीजें हमारे लिए बनाई, तो हमारे लिए यह जरूरी है कि उसकी उपासना में किसी को साझी न बनाएं चाहे आज्ञा देने वाले माँ-बाप ही क्यों न हों। इसलिए कि ईश्वर के एहसान हमारे ऊपर सबसे अधिक हैं फिर जब ईश्वरीय आज्ञा और माँ-बाप की आज्ञा में टकराव हो जाए तो फिर उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए, जिसके एहसानात सब से बढ़ कर हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि हम माता-पिता छोड़ दें और उनकी सेवा ही न करें, नहीं बल्कि सांसारिक जीवन में उनकी सेवा अनिवार्य है। चाहे वह रुपये-पैसे के रूप में हो या और किसी रूप में। इसी की ओर कुरआन संकेत करता है:

“और हम ने इंसान को उसके माँ-बाप के बारे में ताकीद की है। उसकी माँ बड़ी कठनाईयों के साथ उसको पेट में लिए रही और उसका दूध छुटता है दो वर्ष में। तुम मेरा भी एहसान मानो और अपने माँ-बाप का भी। (ध्यान रखो कि) मेरी ही ओर (तुम को पलटकर) आना है। लेकिन अगर वे इस बात की कोशिश करें कि तू मेरे साथ किसी को मेरा साझी बना, जिसका तुझे ज्ञान नहीं है तो ऐसा कदापि न करना, लेकिन हअं! शंसार में उनके साथ भलाई का बरताव करना।” (३१:१४, १५)

ये आयतें खुले तौर से माँ-बाप के साथ संतान के सम्बंध को प्रकट करती हैं। इस पर जितना ही विचार किया जाए उतना ही आध्यात्मिक भाव हमारे सामने आता है। एक हदीस में तो अल्लाह के रसूल ने यहाँ तक कह दिया कि स्वर्ग माँ-बाप के कदमों में है, इसलिए वे लोग कितने बदकिस्मत हैं जिनको माँ-बाप की सेवा का अवसर मिला, मगर स्वर्ग प्राप्त नहीं कर सके। कुरआन में भी बहुत सी आयतें हैं जो माँ-बाप की सेवा पर उभारती हैं।

३. न्याय और कुरआन

समाज की सुरक्षा के लिए न्याय का बरताव बहुत जरूरी है। वह समाज कभी फूल-फल नहीं सकता जो न्याय से वंचित हो। न्याय मानवता का वह अधिकार है

जिसको न धन से खरीदा जा सकता है और न शक्ति से छिना जा सकता है। आप देख लीजिए कि जिस समाज ने धन और शक्ति के बल पर न्याय को दबाना चाहा है उसको इतिहास ने माफ नहीं किया और न ही भविष्य में माफ करेगा। वह दिन अवश्य आएगा जब न्याय का गला घोटने वालों का गला घोटा जाएगा। दुखी मानवता को शक्ति से दबाने वालों को स्वयं ही दुख की चक्की में पिसना पड़ेगा। इस संसार का यह अटल नियम है, जिसको कोई व्यक्ति अपनी मूर्खता से बदल नहीं सकता। वे लोग बहुत जल्द अपने आप को भुला दते हैं जो न्याय की कुर्सियों पर बैठते हैं कि वे कितनी कड़ी परीक्षा दे रहे हैं जिनके एक-एक क्षण और एक-एक अक्षर का मानवता के न्याय गृह में हिसाब लिया जाएगा इससे बचकर निकल गए तो इतिहास के पन्नों को हिसाब देना होगा। अगर इससे भी बचकर निकल गए तो ईश्वर की अदालत से तो किसी प्रकार बचकर नहीं निकल सकेंगे। इस्लामी शिक्षाओं ने इस सिलसिले में किसी का पक्ष नहीं लिया है बल्कि साफ-साफ उन लोगों को होशियार रहने का हुक्म दे दिया है जो न्यायाधीश की कुर्सियों पर विराजमान हैं, अन्याय करने वालों को कठिन दंड की चेतावनी दी है। इसलिए इस्लामी न्याय इतिहास के पन्नों में उदाहरण बन गया है। आईए इस न्याय को कुरआन से खोजें:

“अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि लोगों की अमानतों को उन तक पहुँचा दो और जब तुम लोगों का निर्णय करो तो न्याय के साथ करो, ईश्वर तुम्हें बेहतरीन उपदेश कर रहा है, याद रखो ईश्वर सुनने और देखने वाला है।” (४:५८)

“ऐ लोगों! जो ईमान लाए, तुम न्याय पर मजबूती के साथ जमे रहने वाले बनो। अल्लाह के लिए (इंसाफ की) गवाही देते हुए। चाहे वह गवाही तुम्हारे खुद अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न पड़े, कोई धनवान हो या निर्धन अल्लाह उन दोनों से ज्यादा करीब है, इसलिए तुम न्याय करने में अपनी इच्छाओं के पीछे मत चलो। अगर तुम कजी करोगे या कतराओगे तो याद रखो

कि ईश्वर तुम्हारे कामों को अच्छी तरह जानता है।” (४:१३५)

एक मनुष्य के लिए न्याय मार्ग अपनाना कुछ मुश्किल नहीं है, मगर उसकी आजमाईश उस समय हो जाती है जब कोई समस्या स्वयं या उसके माँ-बाप से सम्बंध रखती हो। ऐसी दशा में देखा गया है कि लोगों के पाँव डगमगा जाते हैं। यही वह अवसत होता है जब उसके न्याय का पोल खुल जाता है। ऐसे समय में भी कुरआन ने दो टूक फैसला सुना दिया है कि न्याय का दामन न छुटने पाए बल्कि अगर तुमको अपने ऊपर विश्वास न हो तो किसी दूसरी अदालत में स्वयं समस्या को पेश करो और अपने आप को अदालत के इंसफ पर झुका दो। ऐसे ही अवसर के लिए अल्लाह के रसूल ने फरमाया था कि कसम है उस ईश्वर की जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मुहम्मद की चहेती बेटी फातिमा भी चोरी करेगी तो मैं उसको भी दंड दूंगा। और कुरआन में है:

“ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो। तुम अल्लाह के लिए इंसफ पर मज़बूती के साथ कायम रहने वाले बनो इंसफ की गवाही देते हुए। देखो कहीं ऐसा न हो कि किसी जाति से तुम्हारी नफरत और दुश्मनी उनके साथ न्याय का बरताव करने से तुम्हें रोक दे। नहीं, बल्कि न्याय किया करो, क्योंकि यही धर्मपरायणता के अनुकूल बात है। अल्लाह से डरते रहो, जान रखो उसको हर काम की खबर है जो तुम करते हो।” (५:८)

आम हालात में इंसान के लिए कुछ मुश्किल नहीं है कि वह लोगों के साथ इंसफ का मामला करे, परंतु ऐसी हालत में जब कि एक ओर अपना करीबी दोस्त हो और दूसरी ओर दुश्मन जो कि न्याय का अधिकारी है, यह समय इंसान के लिए बड़ी आजमाईश का होता है। देखा गया है कि ऐसे मौके पर लोगों के कदम डगमगा जाते हैं, दुश्मन से बदला लेने के लिए उनकी ख्वाहिश भड़क उठती है। उसमें उनको एक प्रकार का मीठा आनन्द मिलता है। अंत में कलम अपना फैसला लिख देती है और इतिहास एक और कलंक का टीका अपने माथे पर जड़

लेता है। परंतु इस्लाम ऐसी हालत में भी इंसाफ को अपनाने का उपदेश देता और इतिहास को अनगिनत कलंको से बचाकर एक ऐसा आदर्श देता है कि जिस पर इतिहासकार गर्व करने लगता है। अगर आप इस्लामी इतिहास पर एक उचटती हुई नज़र भी डाल लें तो आपका सिर गर्व से ऊँचा उठ जाएगा। कुरआन कहता है:

“जब तुम बात कहो तो ऐसी कहो जो इंसाफ की हो, चाहे मामला अपने नातेदारों ही का क्यों न हो।” (६:१५२)

“अगर तुमको किसी से बदलो भी लेना हो तो उतना ही लो जितना तुम्हें कष्ट पहुँचाया गया हो। और अगर सब्र कर लो तो यह सब्र करने वालों के लिए ज्यादा अच्छा है।” (१६:१२६)

“ऐ मुहम्मद! तुम लोगों से कह दो कि मैं ईमान लाया हर उस किताब पर जिसको ईश्वर ने नाज़िल किया और मुझे यह आदेश दिया गया कि मैं तुम्हारे बीच इंसाफ करूँ।” (४२:१५)

इस आयत में मुहम्मद को रसूल बनाकर भेजने का एक मकसद यह बताया गया कि लोगों के साथ न्याय का बरताव किया करें अर्थात् अगर उन्होंने न्याय का बरताव नहीं किया तो गोया उनके भेजने का एक मकसद जो न्याय करना है खत्म हो गया। दूसरे स्थान पर कुरआन और भी खुले तौर से आदेश देता है:

“अगर तुम लोगों के बीच फैसला करो तो इंसाफ के साथ फैसला करो, निस्संदेह ईश्वर इंसाफ करने वालों को पसंद करता है।” (५:४२)

मानव समाज की कामयाबी के लिए यह है कुरआन का न्याय और सिद्धांत। इसको त्याग देने के कारण आज मानवता सिसक रही है, क्योंकि इंसाफ के दरवाज़े निर्धनों तथा निर्बलों के लिए बन्द हो चुके हैं, अब जब तक उनको फिर से नहीं खोला जाएगा उस समय तक समाज को सिसकना पड़ेगा। हो सकता है कि एक दिन यह सिसकी भी बन्द हो जाएं और मानवता सदा के लिए दम तोड़ दे।

कुरआन और राजनीतिक व्यवस्था

वास्तविक शासक

कुरआन के दृष्टिकोण से यह सारा ब्रह्माण्ड जिस सृष्टिकर्ता ने रचा है वही इसका संचालक भी है। जिसको चाहता है बादशाह बना देता है और जिससे चाहता है बादशाही छीन लेता है। उसके विचारों पर कोई सत्ता प्रभाव नहीं डाल सकता। कुरआन में है:

“कहो! हे प्रभु, राज सत्ता के स्वामी! तू जिसे चाहे राजपाट दे दे और जिस से चाहे छिन ले, जिसे चाहे इज्जत दे और जिसे चाहे बेइज्जत कर दे। तेरे ही हाथ में सारी भलाई है बेशक तू प्रत्येक चीज पर सत्ता रखता है।” (३ : २६)

“यह पृथ्वी अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है।” (७ : १२८)

यह है कुरआन की क्रेन्द्रीय विचारधारा। अब आईए राजनीति के एक-एक विषय पर कुरआन का अध्ययन करें।

यह बात तो अच्छी तरह साफ हो चुकी है कि ब्रह्माण्ड का रचयिता हमारा पालनकर्ता है। जिसने अपनी सत्ता से यहाँ के कण-कण को पैदा किया। सारी दुनिया को बेहतरीन प्रबंध में जकड़ दिया, उसके इस प्रबंध से यहाँ का एक कण भी बाहर नहीं जा सकता। ये सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, धरती और आकाश तथा दूसरी चीज़ें जो अपने-अपने कामों में लगे हुए हैं, एक क्षण के लिए भी ईश्वरीय बंधन से अलग नहीं हो सकते, यहाँ तक कि हमारे शरीर का कोई अंग अपने कर्तव्य को छोड़कर दूसरा कार्य नहीं कर सकता। हमारा पाँव चलने के लिए बना है उससे कभी सोच-विचार का काम नहीं लिया जा सकता, हाथ काम करने के लिए बना है, उससे चबाने का काम नहीं लिया जा सकता, कान सुनने के लिए बना है उससे कभी देखने का काम नहीं लिया जा सकता। इसी प्रकार दूसरे अंग हैं। लेकिन ईश्वर ने

अपनी मेहरबानी से हम को कुछ स्वतंत्रता दी है और इसी स्वतंत्रता में हमारी परीक्षा भी है। अब देखना यह है कि इस स्वतंत्रता का उपयोग हम सही तरह से कर पाते हैं या नहीं। वह स्वतंत्रता क्या है तो सुन लीजिए, वह है सोचने विचारने की स्वतंत्रता, अपने जीवन के लिए सत्य या असत्य मार्ग अपनाने की स्वतंत्रता, व्याभिचार तथा अत्याचार करने या उससे बचने की स्वतंत्रता। कुरआन कहता है:

“हमने इंसान को मिले जुले नुत्फे (वीर्य) से पैदा किया, ताकि उसकी परीक्षा लें, अतः हम ने उसको सुनने और देखने वाला बनाया, हम ने उसको मार्ग दिखा दिया, अब चाहे शुक्रगुजार हो या नाशुक्रा। हम ने नाफरमानों के लिए जंजीरें, बेड़ियाँ और दहकती हुई आग तैयार कर रखी है।” (७६: २-४)

जब हम को मालूम हो गया कि हम उसके बंधन से मुक्त नहीं हो सकते तो फिर जरूरी है कि हम उसी के संविधान को अपनाएं, उसके बताए हुए मार्ग पर चलें क्योंकि जिस सत्ता ने हमें पैदा किया वह सत्ता ही हमारे लिए सही संविधान और दस्तूर की रचना भी कर सकती है। कुरआन में है:

“याद रखो उसी ने पैदा किया है और उसी का हुक्म भी चलता है।” (७: ५४)

“कहते हैं क्या हमारे लिए भी आदेश देने का कुछ अधिकार है? कह दो आदेश सारा का सारा अल्लाह ही का है।” (३: १५४)

“आदेश अल्लाह के सिवा किसी का नहीं, उसका आदेश है कि तुम उसके अलावा किसी की रहनुमाई मत स्वीकार करो। यही सत्य मार्ग है, लेकिन क्या किया जाए कि बहुत सारे लोग इस बात को नहीं जानते।” (१२: ४०)

यह और इसी प्रकार की दूसरी बहुत सारी आयतें यही बात बताती हैं कि संविधान तो उसी का होना चाहिए जिसने हम को पैदा किया, क्योंकि वही हमारी जरूरतों को अच्छी तरह जान सकता है। क्योंकि उसको गैब (परोक्ष) का इल्म है, बल्कि उसके लिए गैब कोई चीज ही नहीं है। कुरआन में है:

“हो सकता है कि तुम एक चीज़ को नापसंद करो और वह तुम्हारे लिए भली हो और हो सकता है कि एक चीज़ को तुम पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।” (२:२१६)

आप को यहाँ यह बात खटकेगी कि एक ओर तो ईश्वर ने हमें स्वतंत्रता दी, दूसरी ओर यह पाबन्दी लगाई जो स्वतंत्रता के विरुद्ध है। इसका उत्तर यह है कि स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं है कि मनुष्य सारे कानूनों को तोड़कर अपनी मनमानी करने लगे। अगर आज़ादी का यही मतलब हो तो फिर मुझे कहने दीजिए कि यह आज़ादी नहीं बल्कि हैवानियत है, जो हर तरह की पाबंदियों से मुक्त है। यह भी कहने दीजिए कि अगर यही आज़ादी है तो फिर आज संसार का कोई देश आज़ाद नहीं है बल्कि आज़ादी का सही अर्थ यह है कि इंसान अपने जैसे लोगों की गुलामी से आज़ाद हो जाए। अपने ऊपर अपने ही जैसे लोगों के बनाए हुए संविधान को ध्वस्त कर के अपने प्रभु और पालनकर्ता की दासता स्वीकार कर ले। यही वह सही आज़ादी है जिसकी ओर कुरआन बुलाता है।

एक बात और जान लेनी चाहिए कि कुरआन का कानून दुनिया के अपने बनाए हुए कानूनों से बहुत भिन्न है। दुनिया के कानून इंसान अपने दिमाग से बनाता है इसलिए उसको उस पर पूरा-पूरा विश्वास नहीं होता, बल्कि समय के बदलने से उसका कानून भी बदलता रहता है। इसके विपरीत कुरआन का कानून हमेशा-हमेशा के लिए आया है और जिस में किसी प्रकार का भी फेर बदल नहीं हो सकता, कुरआन में है:

“पालन करो उस (कानून) का जो तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से आया है, उसके अलावा दूसरे संरक्षक मित्रों की रहनुमाई कुबूल मत करो।” (७:३)

“अगर तूने ज्ञान आने के बाद भी उन अज्ञानियों की ख्वाहिशों की पैरवी की तो न अल्लाह के मुकाबले में तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र होगा और न बचाने वाला।” (१३:३७)

सर्वोच्च कानून

अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म कुरआन के दृष्टिकोण से सुप्रीम है। इसलिए कोई मुसलमान इस कानून की मुखालफत करने का अधिकार नहीं रखता बल्कि उसका विरोध करने वाला ईमान से बाहर होता है, कुरआन का फरमान है:

“किसी ईमान वाले नर एवं नारी को यह अधिकार नहीं है कि जब अल्लाह और उसके रसूल का किसी मामले में फैसला हो तो उसके खिलाफ रवैया अपनाए और जो ऐसा करे वह खुली गुमराही में पड़ गया।” (३३:३६)

आचार संहिता

१. जीवन सुरक्षा:

“किसी जान को कत्ल न करो जिसके कत्ल को अल्लाह ने हराम कर दिया है सिवाए हक के।” (१७:३३)

२. धन सुरक्षा:

“अपने धन को आपस में अवैध रूप में मत खाओ।” (२:१८८)

३. मान सुरक्षा:

“कोई गिरोह दूसरे गिरोह का मजाक न उड़ाए... और एक-दूसरे का अपमान न करे... और न ही बुरे नामों से याद करे, न कोई किसी की पीठ बुराई बयान करे...” (४९:११, १२)

४. घरेलू जीवन सुरक्षा:

“अपने घरों के सिवा दूसरे के घरों में बिना आज्ञा दाखिल न हो।” (२४:२७)

५. बद जुबानी पसंद नहीं:

“अल्लाह बद जुबानी को पसंद नहीं करता सिवाए इसके कि किसी पर अत्याचार हुआ हो।” (४:१४८)

६. भलाई के लिए संघ की रचना:

“तुम में एक ऐसा संघ होना चाहिए जो भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके, ऐसे ही लोग सफलता पा सकते हैं।” (३:१०४)

७: धर्म की स्वतंत्रता:

“धर्म के विषय में किसी पर कोई ज़बरदस्ती नहीं।” (२: २५६)

“क्या तू लोगों को मजबूर करेगा कि मोमिन हो जाएं। (ऐसा मत करना)” (१०: ९९)

८: किसी दूसरे धर्म वालों के पूज्य को गाली न देना:

“अल्लाह को छोड़ कर जिनको ये लोग पुकारते हैं उनको गालियाँ मत दो।” (६: १०८)

९: कोई व्यक्ति दूसरे के कर्म पर पकड़ा नहीं जाएगा:

“हर व्यक्ति जो कमाई करता है उसका वह खुद जवाबदेह है, कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।” (६: १६४)

१०: फैसला करने से पहले अच्छी तरह जाँच पड़ताल की जाए:

“अगर कोई दुराचारी तुम्हारे पास कोई खबर लाए तो अच्छी तरह उसकी जाँच पड़ताल कर लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी कौम को बिना परखे हानि पहुँचा बैठो और फिर तुम्हें पछतावा हो।” (४९: ६)

“किसी ऐसी बात के पीछे न लग जाओ जिसका तुम्हें ज्ञान न है।” (१७: ३६)

११: राज्य की नजर में सब बराबर है:

“फिर औन ने धरती में सिर उठाया, लोगों को भिन्न-भिन्न वर्गों में बाँट दिया, एक वर्ग को दुर्बल बना दिया वह उनके बेटों को कत्ल कर देता था और उनकी औरतों को जीवित रहने देता। सही तो यह है कि वह बिगाड़ फैलाने वाला था।” (२८: ४)

१२: मजबूर और लाचारों का हक:

“और उनके धन में माँगने वालों का और उनका हक है जो पाने से रह गए हों।” (५१: १९)

कुरआन और नैतिक मूल्य

संसार की सभी धार्मिक पुस्तकों में शिष्टाचार की शिक्षा दी गई है, इसलिए यह बात कुरआन के लिए ही विशेष नहीं है। मगर जब हम दूसरे धार्मिक विद्वानों की रचनाओं का अध्ययन करते हैं या उनके धार्मिक ग्रन्थों को देखते हैं तो पता चलता है कि उनमें बहुत सारी बातों की कमी है। और यह कोई बुरी बात नहीं है, क्योंकि जो भी धर्म या धार्मिक पुरुष इस संसार में पधारे वे एक विशेष समाज और समयकाल से प्रतिबंधित थे, उनकी शिक्षा भी जीवन के कुछ भागों के लिए विशेष थी। उन्होंने अपने विचारों को संक्षिप्त और समयानुकूल रखा, इसलिए उनकी शिक्षा वहीं तक सीमित थीं जहाँ तक समाज उसका प्रतिपालन कर सकता था। हज़रत मूसा, ईसा तथा दूसरे ईशदूतों की शिक्षाओं का गहरा अध्ययन करें तो आप को आसानी से महसूस हो जाएगा कि उन्होंने अपने समयकाल के अनुकूल शिष्टाचार की शिक्षाएं दीं जो अपने समय के बेहतरीन उपदेश थे।

परंतु कुरआन ईश्वर की आखिरी किताब है, जिस में न किसी समय की विशेषता है न किसी देश की। यह प्रलय तक संसार के नेतृत्व के लिए आई है, इसलिए यह जरूरी था कि इसमें शिष्टाचार की शिक्षाओं की भी पूर्ण रूप से व्याख्या कर दी जाए। अब आईए हम संक्षेप में इसका अध्ययन करें। मैं यह नहीं कर सकता कि इस में समयकाल का कोई अंश नहीं है। परंतु इसके लिए जो भाषा शैली अपनाई गई है वह सामाजिक बंधनों से मुक्त है। यही वह विशेषता है जिसने चौदह सौ वर्ष पूर्व आने वाले कुरआन को ऐसा रूप दे दिया है कि मालूम होता है जैसे अभी-अभी उतर रहा है।

मुक्ति मार्ग

कुरआन में है:

“हे लोगों ! जो ईश्वर पर विश्वास रखते हो, क्या मैं तुम्हें ऐसा व्यापार बताऊँ जो

तुम को एक दुख भरी यातना से सुरक्षित रखे। यह व्यापार यह है कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और ईश मार्ग में अपने तन, मन और धन से जिहाद करो, यही तुम्हारे लिए उत्तम है, अगर जानते हो। इससे यह लाभ होगा कि वह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और तुम को ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और बेहतरीन घरों में जो सदा रहने वाले बागों में होंगे, यही सबसे बड़ी सफलता है।” (६१:१०-१२)

“लोगों में कुछ ऐसे हैं जिन्होंने ईश्वर की खुशी के लिए अपने आप को बेच (त्याग) दिया है। वास्तव में ईश्वर अपने दासों पर बड़ा दयावान है।” (२:२०७)

“जब उन लोगों ने उसको भुला दिया जिसका उपदेश दिया गया था तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और अत्याचारियों को हमने उसकी नाफरमानी की वजह से सख्त सज़ा दी।” (७:१६५)

“और हमने बचा लिया उन लोगों को जो ईमान लाए और ईश्वर की पकड़ से डरते रहे।” (२७:५३)

“और अल्लाह उन लोगों को उनकी सफलता के साथ बचा लेगा जो डरते रहे उसकी पकड़ से, उनको न तो कोई तकलीफ होगी और न ही वे गमगीन होंगे।” (३९:६१)

कुरआन ने बार-बार इस बात का एलान किया है कि मुक्ति और सफलता वही लोग प्राप्त कर सकते हैं जो अपने पालनकर्ता के आदेशों की खिलाफवर्जी नहीं करते और हर समय उसकी याद में लीन रहते हैं, एक क्षण के लिए भी उससे गाफिल नहीं होते। बल्कि उसकी पकड़ से काँपते रहते हैं।

भलाई का मार्ग

कुरआन मजीद कहता है:

“जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने उत्तम कार्य किए वही लोग सर्वश्रेष्ठ हैं उनका फल उनके पालनकर्ता के पास सदाबहार बागों के रूप में है, जिनके नीचे

नहरें बहती होंगी वे सदैव उसमें रहेंगे। ईश्वर उनसे प्रसन्न हुआ और वे ईश्वर से प्रसन्न हुए। यह उसके लिए है जो अपने रब से डरे।” (९८:७, ८)

“जिसने भला काम किया, उसका लाभ उसी को पहुँचेगा और जिसने बुरे काम किए उसकी हानि उसी के लिए है। तेरा पालनकर्ता दासों पर बिल्कुल अत्याचार नहीं करता।” (४१:४६)

“तुम लोगों को भले काम करने का हुक्म देते हो और स्वयं को भुला देते हो, जब कि तुम पुस्तक (ईश्वरीय ग्रंथ) का पाठ करते हो। क्या अक्ल से काम नहीं लेते।” (२:४४)

“बुराई और भलाई दोनों बराबर हो ही नहीं सकते इसलिए बुराई को भलाई से दूर करो।” (४१:३४)

“वे जो भलाई करेंगे उसकी नाकद्री नहीं की जाएगी। ईश्वर डरने वालों को भली-भाँति जानता है।” (३:११५)

“जो भले कार्य और इसके साथ वह ईमान वाला भी हो, उसे न किसी जुल्म का भय होगा न हक मारे जाने का।” (२०:११२)

इन आयतों में भले काम करने पर उभारा गया है। वे भले और उत्तम कार्य क्या है? इसका संक्षिप्त वर्णन आएगा, यहाँ इतना जान लेना काफी है कि ईश्वर का आज्ञापालन सबसे उच्च कार्य है। उसी के साथ-साथ उन बुराईयों से बचना भी ज़रूरी है जिन से उसने रोका है। कुरआन में है:

“ईमान वाले तो भाई-भाई हैं तो अपने दो भाईयों के बीच सुलह एवं सफाई करा दो और अल्लाह का डर रखो ताकि तुम पर दया की जाए।” (४९:१०)

“हे लोगों! हमने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम को जातियों और वंशों में बाँट दिया ताकि तुम पहचान सको। लेकिन तुम्हारे

पालनकर्ता के यहाँ वही अधिक सम्मान योग्य है जो सबसे अधिक उससे डरने वाला है सच तो यह है कि ईश्वर सब कुछ जानता है और सारी खबर रखता है।” (४९:१३)

कुरआन बार-बार लोगों से इस बात का मुतालबा करता है कि आपस में प्रेम भाव का व्यवहार करें, छल-कपट, लड़ाई-झगड़े से बचें, क्योंकि यह उनके पैदा किए जाने के मकसद के खिलाफ है। कुरआन की नज़र में किसी जात पात से कोई भिन्नता नहीं है, सब एक ही माँ बाप की संतान हैं, अगर किसी को किसी पर कोई उच्चता प्राप्त है तो यह उसके अच्छे कार्य के कारण है, न कि उच्च परिवार में पैदा होने के कारण। भिन्न-भिन्न जातियों को भिन्न-भिन्न विशेषताओं के साथ ईश्वर ही ने पैदा किया है, मगर उससे उनकी उच्चता या नीचता का कोई पारस्परिक सम्बंध नहीं है, बल्कि यह तो केवल एक-दूसरे को जानने पहचानने का साधन है।

फिर कुरआन लोगों को इस बात पर होशियार करता है कि देखो प्रेमभाव को मज़बूती से पकड़ लो। एक दुसरे की जान लेने की फिक्र मत करो, तुम से पहले बनी इस्त्राईल को भी खबरदार कर दिया गया था कि:

“जो किसी एक जीव की भी अकारण हत्या करेगा, या पृथ्वी में उपद्रव मचाएगा तो उसका पाप उस व्यक्ति की भाँति होगा, जिसने सारी मानवता की हत्या की। और जिसने एक जीव को जीवित रखा, उसको उस व्यक्ति का पुण्य मिलेगा जिसने सारी मानवता की रक्षा की। सत्य तो यह है कि हमारे संदेशवाहक उनके पास खुली दलीलें लेकर आए परंतु उनमें से अधिकार लोग इसके बाद भी पृथ्वी पर उपद्रव करते हैं।” (५:३२)

इसलिए उन लोगों को होशियार हो जाना चाहिए जो आज भी मानवता के सुख-चैन की केवल बात करते रहते हैं, क्योंकि उसकी पकड़ बड़ी ही दर्दनाक है।

क्षमा भाव

क्षमा मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो उसकी सारी बुराईयों को ढाँक लेता है, परंतु इससे शोभायमान बहुत कम लोग हो पाते हैं, क्योंकि यह विशेषता मनुष्य के हृदय में जन्म लेती है, जो विचार धाराओं का संगम है और मानव-शरीर की पूरी रूप रेखा उसी पर आश्रित है। ऐसी दशा में किसी का क्षमाशील होना, उसके हृदय की वह भावना है, उसके हृदय की वह भावना है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। फिर क्षमा का स्रोत शक्ति के समुद्र में फटता है, जिसकी अथाह गहराईयों में डूबने से बहुत कम लोग बचते हैं। बल्कि यँ समझिए कि जिस समुद्र में क्षमा का स्रोत नहीं होता है वह स्वयं भी डूब जाता है और मानवता कको भी डुबा देता है। क्योंकि शक्ति का घमण्ड एक काला नाग है कि जिस पर सवार हुआ, उसको नाग से भी भयंकार बना दिया।

इसी कारण कुरआन ने इंसान को इस आभूषण से अपने आपको शोभायमान करने की बार-बार प्रेरणा दी है। लीजिए अब आप भी इस आभूषण को धारण कीजिए।

“(हे नबी!) तुम उनसे क्षमा का बरताव करो और उनके लिए मुक्ति की दुआ करते रहो।” (३:१५९)

“(हे नबी!) नमी और क्षमा से काम लो, अच्छी बातों का उपदेश करते रहो और मूर्खों के मुँह मत लगे।” (७:१९९)

कुरआन ने नबी के द्वारा पूरी मानवता को क्षमा का उपदेश दिया है। किसी को शंका न हो कि नबी क्षमा के आभूषण से वंचित थे, इसलिए उनको इसका आदेश दिया गया है। नहीं-नहीं, बल्कि वह नबी तो क्षमा करने में सबसे अधिक आगे थे। क्या आपने इतिहास में नहीं पढ़ा कि जिस मक्के वालों ने आप को तेरह साल तक सताया, यहाँ तक कि अपनी मातृभूमि त्याग करने पर भी मजबूर कर दिया, परंतु जब आप ने उस पर विजय प्राप्त की तो सब को क्षमा कर दिया। क्या उस बहू की

कहानी याद नहीं है जो नंगी तलवार लेकर आप के सिर के पास खड़ा हो गया, परंतु उसके हाथ काँपने के कारण तलवार गिर पड़ी और आप जाग उठे। तलवार आप के काबू में थी, आप चाहते तो उसे मौत के घाट उतार देते लेकिन आपने उसको क्षमा कर दिया। उसी समय वह आप के कदमों पर गिर पड़ा। इसी प्रकार आप का जीवन क्षमा जैसे आभूषण से परिपूर्ण है। बल्कि इस का मतलब यह है कि नबी को संकेत कर के कुरआन पूरी मानवता को इस बड़ी खूबी की ओर बुला रहा है। कुरआन में है:

“एक अच्छी बात और क्षमा का बरताव उस दान-पुण्य से उत्तम है, जिस के साथ दुख की बात हो। (अर्थात् दान देकर उस पर अपना एहसान जताना।)” (२: २६३)

“जो लोग कुशादगी और तंगी हर हालत में (ईश मार्ग में) खर्च करते हैं और गुस्से को पी डालते हैं तथा लोगों के साथ क्षमा का व्यवहार करते हैं। अल्लाह भलाई करने वालों को पसंद करता है।” (३: १३४)

“बुराई का बदला उसी के समान बुराई है। लेकिन जिसने क्षमा कर दिया और अपने आप को संवार लिया तो उसका फल अल्लाह के पास है। वह अत्याचार करने वालों को पसंद नहीं करता।” (४२: ४०)

शान्ति मार्ग

इस सम्बंध में कुरआन की ये आयतें देखिए:

“उनके लिए उनके पालनकर्ता के पास शान्ति गृह है। और वह उनका संरक्षक है। यह उनके कर्मों का फल है।” (६: १२७)

“तुम्हारे ऊपर शक्ति की वर्षा हो, इसलिए कि तुम ने सब्र किया, क्या ही उत्तम ठिकाना है।” (१३: २४)

““अगर वे सन्धि और सलामतों की ओर झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और ईश्वर पर ही भरोसा करो, क्योंकि वह सब कुछ सुनने और जानने

वाला है।”(८:६१)

“ईश्वर के वास्तविक दास तो वे हैं जो पृथ्वी पर बड़ी नम्रता से चलते हैं और जब उनसे कोई मूर्ख उलझ पड़ता है तो सलाम करके आगे बढ़ जाते हैं।”(२५:६३)

“उन लोगों को जो अपने पालनकर्ता से डरते रहते हैं संघ बना कर स्वर्ग की ओर ले जाया जाएगा। यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँच जाएंगे तो उनका संरक्षक उन पर सलामती भेजेगा, (उनकी आवभगत करते हुए कहेगा कि) आप बहुत अच्छे रहे, पधारिए अब आप को सदैव इस में रहना है।”(३९:७३)

“और अगर ईश्वर चाहता तो आपको तुम पर विजय दे देता, बस फिर तो वे तुम को कत्ल कर डालते और अगर वे युद्ध करने से रुक जाएं बल्कि तुम से सलामती की इच्छा करें तो फिर तुम्हारे लिए उचित नहीं कि तुम उनसे युद्ध करो, क्योंकि फिर ईश्वर ने उन के विरुद्ध तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं रखा है।”(४:९०)

इन आयात में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने का आदेश दिया गया है। कुछ लोग धोखे में यह कह देते हैं कि कुरआन तो युद्ध करने पर उभारता है यह बात अपने स्थान पर सत्य है परंतु आपको जानना चाहिए कि कुरआन ने किन हालात में युद्ध करने पर उभारा है। आप ही बताईए कि जब शत्रु आप के देश पर हमला कर दे तो क्या आप बैठ कर तमाशा देखेंगे या बहादुरी के साथ उसके छक्के छुड़ा देंगे। सत्य तो यह है कि कुरआन जिस शान्ति मार्ग की ओर संकेत करता है अगर आज संसार उन मार्गों पर चले तो बहुत जल्द मनुष्य को शांति मिल जाएगी।

प्रेम भावना

कुरआन कहता है:

“और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम ही में से तुम्हारे जोड़े

बनाए ताकि तुम उनके पास आराम और चैन पाओ और तुम्हारे बीच उसने प्रेम भावना तथा दया भावना को उत्पन्न किया इन बातों में उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो विचार करते हैं।” ((३०:२१)

इस आयत में एक ऐसी बात का वर्णन किया गया है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन सामना करना पड़ता है, और वह है अपने जीवन साथी से प्रेम का व्यवहार जो आपकी संतान की माँ और तत्पश्चात कुटुम्ब की महारानी कहलाती है। मैं पूछता हूँ कि आखिर वह अजनबी लड़की जिससे अब तक आप का कोई सम्बंध नहीं है अगर कल वही आप की जीवन साथी बन कर आप के घर आती है तो उसमें और आप में क्यों इतना दृढ़ सम्पर्क हो जाता है। दो हृदय एक ही शरीर में क्यों धड़कने लगते हैं? कुरआन इसको ईश्वर की देन बताता है और यह पालनकर्ता का हम पर बड़ा उपकार है कि उसने हमको पैदा कर के कीड़े मकोड़ों की भाँति नही छोड़ दिया बल्कि हमारे लिए एक कुटुम्ब की रचना कर दी जिसका प्रत्येक प्राणी दूसरे के लिए दयालु बन गया। कुरआन कहता है:

“ऐ लोगों! उस पालनकर्ता से डरो जिसने तुमको एक जान (अर्थात् आदम) से पैदा किया, फिर उससे जोड़ा बनाया, फिर उन दोनों के द्वारा पूरी मानवता की रचना की, जिससे औरत पुरुष दोनों हैं। इसलिए डरो उस ईश्वर से जिसके विषय में और आपस के मेल जोल के विषय में पूछे जाओगे। वास्तव में ईश्वर तुम्हारी भली-भाँति निगरानी कर रहा है।” ((४:१)

इस आयत में इस बात की शिक्षा मिलती है कि ईश्वर ने मनुष्य के हृदय में दूसरों के लिए प्रेम और मुहब्बद पैदा की है। इसलिए वे लोग बड़े घाटे में हैं जो आपस में फूट डालने का प्रयत्न करते हैं। कुरआन में है:

“और जब हम ने बनी इस्राईल से कहा कि ईश्वर के अलावा किसी और की उपासना मत करो और अपने माता-पिता, रिश्तेदार, अपाहिज तथा निर्धनों के साथ अच्छा व्यवहार और लोगों से अच्छी बात करो।” ((२:८२)

“और अपने चेहरे को लोगों की ओर से मत फेर, न पृथ्वी पर अकड़ कर चल, क्योंकि ईश्वर ऐसे घमण्डियों से प्रसन्न नहीं होता।” (३१:१८)

“हे ईमान वालों! जब तुम्हें कहा जाए कि बैठक में दूसरों के लिए स्थान पैदा कर दो तो कर दिया करो, ईश्वर तुम्हारे लिए स्थान पैदा कर देगा और जब कहा जाए कि बैठक से उठ जाओ तो उठ जाया करो।” (५८:११)

इन आयतों से यह बताना अभिप्रेत है कि ईश्वर ने मानवता को दयालुता के ऐसे बंधन में बाँध रखा है कि उसकी सफलता इसी में है। अब समाज बड़ा ही बदकिस्मत होगा जो ईश्वर की उस दयालुता को ठुकरा कर क्रूरता का व्यवहार करता है। इसीलिए कुरआन ने हजरत मुहम्मद ﷺ की सबसे बड़ी विशेषता यह बताई है कि बड़े ही दयावान हैं और उनको मानवता के लिए रहमत बना कर भेजा गया है।

SUBAI JAMIAT AHLE HADEES MUMBAI

दुसरा भाग

कुरआन की शीतल छाया

विश्वास की शीतल छाया में

महा मानव हज़रत ﷺ मुहम्मद का देहांत होते ही इस्लामी दुनिया में एक हलचल मच गई। बहुत सारे कबीले इस्लाम छोड़ बैठे। बहुतों का ईमान खतरे में पड़ गया। उन भोले भाले मुसलमानों की समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि इतना महान पुरुष जिसने केवल तेईस वर्ष में संसार की काया पलट दी, चोरों, डाकुओं और लुटेरों को ईश भक्त बना दिया, चरवाहों और किसानों को जमीन का बादशाह बना दिया, घमंडियों के घमंड तोड़ दिए, अत्याचार को न्याय और व्यभिचार करने वालों को आचार का आदर्श बना दिया, भला वह व्यक्ति भी कभी इन दुनिया से सिधार सकता है। वह तो संसार की मर्यादा और आकाश का बादशाह है, यहाँ तक कि हज़रत उमर जिनके बारे में स्वयं महामानव ने फ़रमाया था कि उमर जिस रास्ते से गुज़रते हैं, शैतान रास्ता बदल देता है, वह भी किसी प्रकार यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि हज़रत मुहम्मद ﷺ का देहांत हो गया है, क्योंकि उन्होंने अपनी आँखों से एक ऐसा चमत्कार देखा जैसा न तो अब तक किसी ने सुना था और न देखा था। इसलिए अपनी चमकती हुई तलवार लेकर मैदान में निकल आए और लोगों को संबोधित करके फरमाया अगर किसी ने यह कहा कि मुहम्मद ﷺ का देहान्त हो गया तो उसके टुकड़े कर दूँगा।

ऐसे विकट और जानलेवा समय में एक व्यक्ति उठता है, जिसको न कबिलों के इस्लाम से फिर जाने का भय है और न ही उमर की चमकती हुई तलवार से दो टुकड़े हो जाने का डर है बल्कि वह जिस ईश्वर पर ईमान लाया है, वह सर्वव्यापी है और हर क्षण उसकी सहायता के लिए तत्पर है। इसलिए इस भयंकर हिलोरे मारते हुए समुद्र और तेज व तुन्द हवाओं के सामने खड़े होकर यह एलान करता है:

“हे लोगों! जो मुहम्मद ﷺ की पूजा करते थे वे सुन लें! आज मुहम्मद ﷺ का देहान्त हो चुका है और जो ईश्वर की उपासन करते थे तो वह जीवित हैं उसको मृत्यु नहीं आती।” यह एलान करने के बाद वह कुरआन की यह आयत पढ़ता है: “मुहम्मद एक रसूल के अलावा कुछ नहीं हैं। उन जैसे बहुतेरे रसूल गुजर चुके हैं, तो क्या उनके देहान्त हो जाने या कत्ल हो जाने से तुम सत्य धर्म छोड़ बैठोगे। याद रखो जो भी सत्य धर्म से विमुख होगा वह ईश्वर का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। अल्लाह भलाई करने वालों को अच्छा बदला देने वाला है।” (३:१४४)

क्या आप जानते हैं कि यह एलान करने वाला कौन था? वह अबू बक्र रज़ीयल्लाहु अन्हु थे, जिनके एलान को सुनते ही उमर की तलवार म्यान में चली गई। उनका कहना था कि इस आयत को मैंने कितनी बार पढ़ा था मगर आज ऐसा महसूस हुआ जैसे यह अभी-अभी नाजिल हुई है।

यह था अबू बक्र रज़ीयल्लाहु अन्हु का ईमान। ऐसा ईमान जिसको पृथ्वी और आकाश ने फिर नहीं देखा।

सत्य की खोज

मैं एक ईरानी था। मेरे पिता मंदिर के संचालक थे जिनकी आज्ञा से मैं मंदिर में आग जलाया करता था और यह यत्न करता था कि कभी बुझने न पाए, जिसके कारण मेरे पिता मुझे बहुत प्रेम करते थे। यहाँ तक कि मुझे घर से नहीं निकलने देते थे। एक बार मैं किसी काम के लिए पिता ही की आज्ञा से घर से निकला, थोड़ी दूर चलने के बाद मुझे एक गिर्जाघर से घंटा बजने की आवाज़ आई। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह कैसी आवाज़ है और आज तक मुझे कभी इसके सुनने का अवसर नहीं मिला मैं उस गिर्जाघर में दाखिल हो गया और उनकी पूजा-पाठ को ध्यान से देखने लगा, शाम होने तक उनके यहाँ ठहरा रहा फिर घर आ गया। मेरे पिता ने देर से घर आने पर पूछा कि तुम कहाँ थे ? मैंने कहा कि मैं गिर्जाघर चला गया था वहाँ ईसाईयों के पूजा-पाठ को देखता रहा जो मुझे बहुत पसंद आया, यह सुनना था कि मेरे पिता ने मुझे लोहे की जंजीर से बाँध दिया और कहने लगे तुम्हारा धर्म उनसे उत्तम है। परंतु मुझे तो उनका धर्म उत्तम लगने लगा। इसलिए मैंने ईसाई पादरी को संदेश भेजा कि मैं ईसाई धर्म के विषय में अधिक जानना चाहता हूँ। उसने उत्तर दिया कि हमारा महान गिर्जाघर शाम में है, वहाँ तुमको ईसाई धर्म की अधिक शिक्षा मिल सकती है। मैंने उनको पैगाम भेजा, जब कोई गिरोह शाम से आए तो मुझे सूचित करना मैं उनके साथ शाम जाऊँगा। वह दिन आ गया जब मैं अपने पैरों की बेड़ियाँ काट कर शाम के लिए रवाना हो गया। वहाँ पहुँच कर मैं महान पुरोहित की सेवा में उपस्थित हुआ और उसकी सेवा करने लगा वह मुझ से बड़ा प्रसन्न हुआ परंतु मैंने देखा कि वह एक बहुत ही बुरा आदमी है। लोगों से दान लेता तो है परंतु निर्धनों पर खर्च नहीं करता बल्कि उसको छुपा कर रखे हुए था। जब उसका देहांत हो गया और लोग उसको दफन करने के लिए आए तो मैंने उनको उसकी वास्तविकता बता दी। लोगों ने प्रमाण माँगा तो मैं उनको एक कोठरी में ले गया जहाँ उसने सोने और चाँदी के ढेर लगा रखे थे। यह देक कर लोगों को बड़ा क्रोध आया

उन्होंने उसे सूली पर लटका दिया और पत्थर मारने लगे। फिर एक दूसरा पादरी नियुक्त किया जो पहले वाले से अधिक उत्तम था। संसार से बैरागी और आखिरत का इच्छुक था। मैं उसकी सेवा में लग गया जब उसकी मृत्यु निकट आ गई तो मैंने उससे कहा: हे पादरी तुम जानते हो कि मैं तुम से कितना प्यार करता हूँ। अब तुम संसार से जाने वाले हो, बताओ मैं क्या करूँ और कहाँ जाऊँ। उसने कहा: ऐ पुत्र लोग बदल गए हैं, आज मुझे संसार में कोई ऐसा पादरी मालूम नहीं होता है जिस प्रकार मैं था। हाँ शहर “मुसिल” (इराक़) में एक पादरी है तुम उसके पास चले जाओ उसको तुम मेरी ही तरह पाओगे।

उसकी मृत्यु के पश्चात मैं “मुसिल” चला गया और वहाँ के पादरी को बता दिया कि मुझे उसके पास किसने भेजा है। वह बड़ा प्रसन्न हुआ और अपनी सेवा में रख लिया। उसको भी मैंने पहले वाले की तरह पाया। जो बड़ा सदाचारी था, जब उसकी मृत्यु निकट आई तो मैंने उससे कहा: हे आदरणीय पादरी! तुम मृत्यु के निकट हो, अब बताओ मैं कहाँ जाऊँ? उसने कहा कि हे पुत्र! मुझे तो कोई व्यक्ति इस प्रकार का नहीं मिल रहा है जिस प्रकार हम थे। परंतु तुम “नुसीबीन”^① चले जाओ। पादरी के मृत्यु के पश्चात मैं नुसीबीन चला गया और वहाँ के पादरी को मैंने पहले के पादरी की बातें बताई तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ और अपने पास रहने की अनुमति दे दी। उसको भी मैंने पहले दो पादरियों की तरह ईशभक्त पाया। परंतु जब वह भी मृत्यु के निकट पहुँच गया तो मैंने उससे कहा: हे पादरी! अब तुम बताओ मैं किसके पास जाऊँ। उसने कहा तुम “अमोरिया”^② चले जाओ, वहाँ का पादरी ऐसे ही होगा जैसे तुमने हमें पाया है। “नुसीबीन” पादरी की मृत्यु के पश्चात मैं “अमोरिया” चला गया, वहाँ रहने लगा वहाँ मैंने व्यापार भी किया और बहुत सारी गायों का स्वामी बन गया, जब उसकी मृत्यु भी निकट आ गई तो मैंने उससे कहा: हे पादरी! तुमको

^① यह तुर्की के शहर का नाम है जो सीरिया के बार्डर पर पड़ता है इसको तुर्की में इस प्रकार लिखते हैं। (NUSAYBIN)

^② यह भी तुर्की के एक शहर है जिसको इस प्रकार लिखते हैं। (AMORION)

अपनी कहानी बता चुका हूँ, अब बताओ मैं कहा जाऊँ ? उसने कहा: “हे पुत्र इस समय इस धरती पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके पास जाने का परामर्श दूँ, लेकिन तुम मेरी यह बात ध्यान से सुनो: अब एक नबी के आने का समय आ गया है, जो “इब्राहीम” के धर्म पर होगा, जो “अरब” में पैदा होगा, फिर वह एक ऐसे स्थान की ओर हिजरत (स्वदेश त्याग) करेगा जो खजूर के वृक्षों से भरा होगा, उसके कुछ चिन्ह हैं जो यह हैं। वह भेंट की हुई वस्तुएं तो खाएगा परंतु सदका (दान) की चीजें नहीं खाएगा। उसके दोनों मोढ़ों के बीच में नबूवत की मुहर होगी। अब अगर तुम उसके देश की यात्रा कर सकते हो तो वही चले जाओ और उसको तलाश करो।” इसके बाद उसका देहांत हो गया।

पादरी के मरने के पश्चात मैं “अमोरिया” में कुछ दिन ठहरा रहा, इतने में मुझे पता चला कि कुछ अरब के व्यापारी आए हुए हैं। मैंने उनसे मुलाकात की और इच्छा प्रकट किया कि मेरे पास जो यह गायें और बकरियाँ हैं तुम ले लो और मुझे अपने साथ अरब देश ले चलो। उन्होंने स्वीकार कर लिया लेकिन जब वह “वादी कुरा” (जो शाम और मदीना के बीच है) पहुँचे तो उन्होंने एक यहूदी के हाथ मुझे बेच दिया। मैं उस यहूदी के पास रहने लगा यह स्थान खजूरों से भरा हुआ था। विचार करने लगा कहीं यह वहीं स्थान तो नहीं जहाँ मुझे जाना है। इतने में उस यहूदी के चचा के बेटे का वहाँ आना हुआ जो मदीना का रहने वाला था। उसने मुझे खरीद लिया और मुझे लेकर मदीना आ गया। मदीना देखते ही मेरे नेत्रों में प्रकाश दौड़ गया और पूरा विश्वास हो गया कि यह वही स्थान है जिसका वर्णन पादरी ने किया था। मैं इसी प्रकार गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहा था अपने मालिक के काम से बहुत कम समय मिलता था।

एक दिन क्या सुनता हूँ कि मेरे मालिक से उसके चचा के बेटे ने कहा: क्या तुम ने सुना है कि “कुबा” वाले एक व्यक्ति के पास जमा हैं जो मक्के से आया है, और कहता है मैं नबी हूँ। उसकी बातें सुन कर मुझे झुरझरी आ गई मैंने दुबारा पूछा कि तुम क्या कर रहे थे ? यह सुनना था कि मेरे मालिक ने मुझे डाँटा और कहा कि तुम

अपना काम करो इन बातों पर ध्यान मत दो।

रात्रि के अंधेरे में एक दिन मैं उस नबी के पास पहुँचा और कहा, आप और आप के साथी हिजरत कर के आए हैं? आप अवश्य मुहताज होंगे, मेरे पास जो कुछ है मैं आप को दान करता हूँ, यह कहते हुए मैंने उनके सामने कुछ खाने की वस्तुएं रख दिया। नबी ने अपने साथियों से कहा तुम लोग इसे खाओ और स्वयं आप ने अपना हाथ उठा लिया और उसमें से कुछ भी नहीं खाया। मैंने अपने मन में कहा कि चलो आज एक परीक्षा हो गई कि वह दान नहीं खाता। फिर नबी मदीना में प्रवेश कर गए तो एक दिन मैं उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और कहा मैंने देखा की आप दान नहीं खाते, इसलिए मैं आप के लिए उपहार (तोहफा) लेकर आया हूँ, तो आपने इसे स्वीकार कर लिया और स्वयं उसमें से कुछ खाया और अपने साथियों को खाने के लिए कहा, मैंने अपने मन में विचार किया कि यह दूसरी बात सच निकली।

फिर एक दिन मैं उनसे मिलने के लिए हाज़िर हुआ तो आप बकीय में किसी को दफन करने के बाद बैठे हुए थे। और आप का शरीर दो चादरों में लिपटा हुआ था। मैंने आप को सलाम किया और आप की पीठ की ओर कुछ खोजने लगा। आप ने अपनी पीठ से चादर हटा ली यह देखते ही मैं आप के ऊपर गिर कर रोने लगा और नबूवत की मुहर को बोसा देने लगा, आप ने बड़े प्यार से मुझे अपने पास बैठाया और मुझ से पूछा, क्या बात है बताओ? मैंने शुरू से अपनी कहानी सुनाई और बताया कि आप की तलाश में मैंने क्या कुछ नहीं किया और आज मैं अपने आप को बड़ा भाग्यशाली समझता हूँ कि अल्लाह ने मुझे सत्य तक पहुँचा दिया।

नबी ﷺ और आप के सहाबा यह कहानी सुन कर बड़े प्रभावित हुए। आप जानते हैं यह कौन थे?

यह हज़रत सलमान फारसी थे, जो आप ﷺ के यत्नों से स्वतंत्र हुए। इस्लाम में आप को बड़ी महानता प्राप्त हुई।

किसी ने ठीक कहा है जो प्रयत्न करेगा सत्य को प्राप्त कर लेगा।

उसकी दाढ़ी आँसुओं से भीग गई

यह हब्शा (ईथोपिया) का इसाई राजा नजाशी है जो अपनी दयालुता तथा न्याय में प्रसिद्ध है, जिसके दरबार में इसाई धर्म के बड़े-बड़े विद्वान उपस्थित रहते थे।

जब मक्के के काफिर नए मुसलमानों को विभिन्न प्रकार से सताने लगे, कभी उनको मक्के की गर्म रेत पर लिटा दिया जाता था, कभी किसी के गले में रस्सी बाँध कर बच्चों को थमा दिया जाता था जो जानवरों की तरह सड़कों पर घसीटते थे। बल्कि किसी की हत्या करने से भी नहीं डरते थे, जैसे की अम्मार बिन यासिर की माँ। नबी यह सब कुछ देखते थे परंतु कुछ नहीं कर सकते थे केवल इसके कि उनको धैर्य रखने का आदेश दें। परंतु जब अत्याचार हद से बढ़ गया तो एक दिन आपने अपने साथियों को इकट्ठा किया और फयमाया: मेरे प्रिय साथियों! तुम पर किया जाने वाला अत्याचार अब मुझसे देखा नहीं जाता, इसलिए तुम अपना देश छोड़कर “हब्शा” (ईथोपिया) चले जाओ, क्योंकि वहाँ एक राजा किसी पर अत्याचार नहीं करता और तुम लोग वहीं रहो जब तक अल्लाह तुम्हारे लिए कोई सरलता न पैदा कर दे।

इस प्रकार मुसलमान अपने धर्म की रक्षा के लिए इस्लामी इतिहास में पहली बार स्वदेश त्याग पर बाध्य हो गए। उनमें नबी ﷺ की पुत्री रुकैया और उनके पति उस्मान भी थे। उनमें नबी ﷺ के चचा अबू तालिब के बेटे जाफर भी थे। इस प्रकार लगभग तिरासी लोगों ने स्वदेश त्याग किया।

परंतु मक्के के काफ़िरो को यह बात भी पसंद नहीं आई कि यह नए मुसलमान हम से बचकर निकल जाएं, इसलिए उन्होंने उनको मक्का वापस लाने के लिए दो व्यक्तियों को नजाशी राजा के पास भेजा। उनके द्वारा नजाशी के लिए कुछ तोहफे भी भेजे। उन्होंने नजाशी के दरबार में हाज़िर होकर कहा कि हे राजा:

हमारी जाति ने हमें तुम्हारे पास इस लिए भेजा है कि कुछ लोगों ने अपना प्रथम धर्म छोड़कर नए धर्म को ग्राहण कर लिया है। जो ऐसा धर्म है जिसको न हम जानते हैं न तुम जानते हो। इसलिए हम इन लोगों को वापस मक्का ले जाने के लिए आए हैं।

नजाशी के दरबार में बैठे हुए पुजारियों ने कहा कि हाँ ऐ राजा ऐसा ही करना चाहिए कि इन लोगों को वापस भेज दिया जाए। इस बात पर राजा नजाशी क्रोधित हो उठा और कहने लगा कदापि ऐसा नहीं हो सकता, इन लोगों ने हमको ग्राहण किया है हमारे देश में शरण लिया है, जब तक मैं उनको बुला कर यह पूछ न लूँ कि वह कौन सा धर्म है जिसको उन्होंने स्वीकार किया है मैं उनको वापस नहीं भेज सकता।

नजाशी के बुलाने पर सब लोग उसके दरबार में इकट्ठा हो गए, नजाशी ने कहा तुम लोगों ने कौन सा धर्म ग्राहण कर लिया जो न मेरा धर्म इसाई है और न तुम्हारी जाति का धर्म? सबकी ओर से जाफर खड़े हुए और उत्तर दिया, हे राजा! हम अंधविश्वासियों का जीवन व्यतीत कर रहे थे, मूर्ति पूजा करते थे, मरी हुई चीजें खाते थे, हर प्रकार की बुराईयाँ करते थे, अपने रिश्तेदारों के अधिकार अदा नहीं करते थे, पड़ोसियों के अधिकार भुला चुके थे, हम में जो शक्तिशाली था वह दुर्बल को खा जाता था। हम इसी अवस्था में थे कि अल्लाह ने एक नबी भेजा, जो स्वयं हमारी जाति में से है, हम जिसके आदर्श को भली-भाँति जानते हैं, उसने हमें ऐकेश्वरवाद की ओर बुलाया, सारे बुतों को छोड़ कर केवल उसकी उपासना का आदेश दिया, सच्चाई ग्राहण करने का हुक्म दिया, अमानतों को वापस करने, रिश्तेदारों का हक अदा करने, पड़ोसियों का ध्यान रखने, अनाथों की सेवा करने का हुक्म दिया, हत्या करने, झुठी गवाही देने से मना किया, पाक दामन स्त्रियों पर किसी प्रकार का मिथ्यारोप लगाने तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की उपासना से मना किया। नमाज़ पढ़ने, जकात देने तथा रोज़ा रखने का हुक्म दिया,

हम ने उसको सच्चा पाया, उस पर ईमान लाए, जो कुछ अल्लाह की ओर से लाया उस पर अमल किया, अब हम केवल एक अल्लाह की उपासना करते हैं, उसने जिसको हराम कहा हराम समझते हैं, जिसको हलाल कहा हलाल समझते हैं। इस पर हमारी जाति वाले हम पर क्रोधित हो उठे, विभिन्न प्रकार से हमें सताने लगे ताकि हम इस धर्म को छोड़ कर फिर मूर्ति पूजा करने लगे, वह चाहते हैं कि हम फिर मुर्दा खाएं जैसे पहले खाते थे।

जब उनका अत्याचार हद से बढ़ गया तो हम तुम्हारी ओर चले आए, तुमको किसी और पर तरजीह नहीं दिया क्योंकि हमारे नबी ने बताया कि तुम्हारे पास किसी पर अत्याचार नहीं किया जाता। नजाशी ने कहा क्या तुम कुछ सुना सकते हो जो तुम्हारे नबी पर नाज़िल हुआ है? जाफर ने कहा: क्यों नहीं। इसके बाद उन्होंने सूरह मरियम की यह आयतें पढ़ कर सुनाई:

(१) काफ. हा. या. ऐन. साद.

(२) यह है तेरे प्रभु की उस कृपा का वर्णन, जो उसने अपने भक्त ज़करिया पर की थी।

(३) जब कि उसने अपने प्रभु से गुप्त रूप से प्रार्थना की थी।

(४) कहा कि हे मेरे प्रभु! मेरी अस्थियाँ निब्रल हो गई हैं तथा सिर बुढ़ापे के कारण भड़क उठा है। परंतु मैं कभी तुझ से प्रार्थना करके वंचित नहीं रहा।

(५) तथा मुझे अपने (मरने के) पश्चात अपने निकट सम्बन्धियों का भय है, मेरी पत्नी भी बाँझ है, परंतु तू मुझे अपनी ओर से उत्तराधिकारी प्रदान कर।

(६) जो मेरा भी उत्तराधिकारी हो तथा याकूब के वंश का भी उत्तराधिकारी, तथा हे मेरे प्रभु! तू उसे स्वीकृत भक्त बना ले।

(७) हे ज़करिया! हम तुझे एक बालक की शुभसूचना देते हैं, जिसका नाम यहया है, हमने उससे पूर्व इसका नाम भी किसी को नहीं किया।

(८) (ज़करिया) कहने लगे मेरे प्रभु! मेरे यहाँ बालक कैसे होगा, मेरी पत्नी बाँझ

तथा मैं स्वयं बुढ़ापे की अति निर्बल अवस्था को पहुँच चुका हूँ।

(९) आदेश हुआ कि (वचन) इसी प्रकार हो चुका, तेरे प्रभु ने कहा दिया है कि मुझ पर तो यह बिल्कुल सरल है तथा तू स्वयं जब कि कुछ न था मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ।

(१०) कहने लगे हे मेरे प्रभु! मेरे लिए कोई लक्षण बना दे, आदेश हुआ कि तेरे लिए लक्षण यह है कि स्वस्थ होने के उपरान्त भी तू तीन रातों तक किसी व्यक्ति से बोल न सकेगा।

(११) अब ज़करिया अपने कमरे (हुजरे) से निकल कर अपने समुदाय के पास आकर उन्हें संकेत करते हैं कि तुम प्रातः तथा सायं अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करो।

(१२) हे यहया ! (मेरी) किताब को दृढ़ता से थाम ले तथा हमने उसे बाल्यकाल ही से ज्ञान प्रदान किया।

(१३) तथा अपने पास से दया तथा पवित्रता भी वह परहेज़गार (संत) व्यक्ति था।

(१४) तथा अपने माता-पिता के साथ सुशिल था, वह कूर तथा पापी न था।

(१५) उस पर शांति है जिस दिन उसने जन्म लिया तथा जिस दिन वह मरे, तथः जिस दिन वह जीवित कर के उठाया जाएगा।

(१६) इस किताब में मरियम की कथा भी वर्णन कर जब कि वह अपने परिवार के लोगों से अलग होकर पूर्वी ओर आयीं।

(१७) तथा उन लोगों की ओर से पर्दा कर लिया, फिर हमने उसके पास अपनी आत्मा (जिब्रील अलैहिस्सलाम) को भेजा, तो वह उसके समक्ष पूरा मनुष्य बन कर प्रकट हुआ।

(१८) यह कहने लगीं मैं तुझसे दयालु (रहमान) की शरण माँगती हूँ यदि तू कुछ भी अल्लाह से डरने वाला है।

(१९)(उसने) कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ संदेशवाहक हूँ, तुझे एक पवित्र बालक देने आया हूँ।

(२०) कहने लगीं कि भला मेरे यहाँ बालक कैसे हो सकता है? मुझे तो किसी पुरुष का हाथ तक स्पर्श नहीं हुआ तथा न मैं व्यभिचारी हूँ।

(२१) उसने कहा बात तो यही है, (परंतु) तेरे प्रभु का आदेश है कि वह मुझ पर अति सरल है, हम तो उसे लोगों के लिए एक प्रतीक बना देंगे तथा अपनी विशेष कृपा, यह तो एक निर्धारित बात है।

(२२) फिर वह गर्भवती हो गई तथा इसी कारण वह एकाग्र होकर एक दूर स्थान पर चली गई।

(२३) फिर उसे प्रसव पीड़ा एक खजूर के वृक्ष के तने के नीचे ले आई तथा सहसा मुख से निकल गया कि हाय, मैं इससे पूर्व मर गई होती तथा लोगों की याद से भूली बिसरी हो जाती।

(२४) इतने में उसे नीचे से ही आवाज़ दी कि निराश न हो, तेरे प्रभु ने तेरे पाँव के नीचे एक जल स्रोत प्रवाहित कर दिया है।

(२५) तथा उस खजूर के तने को अपनी ओर हिला, यह तेरे समक्ष ताज़ा पकी खजूरें गिरा देगा।

(२६) अब निश्चित होकर खा पी तथा आँखें ठंडी रख, यदि तुझे को मनुष्य दिखाई दे तो कह देना कि मैंने अल्लाह कृपालु के नाम का व्रत रखा है। मैं आज किसी व्यक्ति से बात न करूँगी।

(२७) अब (आदरणीय ईसा) के लिए हुए वह अपने समुदाय में आई। सब ने कहा कि मीरयम तूने बहुत कुकर्म किया।

(२८) हे हारून की बहन! न तो तेरा पिता बुरा आदमी था न तो तेरी माता व्यभिचारिणी थी।

(२९) (मरियम ने) अपने बच्चे की ओर संकेत किया। सब कहने लगे कि लो

भला हम गोद के बालक से बातें कैसे करें ?

(३०)(बालक) बोल उठा कि मैं अल्लाह तआला का भक्त हूँ। उसने मुझे किताब प्रदान की है तथा मुझे अपना दूत (पैगम्बर) बनाया है।

(३१) तथा उसने मुझे शुभ बनाया है जहाँ भी मैं रहूँ तथा उसने मुझे नमाज़ तथा ज़कात का आदेश दिया है, जब तक भी मैं जीवित रहूँ।

(३२) तथा उसने मुझे अपनी माता का सेवक बनाया है तथा मुझे क्रूर तथा हतभाग नहीं किया।

(३३) तथा मुझ पर मेरे जन्म के दिन तथा मेरी मृत्यु के दिन तथा जिस दिन कि मैं पुनः जीवित खड़ा किया जाऊँगा सलाम ही सलाम है।

(३४) यह है सत्य कथा ईसा पुत्र मरियम की, यही है वह सत्य बातें जिसमें लोग शंका तथा संदेह में लिप्त हैं।

(३५) अल्लाह के लिए संतान का होना उचित नहीं, वह तो अत्यंत शुद्ध है, वह तो किसी कार्य के करने का विचार करता है तो उसे कहता है कि हो जह , वह उसी समय हो जाता है।

(३६) मेरा तथा तुम सबका प्रभु अल्लाह तआला ही है। तुम सब उसी की उपासना (इबादत) करो, यही सीधा मार्ग है।

इन आयतों के सुनने के बाद राजा नजाशी रो पड़ा, उसके आँसुओं से उसकी दाढ़ी भीग गई, उसके साथ दरबार में बैठे इसाई विद्वान भी रो पड़े, यहाँ तक कि वह जो अपनी पवित्र पुस्तक लेकर बैठे थे वह उनके आँसुओं से भीग गई, उसके पश्चात नजाशी ने एक ऐसा वाक्य (जुमला) कहा जो इतिहास का भाग बन गया, वह यह है:

“मैं अल्लाह की शपथ खाकर कहता हूँ यह तो वही बात है जो हज़रत ईसा लेकर आए थे, दोनों की शिक्षाएं वास्तव में एक ही दीप के प्रकाश हैं, मैं अपनी शरण में आने वाले इन मुसलमानों को तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेज सकता, इसलिए तुम लोग अपनी भेंट लेकर मक्के वापस चले जाओ।”

यह था हब्शे का नजाशी राजा, जिसके राज्य में किसी पर अत्याचार नहीं किया जाता था। नजाशी की बात से यह भी प्रकट होता है कि आज जो कुछ इंजील में पाया जाता है वह हजरत ईसा की शिक्षा के विरुद्ध है।

नजाशी के जीवन चरित्र से पता चलता है कि वह भी मुसलमान हो गया था परंतु उसने अपने इस्लाम को गुप्त रखा कि कहीं उसकी जाति वाले उपद्रव न कर दें। जब उसका देहांत हुआ तो नबी ने उसके जनाजे की गाएबाना (अनुपस्थित) नमाज़ पढ़ाई।

कुरआन और मार्गदर्शन

मैं कुछ लोगों को यह कहते हुए सुनता हूँ कि भला चौदह सौ साल पहले का कुरआन इस एकीसवीं सदी में हमारी क्या रहनुमाई करेगा। ऐसा कहने वालों में अधिकतर गैर मुस्लिम हैं। लेकिन वे मजबूर हैं इसलिये कि वे कुरआन की वास्तविकता से परिचित नहीं हैं। इसका सारा दोष उन लोगों पर है जो अपने आप को कुरआन का अनुयायी समझते हैं। हम उनसे पूछना चाहते हैं कि उन्होंने कुरआन का पैगाम दूसरों तक क्यों नहीं पहुँचाया? क्या उन्होंने कुरआन को अपनी सम्पत्ति समझ लिया है? यह उनकी गलती है चाहे मानें या ना मानें। पर जब मैं उन लोगों की जुबान से यह कहते सुनता हूँ कि इस एकीसवीं शताब्दी में कुरआन हमारी क्या रहनुमाई करेगा जो अपने आप को कुरआन का अनुयायी कहते हैं तो मेरे आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रहती और यह सोचकर दिल तड़प उठता है कि कुरआन अपने ही लोगों के यहाँ कितना अजनबी है? कितना मज़लूम है? कितना बेबस है? जो सारी दुनिया को शांति का पैगाम सुनाने आया था जीवन का एक मुकम्मल कानून लेकर आया था, उसका काम केवल इतना रह गया है कि कोई बीमार पड़े तो कुछ पढ़ कर फूँक दिया, कोई मर गया तो उसकी कब्र पर कुछ पढ़ दिया और नमाज के लिए खड़े हुए तो कुछ पढ़ लिया और बस।

अफसोस! इससे बड़ा अत्याचार कुरआन पर और क्या हो सकता है?

ऐसा कहने वाले कुछ नासमझ मुसलमान ही नहीं हैं बल्कि अच्छे भले पढ़े लिखे लोग भी हैं, जिनके पास डॉक्टरेट और वकालत की बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ हैं वे भी ऐसा कहते हुए दिखाई देते हैं।

जब इसके कारण पर हम विचार करते हैं तो पता चलता है कि ये लोग भी कुरआन से उतने ही अपरिचित हैं जितना एक देहाती किसान। यह कुरआन की

एक आयत तो सही पढ़ नहीं सकते, समझना तो बड़ी बात है। फिर कुरआन के विषय में वे जो कुछ कहते हैं वह उनकी बात नहीं होती है बल्कि उनकी बातें हैं जो कुरआन के घोर विरोधी हैं, जो दिन-रात कुरआन पर आरोप लगाते रहते हैं। ये बेचारे जिन को कुरआन की एक आयत का अर्थ भी नहीं मालूम जब अमरीका या लंदन जाते हैं और ईसाईयों का कुरआन पर आरोप सुनते हैं तो बड़ी जल्दी प्रभावित हो उठते हैं क्योंकि उनकी प्रसन्नता प्राप्त करने के बाद ही उनको डॉक्टरेट और वकालत की डिग्रियाँ मिलती हैं, इसलिए हम ऐसे लोगों से अनुरोध करते हैं कि वे सबसे पहले स्वयं कुरआन को समझने की कोशिश करें, क्योंकि किसी भी धर्म को समझने के लिए स्वयं उसके विद्वानों की ओर रुजू करना चाहिए। जब उनसे पूरी तरह उनका धर्म समझ में आ जाए तो फिर उस पर आरोप लगाने वालों को देखना चाहिए। इससे स्वयं ही मालूम हो जाएगा कि विरोधियों का लगाया हुआ आरोप कहाँ तक सही है और कहाँ तक झूठ। इस की मिसाल बिल्कुल ऐसी है की कोई व्यक्ति वेद को समझने के लिए किसी पादरी या अरबी के आलिम के पास जाए तो वेद क्या खाक समझ में आएगा। बिल्कुल इसी प्रकार कुरआन को समझने के लिए सबसे पहले किसी अरबी जानने वाले विद्वान को पकड़िए जो आप को उसका अर्थ समझा सके, फिर आप देखिए कि कुरआन इस एकीसवीं शताब्दी के लिए शांति का पैगाम सुनाता है या नहीं? हमें आशा है कि हमारे भाई हमारी प्रार्थना पर ध्यान देंगे और कुरआन को उसके अपेन रूप में समझने का प्रयत्न करेंगे।

हज़रत उमर और आटे की बोरियाँ

एक अंधेरी रात की बात है हज़रत उमर अपने नियमानुसार मदीने का दौरा कर रहे थे, आप के साथ आप का गुलाम असलम भी था। दूर से जलती हुई आग दिखाई दी तो आप ने गुलाम से कहा, हे असलम ! ऐसा मालूम होता है कि रात में कोई काफिला आकर ठहरा है इसलिए चलो देखें उसे किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है ?

खलीफा अपने सेवक के साथ वहाँ जाते हैं तो क्या देखते हैं कि एक औरत है, उसके कई बच्चे हैं जो रो रहे हैं और हाण्डी आग पर चढ़ी हुई है।

खलीफा निकट पहुँचकर- “क्या मैं आ सकता हूँ ?”

औरत-“भले इरादे के साथ आ सकते हो।”

खलीफा और असलम निकट पहुँच जाते हैं, यहाँ तुम क्या कर रही हो ? औरत ने कहा, हमारा काफिला आगे बढ़ गया है इसलिए मैं यहीं रात काट रही हूँ।

आप ने कहा, मगर ये बच्चे क्यों रो रहे हैं ? औरत ने जवाब दिया कि भूख के मारे, फिर कहा देगची में क्या पका रही हो ? औरत ने कहा उसमें पानी है ताकि देगची को देख कर बच्चे चुप हो जाएं और उनको नींद आ जाए।

यह सुनते ही दोनों भागते चले आ रहे हैं। बैतुलमाल (अनाज का गोदाम)पहुँचकर एक बोरी आटा और खाने-पीने का कुछ दूसरा सामान लिया और असलम से कहा मेरी पीठ पर उठा दो। असलम ने कहा नहीं ! अमीरुल मोमीनीन, यह तो मैं उठा कर ले जाऊँगा। आप ने कहा, अरे असलम ! क्या कयामत के दिन भी मेरे गुनाहों को लादेगा ? इसलिए मेरी पीठ पर उठा दे। अब फिर दोनों भागते चले जा रहे हैं लेकिन अब इस ज्ञान से कि इस्लामी राज्य का सम्राट आटे की बोरी लादे हुए है और उसका सेवक साथ है। निकट पहुँच कर आटे की बोरी सामने रख दी और

सालन को हाण्डी में डाल दिया, ऐ अल्लाह के बंदो हट जाओ मैं पका देता हूँ। यह कह कर आग फूँकने लगे और आटा गूँध कर रोटी पकाने लगे। असलम कहते हैं कि मैं अपनी आँखों से देख रहा था कि धुंआ आप की दाढ़ी से निकल रहा था। पका चुकने के बाद कहा: बच्चों को खिलाओ, जब बच्चे अच्छी तरह खा चुके तो उठ पड़े। आप के साथ असलम भी उठ गया।

औरत दुआएं देने लगी, अल्लाह आप का भला करे, आप ही को अमीरुल मोमिनीन होना चाहिए था। उमर ने कहा कोई बात नहीं जब तुम अमीरुल मोमिनीन के पास सुबह आओगी तो वहाँ मुझे पाओगी। यह कहते हुए दोनों भागते हुए फिर वापस आ गए। हाँ, इससे पहले भी भागते हुए आए थे। लेकिन उस समय ज़िम्मेदारियों को पूरा न करने की सज़ा के डर से काँप रहे थे। मगर इस बार दिल खुश था क्योंकि बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी अदा कर के आ रहे थे।

यह था दो शक्तिशाली राज्यों का विजय करने वाला और सम्पूर्ण इस्लामी आदर्श का सम्राट। क्या इस के जीवन चरित्र की एक-एक घटना हमारी समस्याओं का समाधान करने के लिए काफी नहीं हैं? क्यों नहीं, काफी है। मगर खुदग़ज़ी और स्वार्थपरायणता ने हमारे दिल पर अधिकार जमा लिया है। अपने सुख के अलावा किसी के सुख की हमें क्या चिन्ता? हमको ईश्वर ने इसलिए पैदा नहीं किया है कि दूसरों के दुख-दर्द का अनुभव करें। हम को तो अपनी आत्मा को संतुष्ट करना है दूसरे जहन्नम में जाएं। हम से कोई सरोकार नहीं।

नहीं, नहीं आईए! एक बार फिर उस इस्लाम का अध्ययन करें जिसको लेकर हमारे नबी मुहम्मद ﷺ पधारे फिर देखें हमारी समस्याओं का समाधान होता है या नहीं?

हज़रत उमर और मिलावटी दूध

वह रात बड़ी ही सुनसान थी, हाथ को हाथ नहीं सुझाई देता था। एक—एक कदम उठाना मुश्किल हो रहा था। रास्तों में काँटे और छोटी-छोटी झाड़ियाँ थीं, जिनमें कभी-कभी पावँ फँस जाता। इसलिए एक-एक कदम बहुत सोच-विचार के बाद उठाना पड़ता था। आज की तरह बिजली के खम्भे और उसमें जगमगाते बल्ब नहीं थे, सिमेंटेड रोड और गच किए हुए फुटपाथ नहीं थे। चौकीदारों और रक्षकों का वह प्रबन्ध भी नहीं था जो आज दिखाई देता है, लेकिन हाँ लोगों के हृदय इस्लाम के दिव्य प्रकाश से दमक रहे थे।

ऐसे सन्नाटे और सुनसान समय में हज़रत उमर मदीना की गलियों में अकेले घूम रहे थे। जब से आप खलीफा बने, रातों का आराम त्याग दिया। कुछ समय अपने ईश्वर से दुआ और इबादत में गुज़रने बाकी समय जनता की देखभाल में बिताते ताकि दिन भर की थकी हारी जनता रात में आराम से सो जाए।

एक रात की घटना है कि आप अपनी आदत के अनुसार मदीना की गलियों में घूम रहे थे। अचानक किसी घर से कुछ आवाज़ सुनाई दी। आपने सोचा कि हो सकता है कोई भूखा हो। भूख के कारण उसको नींद नहीं आ रही है इसलिए उसकी हालत से आगाही हासिल करने के लिए दरवाज़े पर खड़े हो गए ताकि अगर उनको भोजन की ज़रूरत हो तो उसका प्रबंध कर दें।

एक बुढ़िया की आवाज़ आई, बेटी दूध में पानी मिला दे ताकि सबेरे कुछ अधिक पैसे मिल जाए।

नहीं माँ! आप ऐसा ना करें, क्या आप ने अमीरुल मोमिनीन का यह ऐलान नहीं सुना है कि दूध में पानी न मिलाए।

माँ ने कहा, अरे पगली ! क्या अमीरुल मोमिनीन देख रहे हैं ?

बेटी ने कहा मगर माँ! अमीरुल मोमिनीन नहीं देख रहे हैं मगर खुदा तो देख रहा है। हज़रत उमर यह सुन रहे थे और आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे। सबेरा होते ही आप ने अपने बेटे से विवाह के लिए उस लड़की के घर पैगाम भेजा और कुछ दिनों में यह देहाती लड़की अमीरुल मोमिनीन की पुत्रबधु बन गई।

यहाँ प्रश्न उठता है कि आखिर वह कौन सी शक्ति थी जो इस अंधेरी रात में भी मासूम बच्ची को कानून तोड़ने से रोक रही थी। तो क्या वह इस्लाम का सर्वश्रेष्ठ संविधान नहीं था जिसको अपनाने के बाद मनुष्य केवल मनुष्य के सामने ही जवाबदेह नहीं होता है बल्कि उस विशाल शक्ति के सामने भी जवाबदेह होता है जिसने उसको पैदा किया और जिसने उसके लिए एक पूर्ण जीवन व्यवस्था भी बता दी।

प्रत्येक दिन हम अखबारों में पढ़ते हैं कि फ्लाँ थानेदार ने उसको इतनी रिश्तत लेकर छोड़ दिया, फ्लाँ व्यापारी ने इतना सोना स्मगलिंग किया। सरकार बार-बार इन पर पाबंदी लगाती है, उन पर सी. आई. डी. नियुक्त करती है मगर इन सारे प्रतिबंधों के होते हुए भी कहीं अवसर मिला और फिर रिश्तत का बाजार गर्म हो गया। इसलिए हम आप के सामने एक ऐसा संविधान प्रस्तुत कर रहे हैं जिसको ग्रहण करते ही मनुष्य की काया पलट जाती है। वह अपने हर काम के लिए ईश्वर के सामने उत्तरदायी होता है जिस प्रकार वह भरे बाजार में करने से डरता है उसी प्रकार रात के सन्नाटे में भी ईश्वर की पकड़ से भयभीत हो उठता है और उसका हर कदम जो कभी बुराई की तरफ उठा करता था भलाई की ओर मुड़ जाता है।

यह है इस्लामी संविधान जिसके साएं में पली हुई मानवता कभी घुटन का अनुभव नहीं करती बल्कि इस समाज का हर व्यक्ति अपने कर्तव्य को पूरे करने में एक आध्यात्मिक आनंद पाता है जिसको संसार की सारी पूँजी खर्च कर के भी वह प्राप्त नहीं कर सकता।

लोग पूछते हैं कि वह संविधान कहाँ है ? मैं कहता हूँ कि यह मुसलमानों के दुर्भाग्य का काल है, क्योंकि इस संविधान को अपने घरों में रख कर उसको लागू नहीं कर रहे हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी इस संविधान को अपनाया गया दुनिया स्वर्ग बन गई।

हज़रत उमर और समानता

अमीरुल मोमिनीन उमर अपनी आरामग में आराम फरमा रहे थे कि ग़स्सान का आखिरी बादशाह अपने रक्षकों के साथ मदीने में दाखिल हुआ। वह यद्यपि इस्लाम स्वीकार कर चुका था फिर भी बादशाही आभूषणों से लदा हुआ था। सिर पर चमकता हुआ स्वर्ण ताज जमीन पर लहराता हुआ लम्बा कुर्ता और आगे-पीछे रक्षकों का समुह दल, जैसे कोई विजयी बादशाह अपने परास्त किए हुए देश में दाखिल हो रहा है। आते ही हज़रत उमर को सलाम किया और अपने इस्लाम का एलान किया। तीन दिन तक मदीने में रहा और फिर आप से इजाज़त लेकर मक्का शरीफ चला गया, वहाँ बैतुल्लाह का परिक्रमा (तवाफ) कर रहा था कि बहू के पाँव से उसका लम्बा चोगा दब गया। ग़स्सानी बादशाह ने उस में अपना अपमान समझा और घमण्ड में आकर बहू को एक चपत लग दिय। बहू वहा से सीधा निकला और हज़रत उमर की सेवा में हाज़िर होकर निवेदन किया कि ग़स्सानी बादशाह ने इस कारण एक चपत मारा है क्योंकि परिक्रमा के समय जो भीड़ होती है उसमें किसी का कपड़ा पाँव से लग जान कोई अनहोनी बात नहीं है इसलिए मैं न्याय चाहता हूँ।

हज़रत उमर यह सुन कर बहुत क्रोधित हुए और ग़स्सानी को अदालत में हाज़िर करने का आर्डर भेज दिया। हज़रत उमर अदालत में बैठे हैं, ग़स्सानी और बहू खड़े हैं। ग़स्सानी ! तुमने बहू को एक चपत मारा है ?

जी हाँ! मैंने मारा है इस लिए कि उसने मेरा अपमान किया है। हज़रत उमर-काबा की परिक्रमा से किसी का कपड़ा पाँव से लगा सकते हो लेकिन तुम को मारने का बदला देना पड़ेगा। इसलिए या तो बहू को किसी प्रकार राज़ी करो या मार खाने के लिए तैयार हो जाओ। यह खुला इंसफ सुनते ही ग़स्सानी के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि एक मामूली बहू को

चपत मारने का बदला किसी बादशाह से भी लिया जा सकता है। इसलिए इसको उसने अपना अपमान समझा और तीन दिन तक इस मामले में विचार करने का अवसर माँगा।

इस घटना से मदीने में एक हलचल मच गई। कुछ लोगों ने हज़रत उमर से शिकायत भी की, मगर आप अपने न्याय पर जमे रहे। तीन दिन बीत जाने के बाद लोगों ने देखा कि ग़स्सानी चम्पत हो चुका है।

क्या कभी आप ने इस घटना पर सोचा कि आखिर हज़रत उमर ने एक बादशाह और बहू को एक ही कतार में क्यों खड़ा किया? जी हाँ, अंजाम की परवाह किए बिना उनको इस्लामी शिक्षा सम्पूर्ण जनता पर लागू करनी थी, क्योंकि इस्लाम ने मानवता के अंदर कोई अंतर नहीं रखा है। ईश्वर की दृष्टि में सब एक हैं। अगर उसकी नज़र में कोई ऊँचे दर्जे का है तो वह है जो उससे अधिक डरने वाला हो। किसी वंश और कुटुम्ब का इस्लाम के नज़दीक कोई महत्व नहीं। इसी कारण एक बार महामानव मुहम्मद ﷺ ने फरमाया था: “अगर मुहम्मद की बेटी फातिमा भी चोरी करेगी तो उस पर भी इस्लामी सजा लागू होगी और वह हाथ काटना है।” हज़रत आईशा फरमाती हैं कि मैंने आपको सबसे ज़्यादा माफ करने वाला पाया, लेकिन जब इंसान का समय आता था तो आप किसी की तरफदारी नहीं करते। बल्कि आप ﷺ ने देहांत के कुछ दिन पूर्व यहाँ तक कह दिया कि जिस किसी को मैंने मारा हो या गाली दी हो वह आकर अपना बदल ले ले।

प्यारे बेटे के नाम पिता का खत

हज़रत अली ने अपने बेटे हज़रत हसन को लिखा:

“प्यारे बेटे ! ज़माने की गर्दिश, दुनिया की बेवफाई और आखिरत के निकटतम होने ने मुझे हर ओर से बेपरवाह कर दिया, अब अगर कोई अंदेशा है तो बस वह आखिरत की असफलता का, इसलिए इन सारे अंदेशों को छोड़कर आखिरत के सुधार की चिंता में लग गया हूँ, अब यह आखिरी वसीयत तेरे नाम लिख रहा हूँ क्योंकि तू मेरी जान है, मेरी आत्मा है, तुझ पर कोई मुसीबत आएगी तो सबसे पहले मुझ पर आएगी।”

प्यारे बेटे ! मैं तुझे वसीयत करता हूँ: ईश्वर से डर, उसकी आज्ञा का पालन कर, उसकी रस्सी को मज़बूती से थाम, क्योंकि इससे शक्तिशाली कोई बंधन नहीं।

प्यारे बेटे ! मन को उत्तम उपदेशों से जीवित रख, घोर तपस्या कर, विश्वास को शक्तिशाली बना, हिक्मत से रौशन कर, मौत की याद दिला कर उस पर अधिकार प्राप्त कर, कठिनाईयों की याद दिलाकर होशियार रख, समय की रंगरलियों से दूर, गुजरे हुए की बरबादी से परिचय करा, उनकी आबदियों में घूम-फिर कर उनकी हवेलियों के खंडहर देख, और दिल से सवाल कर, उन लोगों ने क्या किया ? कहाँ चले गए, कहाँ जाकर आबाद हो गए। क्या अब वापस नहीं आएंगे ? ऐसा करने से तुझे मालूम हो जाएगा कि उनकी आबाद दुनिया वीरान हो गई तू भी एक दिन ऐसा ही हो जाएगा। इसलिए अपना आचरण ठीक रख, अपनी आखिरत को दुनिया के बदले मत बेच।

प्यारे बेटे ! तू भलाई का उपदेश सुनायेगा तो तू भले लोगों में से बन जाएगा। बुराई को हाथ और जुबान दोनों से बुरा साबित कर, उसके निकट न जा। ईश्वर के मार्ग में मलामत करने वालों से मत डर, सत्य के लिए कठिनाईयों के तूफान में कूद जा, इस प्रकार तू शक्तिशाली बन जाएगा, फिर तुझ पर कोई विजय प्राप्त नहीं

कर सकता। तेरी जिस बात से मैं प्रसन्न हूँगा वह यह है कि तू ईश्वर से डरता रहे, उसकी आज्ञा का पालन करे, ईश भक्तों के मार्ग पर चलें, क्योंकि जिस तरह तू आज अपने आप को देखता है, कल उसी तरह वे लोग भी अपने आप को देखते थे जिस तरह तू सोचता है, वे लोग भी सोचते थे। अंत में ये इस बात पर मजबूर हुए कि सीधी रहा पर चलें और बेकार बातों से बचें।

प्यारे बेटे! यह बात अच्छी तरह जान ले कि जिसके हाथ में मौत है उसी के हाथ जिंदगी भी है। जो पैदा करता है वही मारता भी है, जो कठिनाईयों में डालता है वही उससे निजात भी दिलाता है। इसलिए अपनी मौत और जिंदगी को उसी के हाथ सौंप दे और यह पक्का यकीन पैदा कर कि संसार की स्थिरता अल्लाह के ठहराए हुए कानून पर है। अगर कोई बात तेरी समझ में न आए तो उसका इंकार न कर दे, बल्कि अपनी कमअक्ली समझ ले, क्योंकि पहले तू जाहिल पैदा हुआ था, फिर धीरे-धीरे तूने ईल्म सीखा और अभी नहीं मालूम कितनी बातें तुझे सीखनी हैं जिनको तू नहीं जानता।

प्यारे बेटे! ईश्वर के विषय में ऐसी शिक्षा किसी ने नहीं दी जैसी हज़रत मुहम्मद ﷺ ने दी थी। इसलिए उन्हीं को अपना रहनुमा बना और आखिरत में सफलता के लिए उन्हीं को अपना पेशवा बना।

जिन लोगों ने दुनिया को परख लिया है वे उसकी जुदाई से घबराते नहीं, उनकी मिसाल ऐसे यात्रियों की है जो ऊसर-बंजर को छोड़कर हरी-भरी दुनिया की ओर जा रहे हैं। ये मार्ग की कठिनाईयों को सहन करते हैं, भूख-प्यास से घबराते नहीं। अपने लोगों के बिछड़ जाने का कष्ट सहन करते हैं। किसी तकलीफ को तकलीफ नहीं समझते। किसी खर्च से जी नहीं चुराते, उनके लिए हर कदम जो कामनाओं की ओर उठता है बड़ा आनंदमय होता है। लेकिन जो लोग दुनिया से चिमटे हुए हैं वे उसकी जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकते। उनकी मिसाल उस यात्री जैसी है जो हरी-भरी दुनिया को छोड़कर ऊसर-बंजर की ओर जा रहा है। उसके

लिए यह यात्रा बड़ी भयानक है, वह इतना भयभीत हो उठता है कि उसकी चीखें निकल जाती हैं क्योंकि उसने इस दुनिया को अपना अस्ली निवास स्थान बना लिया था।

प्यारे बेटे! तेरे सामने एक कठिन घाटी है, घाटी को एक हल्का फुल्का व्यक्ति बड़ी सरलता से पार कर सकता है परंतु बोझिल आदमी के कदम फँस जाते हैं। तुझे इस घाटी से गुज़रना है क्योंकि इसी के बाद स्वर्ग या नरक है, इसलिए अपना ठिकाना अभी से बना ले ताकि मरने के बाद अफसोस न करना पड़े।

प्यारे बेटे! तू आखिरत के लिए पैदा किया गया है न कि दुनिया के लिए। तू ऐसे स्थान पर है जो डाँवा डोल है और जो आखिरत में सफलता प्राप्त करने की तैयारी की जगह है। मौत तेरा पीछा कर रही है, तू लाख भागे बच नहीं सकता। एक दिन उसका शिकार हो जाना है। इसलिए होशियार रह कहीं मौत ऐसी दशा में न आ जाए कि तुझे तौबा का अवसर भी न मिल सके, यदि ऐसा हो गया तो तूने अपने आप को हलाक कर डाला।

खबरदार! खबरदार! तुझे लालच मौत के घाट न ले जाए जहाँ तक सम्भव हो अपने और खुदा के बीच किसी का एहसान न ले, क्योंकि तेरा भाग तुझे मिल कर रहेगा, ईश्वर का थोड़ा दिया हुआ बंदे के बहुत देने से बेहतर है।

प्यारे बेटे! ज़ालिम के अत्याचार से तंगदिल न हो, क्योंकि वह अपना नुकसान और तुम्हारा भला कर रहा है।

प्यारे बेटे! अन्न दो प्रकार के होते हैं, एक यह जिसको तुम ढूँढते हो, दूसरा वह जो तुमको ढूँढता है, बस अगर तू ढूँढना छोड़ दे तो वह स्वयं तेरे पास आएगा। दुनिया में तेरा भाग बस इतना है जितने से तेरी आखिरत सुधर जाए। जो दुनिया को ठुकराता है दुनिया उसे गले लगाती है, यात्रा से पहले यात्रियों को देख लो और ठहरने से पहले पड़ोसियों की जाँच-पड़ताल कर लो।

प्यारे बेटे ! जब मैंने अपने आप को देखा, बुढ़ा हो रहा हूँ, तो यह उपदेश लिखने में जल्दी करनी पड़ी, मुझे डर लगा कि कहीं लिखने से पहले ही प्राण-पखेरू न उड़ जाएं या शरीर की तरह अक्ल भी कमज़ोर न हो जाए या तुझे दुनिया की माया न घेर ले क्योंकि नवयुवकों का दिल खाली जमीन की तरह होता है, जो हर तरह के बीज को सरलतापूर्वक स्वीकार कर लेता है।

प्यारे बेटे ! मैं तेरी दुनिया और आखिरत ईश्वर के सुपुर्द करता हूँ और दोनों लोक में उससे तेरी सफलता की दुआ करता हूँ। (नहजुल बलागा से)

वह अपने किए पर पश्चाताप करने लगी

महामानव हज़रत मुहम्मद ﷺ के दामाद हज़रत अली रज़ीयल्लाहु अन्हु मुसलमानों के चौथे खलीफा बने। बचपन से ही आप की देख-भाल अल्लाह के रसूल ने की। आप ही की गोद में पलकर बड़े हुए। इसलिए स्वभावतः आप अपने आचार-विचार में लोगों के लिए एक नमूना और आदर्श थे।

इस्लामी संसार के सम्राट बनने के बाद भी आप अपने स्वाभाविक आचरण पर डटे रहे। खिलाफत का हर काम इस प्रकार पूरा करते कि आप को किसी के सम्मुख उत्तरदाई होना है। इसलिए मुसलमानों को बैतुलमाल से इतना ही लेते जितने में आपका और आप के परिवार का पालन-पोषण हो सकता था बल्कि आप इसमें भी कमी करत चले गए यहाँ तक कि आपका खर्च इस्लामी संसार के सबसे निर्धन व्यक्ति के समान हो गया। कभी-कभी औरतें शिकायत भी करती थी कि इतने कम दिरहम में हमारा खर्च नहीं चल सकता, लेकिन आप यह कह कर टाल देते कि मुसलमानों के बैतुलमाल में हमारा हक यही है जितने में हम जीवित रह सकें।

एक बार आप की भाभी (हज़रत जाफर की पत्नी जो मौता के युद्ध में शहीद हो गए थे) ने आप को खाने की दावत दी, जिसको आपने बड़ी खुशी से स्वीकार कर लिया। आप की भाभी का विचार था कि जब खाने के लिए आप आएंगे तो राशन कम होने की शिकायत करूँगी। अतः जब आप खाने के लिए बैठे तो उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमनीन ! हमको जो बैतुलमाल से राशन मिलता है वह कम पड़ जाता है इसलिए आप उस को बढ़ा दीजिए।

हज़रत अली बोले, लेकिन भाभी जी यह बताईए कि अगर राशन कम पड़ता है तो आप ने मेरी दावत किस प्रकार की ? ऐ अमीरुल मोमिनीन ! बैतुलमाल से हमें जो राशन मिलता था उसमें से जो रोज़ाना एक चुटकी आटा बचा लिया करती थी और आज एक माह बाद आपकी दावत का प्रबंध कर सकी हूँ। हज़रत अली ने

कहा, इसका मतलब है कि एक चुटकी आटा ज्यादा मिलता है कम कर देने से भी आप का काम चल सकता है। यह सुनते ही आप की भाभी आश्चर्य में डूब गई, मगर क्या करतीं? अपने किए पर पश्चाताप करने लगीं, क्योंकि दूसरे दिन बैतुलमाल से आटा आया तो उसमें एक चुटकी आटा कम था और फिर यह चुटकी पूरी नहीं आई। यह इस्लामी इतिहास की एक छोटी घटना है जिसको पढ़कर विद्यार्थी आगे बढ़ जाते हैं, लेकिन हर घटना अपने पीछे एक सीख रखती है, इसलिए आईये इस रहस्य की खोज निकालें, जिसने एक चुटकी आटा और कम कर दिया। क्योंकि किस्से-कहानियाँ को पढ़ कर नसीहत प्राप्त किए बिना आगे बढ़ जान यह उनका काम नहीं जो संसार में कुछ करना चाहते हैं।

“काँति” साप्ताहिक दिल्ली के किसी अंक में मैंने पढ़ा था कि फ्लाँ वजीर साहब ने पाँच हजार रूपए की शराब पी और उसका बिल हुकूमत को भेज दिया। किसी दूसरे ने तीन हजार की और तीसरे ने दो हजार की...।

मैं सोच में पड़ गया कि क्या समय आ गया है एक तरफ जनता भूख-प्यास से तड़प रही है, शरीर ढाँकने के लिए एक लंगोटी भर को तरस रही है, झोपड़ी न होने के कारण पेड़ के साए में जीवन व्यतीत कर रही है तो दूसरी ओर राज्यकोष को पानी की तरह बहाया जा रहा है। राज्य की दौलत पानी की तरह बहाने वालों को भूखी, प्यासी और नंगी जनता का कुछ ख्याल नहीं, आखिर इन दोनों जीवन के बीच यह कौन सी दीवार हायल हो गई है कि एक की छाया दूसरे तक नहीं पहुँचती।

अब हर पाठक इन दोनों घटनाओं को सामने रख कर सरलतापूर्वक इनका अंतर समझ सकता है और अपनी भूखी प्यासी जनता को पैगाम पहुँचा सकता है कि दुनिया में एक ऐसी भी व्यवस्था है जिसको ग्रहण करते ही इंसान की काया पलट जाती है। वह अपने हर काम के लिए बड़ी सत्ता के सक्षम उत्तरदायी हो जाता है। इसलिए फिर क्यों न एक बार उस जीवन व्यवस्था को आजमाएं?

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ खलीफा बनते हैं

अभी इस्लामी शिक्षा पर एक शताब्दी भी नहीं बीतने पाई थी की मुसलमानों में भी दुनिया परस्ती पैदा होने लगी। उनको भी धन का लालच सताने लगा।

महामानव हजरत मुहम्मद ﷺ को मक्का से हिजरत कर के मदीना गए हुए ९९ वर्ष हो चुके हैं। तीस वर्ष तक मदीना इस्लामी राज्य की राजधानी थी लेकिन अब वहाँ से बदल कर दमिश्क (शाम का एक नगर) इस्लामी राज्य की राजधानी है, जिसकी जामा मस्जिद में मानव का समुद्र ठाठें मार रहा है, क्योंकि सरकार की ओर से यह एलान करा दिया गया है कि आज लोगों को एक खास समाचार से बाखबर करने का प्रोग्राम है। इसलिए हर एक मस्जिद में पहुँचने की कोशिश कर रहे थे।

जब सब लोग इकठ्ठा हो गए तो खलीफा का मुख्य सलाहकार “रज़ा बिन हैवा” मेम्बर पर खड़े हो गया। उसके हाथ में मुहरबंद एक खत था। उसने लोगों को सम्बोधित कर के कहा: हे लोगों! यह खलीफा सुलेमान का खत है। इसमें खलीफा ने अपने बाद एक व्यक्ति को अमीरुल मोमिनीन नियुक्त किया है। क्या आप लोग उस व्यक्ति के हाथ पर बैअत करने के लिए तैयार हैं?

हाँ, हाँ! ध्वनि से मस्जिद गूँज उठी।

रज़ा बिन हैवा खत खोलने लगे और फिर एक बार मस्जिद में सन्नाटा छा गया। लोगों ने अपनी साँसे बंद कर लीं, हर शख्स इस विचार में डूब गया कि देखें अब हमारा खलीफा कौन बनता है? खलीफा सुलेमान के बेटों, भतीजों और दूसरे लोगों के दिल धड़कने लगे, यह जानने के लिए क्षण बाद इस्लामी संसार का कौन मालिक बन रहा है, वह राज्य जिसका झण्डा अब तक एक ओर अफ्रीका और स्पेन में लहरा था तो दूसरी ओर रूस, चीन और सिंध में भी बोल-बाला था।

रज़ा बिन हैवा खत खोल कर पढ़ने लगे।

अमीरुल मोमिनीन सुलेमान की ओर से सारी जनता को सलाम। मैं अपने बाद एक व्यक्ति को अपना खलीफा नियुक्त कर रहा हूँ। यह सब कुछ मैंने आप की भलाई के लिए किया है इसलिए मुझे आशा है कि आप लोग उसको पसंद करेंगे। वह हैं उमर बिन अब्दुल अज़ीज़।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का नाम सुनते ही पूरी मस्जिद फिर गूँज उठी। खुशी से लोग 'अल्लाहु अकबर' के नारे लगाने लगे। लोगों के दिल खुशी से झूम उठे, क्योंकि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की ईश भक्ति और दयालुता से सारे लोग परिचित थे। आप के पिता अब्दुल अज़ीज़ मिस्र के गर्वनर थे, इसलिए आप राजकुमारों के साथ पले-बढ़े थे। घर पर धन का बाहुल्य था आपका बिस्तर गुलाब के फूलों से सजाया जाता, उस पर खुशबू की वर्षा की जाती, मगर जब सवेरे आपकी सेविका बिस्तर उठाने जाती तो यह देख कर चकित रह जाती है कि गुलाब के फूलों से सजा हुआ पलंग वैसे ही पड़ा है इसलिए कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ सारी रात नमाज़ पढ़ते ही बिता देते थे। लोगों का कहना था कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अपने नाना अमीरुल मोमिनीन उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु के प्रभाव को लेकर पैदा हुए थे, इसलिए कि जिस लड़की ने रात के अंधेरे में दूध में पानी मिलाने से इंकार कर दिया था और उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे आसिम से उसका विवाह कराया था, उसी लड़की के आप नाती थे। इसलिए आपका हज़रत उमर के स्वभाव को लेकर पैदा होना बिल्कुल सम्भव मालूम होता है।

अब लोग उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की ओर बढ़े और आप को पकड़ कर मिम्बर पर खड़ा कर दिया।

लेकिन आप थे कि बराबर “इन्न लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन” (यह एक दुआ है जो संकट काल में पढ़ी जाती है) पढ़ते चले जा रहे थे और बार-बार खिलाफत के इस बोझ से बचने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन क्या करते जो

कुछ होना था, फिर सारी जनता ने आप के हाथ पर बैअत कर ली।

बैअत पूरी हो जाने के बाद 'रज़ा बिन हैवा' ने सुलेमान के देहांत का समाचार सुनाया और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ खिलाफ़त का भारी बोझ लादे बोझिल कदमों से अपने घर वापस आकर एक कोने में बैठ गए।

आपकी पत्नी फातिमा अपने पति को इस प्रकार उदास देख कर बड़ी चिंतित हुई और अर्ज़ किया, आज आप इतने उदार और परेशान क्यों हैं ?

उमर: क्यों न चिंतित होऊँ, आज मेरे सिर पर इतना बड़ा बोझ लाद दिया गया जिसको सोचकर ही मेरा हृदय काँप रहा है कि मैं उसको पूरा कर सकूँगा या नहीं ?

पत्नी: "अच्छा तो वह कौन सा इतना बड़ा बोझ है ?"

उमर: "खिलाफ़त का।"

यह सुनते ही फातिमा खिल उठीं और उसने कहा, क्या यह चिंतित होने का अवसर है ? बल्कि यह तो खुश होने की बात है कि अब आज से आप अमीरुल मोमिनीन बन गए। मगर फातिमा को क्या मालूम कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ इस बोझ को कितना भारी समझ रहे हैं। उनके दिमाग में अफ्रीका और स्पेन से लेकर रूस, चीन और सिंध के एक-एक व्यक्ति का विचार घूम रहा था। हर यतीम और अपाहिज का ख्याल सता रहा था। वह उस दिन को याद कर के काँप रहे थे जब सिंध का एक साधारण किसान ईश्वर के सम्मुख यह याचना करेगा कि प्रभू! उमर हमारा खलीफा था मगर हमारा कुछ ध्यान नहीं देता था, मेरे खेत में पड़ोसी की बकरी चर रही थी मगर उमर को मेरी कोई चिंता नहीं थी।

ये थे मुसलमानों के नए खलीफा, जिन्होंने फिर एक बार पूरी एक शताब्दी के बाद खुलफाए राशिदीन का उच्चतम आदर्श पेश किया।

एक गिलास पानी

हारून रशीद बनू अब्बासिया का पाँचवा खलीफा था जो १८ दिसम्बर ७८६ ई. को सिंहासन पर विराजमान हुआ। साहस और वीरता में अपना उदाहरण नहीं रखता था। दुश्मनों के मुकाबले में जब भी कभी निकलता विजय उसके चरण छूती। परास्त होना तो ऐसा मालूम होता है कि उसे मालूम ही नहीं था। दुनिया का यह तन्हा खलीफा है कि एक वर्ष विजय और दुसरे वर्ष हज, इस प्रकार उसने अपने शासनकाल में नौ हज किए, जिस वर्ष हज के लिए नहीं जाता उस वर्ष तीन सौ ईश भक्तों को हज का खर्च देकर हज कराता।

इस्लामी शास्त्र में हज बहुत ही बड़ा धार्मिक कर्तव्य है क्योंकि अगर किसी का एक हज ईश्वर ने स्वीकार कर लिया तो उसका परलौकिक जीवन सुधर गया। हारून रशीद की राज्य सीमा भी कुछ कम नहीं थी बल्कि पूरे इस्लामी इतिहास में उसकी और उसके बाद उसके बेटे मामून रशीद की राज्य सीमा का उदाहरण नहीं मिलता। उसके नाम से फ्राँस का बादशाह सलोमन भी घबराता था। यह सब कुछ होते हुए भी ईश भक्तों का बड़ा आदर सत्कार करता था। उनको अपने दरबार में बुलाकर बार-बार नसीहत करता और कभी-कभी तो ईश्वर की पकड़ से इतना भयभीत हो उठता कि रोते-रोते उसकी बुरी दशा हो जाती दाढ़ी आँसुओं से भीग जाती। एक बार हारून रशीद ने 'इब्ने समाक' को नसीहत करने के लिए अपने दरबार में बुलाया।

'इब्ने समाक' बहुत बड़े आलिम थे। ईश्वर के अलवा किसी से भयभीत होना नहीं जानते थे।

इब्ने समाक हारून रशीद के दरबार में पहुँचते हैं और उसको नसीहत करते हुए ये उपदेश होते हैं:

हे अमीरुल मोमिनीन ! कल आप अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे फिर आप के लिए स्वर्ग या नरक का फैसला होगा। इन दोनों के अलावा तीसरा और कोई ठिकाना नहीं।

इब्ने समाक यह कहते जाते थे और हारून रशीद की आँखों से आँसू बहते जाते थे। जिससे उनकी दाढ़ी भीग गई और उसमें से पानी टपकने लगा।

इस दशा को देखते ही बादशाह का वजीर फज़ल बिन रबी गुस्से से भर गया और उसने इब्ने समाक को संबोधित कर के कहा इब्ने समाक ! क्या तुम्हें इस बात का यकीन नहीं है कि अमीरुल मोमिनीन का सही ठिकाना स्वर्ग है।

लेकिन इब्ने समाक ने प्रधानमंत्री की बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया क्योंकि वे जानते थे कि ये लोग अपनी-अपनी झोली भरने के लिए चापलूसी की बातें करते हैं। इनके हृदय प्रेम-भावना से बिल्कुल खाली होते हैं, जब तक रोटी का टुकड़ा मिलता रहता है गुण गाते हैं जहाँ वह टुकड़ा छिन गया सब कुछ भूल जाते हैं। कितने दर्द के साथ कहना पड़ता है कि संसार ऐसे ही लोगों के चंगुल में फँसा हुआ है।

इब्ने समाक प्रधानमंत्री का विचार किए बिना कहने लगे, हे अमीरुल मोमिनीन ! ये लोग जो आज आप के आगे-पीछ लगे हुए हैं उस दिन कुछ काम नहीं आएंगे। इसलिए आप इनकी बातों में मत आ जाईए। जो कुछ तैयारी कर सकते हैं कल की तैयारी कर लीजिए।

यह सुनते ही फिर हारून रशीद पर भय छा गया और उसके नेत्रों से आँसू की धाराएं फूट निकलीं। इसी दशा में उसने सेवक से एक गिलास पानी माँगा।

अभी गिलास मुँह को भी न लगाने न पाया था कि इब्ने समाक ने पुकार कर कहा: “अमीरुल मोमिनीन” ! रुक जाईए और बताईए कि अगर आप ऐसे चटियल मैदान में हों जहाँ पानी नहीं मिल सकता तो आप इस एक गिलास पानी को कितने

मूल्य में खरीद लेंगे। हारून रशीद ने कहा:

“अपने आधे राज्य के बदले।” इब्ने समाक बोले: बहुत अच्छा। अब आप पी लीजिए। पीने के बाद फिर इब्ने समाक पूछते हैं:

हे अमीरुल मोमिनीन! गिलास का पानी तो आप ने पी लिया, इसके बाद अगर आपका पेशाब रुक जाए तो आप क्या करेंगे? और इसके इलाज में कितना खर्च करने को आप राजी होंगे। अमीरुल मोमिनीन ने कहा शेष आधा राज्य। आप ने कहा, हे अमीरुल मोमिनीन! विचार कीजिए कि जिस राज्य का मूल्य केवल एक गिलास पानी हो उस पर आदमी क्यों गर्व करे। इससे भी बढ़ कर मनुष्य की और क्या मूर्खता हो सकती है कि इतनी हकीर चीज के लिए इतराता फिरे। यह कह कर इब्ने समाक तो चले आए परंतु हारून रशीद बेहोश हो गए। कुछ लोगों को भय हुआ कि कहीं अमीरुल मोमिनीन का स्वर्गवास न हो जाए। चेहरे पर पानी छिड़का गया और हारून ने अपनी आँखें खोल दीं। वास्तव में आप की आँख तो अब खुली थी, अब तक आपका जीवन किस अंधकार में था, अब उससे पश्चाताप करने लगे। फिर जीवन का मार्ग इस प्रकार बदला कि बड़े-बड़े ईश भक्त भी आश्चर्य करने लगे। रातों की नींद हराम कर ली, सौ-सौ रक्कत नमाज़ पढ़ने लगे, जनता में न्याय का ऐसा प्रबंध किया कि बकरी और शेर एक घाट पर पानी पीने लगे। गरीबों और फकीरों के लिए राज्य कोष का द्वार खोल दिया। इसके अलावा प्रत्येक महीने एक हज़ार दिरहम अपनी जेब से दान पुण्य में खर्च करने लगे और देहान्त इस दशा में हुआ कि आखिरत के लिए बहुत कुछ कमा लिया था।

हसन बसरी का एक विचारात्मक पत्र

नेक दिल और ईश्वर से डरने वाले खलीफा, विद्वानों और ईश भक्तों का बड़ा आदर एवं सत्कार करते थे। उनको अपने दरबार में बुलाते और उनकी सेवा करते। स्वयं उनके घर भी जाते और जो कुछ बन पड़ता उनको भेंट देकर आते। क्योंकि यह सच है कि आदमी जितना साँसारिक कामों में फँसेगा उतना ही ईश्वर से दूर होता रहेगा, इसलिए यह बड़ी कठिन परीक्षा है कि मनुष्य दुनिया के कामों में फँसकर भी अपने ईश्वर को याद करता रहे। इसके लिए साधारण तरीका है कि खलीफा अपने समय का कुछ भाग संतों और ईश भक्तों में व्यतीत करे। उनसे नसीहतें हासिल करे, उनकी सेवा में आनन्द अनुभव करे, उनके लिए भोजन सामग्री तथा वस्त्र इत्यादी का प्रबंध करे और उनकी दुआएं हासिल करे।

इस मार्ग को हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने पा लिया था, जिसके कारण आप के दरबार में विद्वानों और ईश भक्तों का जम घटा लगा रहता था। उनकी सोहबत से आप लाभ उठाते थे। वह सदैव आप को आखिरत की याद दिलाते रहते जिसके कारण आप का शरीर तो साँसारिक कार्यों में लगा रहता परंतु हृदय ईश्वर स्मरण में मग्न रहता। इतने रंग-बिरंगे संसार के होते हुए भी आप के नेत्र आखिरत के ध्यान में आँसू बहाते रहते क्योंकि उस दिन की सफलता ही जीवन की सफलता है।

हज़रत हसन बसरी अपने समय के बहुत बड़े विद्वान और ईश भक्त थे। सारा इस्लामी संसार आप से परिचित था और आपका आदर करता था।

एक बार एक बहू बसरे में आया और लोगों से पूछा कि इस शहर में सबसे बड़ा विद्वान कौन है? लोगों ने कहा, हसन बसरी।

बहू ने कहा कैसे?

लोगों ने कहा, इसलिए कि वे हमारी दुनिया से बेपरवाह हैं उन्हें हमारे धन-दौलत से कोई सरोकार नहीं, मगर हम उनके इल्म के मुहताज हैं।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर भी हसन बसरी का बड़ा आदर करते थे। आप ने एक बार उनसे नसीहत करने की गुज़ारिश की तो आप ने यह पत्र उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के नाम लिखा:

हे अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह ने खलीफा को हर टेढ़ी राह से रोकने और ज़ालिम को जुल्म से मना करने के लिए बनाया है। अल्लाह ने खलीफा को निर्बल के लिए शक्ति, मज़लूम के लिए ढाल और चिंतित जनों के लिए आनन्द पहुँचाने वाला बनाया है। खलीफा उस चरवाहे की तरह है जो अपने पशुओं को उत्तम से उत्तम चारा खिलाता है और उनको हलाकत की जगहों से बचाता है। हिंसक पशुओं से सुरक्षित रखना और सर्दी, गर्मी से बचाना भी खलीफा का काम है।

हे अमीरुल मोमिनीन! खलीफा माँ-बाप के समान है जो अपनी संतान पर कृपा करते हैं, बड़े हों तो उनके लिए शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करते हैं। जब तक जीवित रहते हैं संतान के लिए कमाई करते हैं, मर जाते हैं तो उनके लिए छोड़ जाते हैं। हे अमीरुल मोमिनीन! खलीफा माँ की तरह होता है जो बड़े कष्ट के साथ बच्चे को पेट में लिए रहती है और बड़े कष्ट के साथ उसको जन्ती है, फिर अपना रक्त दूध बना कर बच्चे को पिलाती है। जब तक बच्चा स्वस्थ रहता है माँ भी प्रसन्न होती है जहाँ कोई तकलीफ पहुँची कि माँ तड़प उठती है।

हे अमीरुल मोमिनीन! खलीफा अनाथों का संरक्षक और निर्धनों का ढारस है। छोटे हों तो उनकी शिक्षा का प्रबंध करता है, बड़े हो तो उनकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

हे अमीरुल मोमिनीन! खलीफा का सामाजिक जीवन में वही स्थान है जो दिल का सारे शरीर में। जब तक दिल ठीक रहता है पूरा शरीर स्वस्थ रहता है जहाँ दिल खराब हुआ कि सारा शरीर दूषित हो उठा।

हे अमीरुल मोमिनीन! खलीफा ईश्वर की वाणी सुनता है और लोगों को सुनाता है वह पढ़ता है और लोगों को पढ़ाता है, वह अल्लाह की उपासना करता है और लोगों से उपासना कराता है। इसलिए हे अमीरुल मोमिनीन! आप उस सेवक की तरह न हो जाएं जिसको उसके स्वामी ने धन-दौलत और परिवार की रक्षा के लिए नियुक्त किया मगर उसने किसी की रक्षा नहीं की।

हे अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह ने बुरी बातों से रोका है और खलीफा को अपना प्रतिनिधि बनाया है मगर जब खलीफा बुरे काम करने लगे तो जनता की क्या दशा होगी।

हे अमीरुल मोमिनीन! मौत को याद कीजिए और सोचिए कि उस समय कोई आपका मित्र नहीं होगा, कोई आप का संरक्षक नहीं होगा, संसार का धन-दौलत कुछ काम नहीं आएगा। आप को जिस घर में रखा जाएगा वह बहुत तंग होगा, उसमें चिराग भी नहीं होगा। सब लोग आपको वहाँ छोड़कर चले आएंगे। उस समय के लिए सामग्री जुटाईए। फिर आपको कब्र से उठाया जाएगा और जो कुछ आप के दिल में होगा उसका भी हिसाब लिया जाएगा। इसलिए इस समय आप को मुहलत मिली है उससे लाभ उठाईए और उस दिन के लिए भी कुछ कमाई कीजिए जिसके बाद कमाने का अवसर नहीं मिलेगा।

हे अमीरुल मोमिनीन! जाहिलों और मूर्खों की तरह फैसला न करना और जनता के साथ अत्याचारपूर्ण व्यवहार न होने पाए। निर्बलों पर ज़ालिमों को मत चढ़ाना, क्योंकि वे किसी पर दया नहीं करते। इस प्रकार एक तो आप को अपना बोझ उठाना पड़ेगा, दूसरे इन मज़लूमों का। आप उन लोगों से धोखा मत खाईए जो आपको अज़ाब में डाल कर मज़े उड़ा रहे हैं, क्योंकि उनकी दुनिया तो बनेगी तो परंतु आखिरत बिगड़ेगी।

हे अमीरुल मोमिनीन! आप अपनी शक्ति की ओर मत देखिए बल्कि उस दिन का विचार कीजिए जब आप के पास कोई शक्ति नहीं रहेगी और अपनी पेशानी को

अपने प्रभु के सम्मुख रगड़-रगड़ कर आप क्षमा माँगते होंगे, उस दिन कोई आप की सहायता के लिए नहीं आएगा।

हे अमीरुल मोमिनीन ! यद्यपि मैं वैसे नसीहत नहीं कर सकता जैसी मुझसे प्रथम विद्वानों ने की थी, परंतु मैंने दिल में कुछ रखे बिना सब कुछ कह दिया। इसमें कुछ बातें आप को सख्त भी लगेंगी, लेकिन इन बातों को किसी हार्दिक मित्र की कड़वी दवा समझिए जो अपने साथी के उपचार के लिए देता है।

वस्सलाम

हसन बसरी

यह एक संत विद्वान का पत्र है जिसको उसने आठवीं शताब्दी के महान सम्राट के नाम लिखा था।

यह तुम्हारी पत्नी (बीवी) है

शैख सईद बिन मुसय्यिब मदीने के सबसे बड़े विद्वान थे, सारे मदीने वाले उनका आदर सत्कार करते थे, एक दिन शैख ने अपने विद्यार्थी से पूछा:

अबू बर्बा तुम तीन दिन तक क्यों अनुपस्थित रहे ? अबू बर्बा ने उत्तर दिया कि मेरी पत्नी का देहांत हो गया था, उसको दफन करने और शोक मनाने में तीन दिन गुजर गए। शैख ने (दुआ के बाद) फरमाया: तो फिर तुम ने दूसरी शादी कर ली। अबू बर्बा की आँख से दो-तीन बूँदें गिर पड़ती हैं, भराई हुई आवाज़ में कहता है : शैख मैं एक निर्धन विद्यार्थी हूँ, भला कोई मुझसे शादी के लिए भी तैयार होगा ?

शैख ने फरमाया: कि तुम्हारे पास क्या है ? अबू बर्बा ने उत्तर दिया: तीन दिरहम (बारह आना)। शैख ने फरमाया: मैं अपनी बेटी का विवाह करना चाहता हूँ क्या तुम राज़ी हो ? अबू बर्बा ने उत्तर दिया: धन्य हो हुजूर का, आप की आज्ञा सिर-आँखों पर।

शैख ने निकाह का खुत्बा पढ़ कर दो दिरहम (आठ आना) के बदले महर में मैंने अपनी बेटी की शादी तुम से कर दी, बोलो तुम्हें कुबूल है ? अबू बर्बा ने कहा: जी हाँ, कुबूल है, मज्लिस खत्म हो गई, शैख अपने घर चले गए।

बिस्तर पर पड़ कर अबू बर्बा आज की पूरी कहानी पर विचार करने लगा, लेकिन उसको किसी प्रकार विश्वास नहीं आ रहा था कि आज उसकी शादी हो गई है। वह भी शैख की बेटी से जो उस समय इस्लामी दुनिया में सबसे बड़ी आलिमा थी। बड़े-बड़े विद्वान उसके पास विद्या सीखने आते थे। इन बातों को सोच-सोच कर वह परेशान हो रहा था कि क्या वास्तव में मैं शैख कि इस बुद्धिमान बेटी का पति हूँ ?

दरवाज़े से आवाज़ आई, अबू बर्बा ! और वह चौक गया, नाम पूछने पर आने वाले

ने नाम बताया। उसकी समझ में कुछ नहीं आया, वह सोचने लगा इतनी रात गए कौन सईद आया है? एक—एक करके सभी सईद उसको याद आने लगे, लेकिन “सईद” बिन मुसय्यिब किसी प्रकार याद नहीं आ रहे थे, क्योंकि चालीस साल से शैख को किसी ने घर और मस्जिद के अलावा दूसरे स्थान पर नहीं देखा था। अंत में अबू बर्बा ने फाटक खोल दिया, क्या देखता है कि शैख सईद बिन मुसय्यिब खड़े हैं।

अबू बर्बा परेशान हो गया, उसने विचार किया कि शायद शैख ने अपनी बेटी से उसका विवाह कर के गलत किया है, अब पश्चाताप करने आए हैं। इतने में शैख ने फरमाया: ‘अबू बर्बा!’ तुम्हारी शादी हो गई है अब मुझे यह बात पसंद नहीं कि तुम मियाँ-बीवी अलग-अलग रहो, देखो यह तुम्हारी बीवी है। अपनी बेटी का हाथ अबू बर्बा के हाथ में थमा कर शैख अपने घर को चल दिए।

यह है हमारा इस्लामी इतिहास जिस पर हमको गर्व है। लेकिन आज के गैर मुस्लिम हमारी दुर्दशा को देख कर हमारे धर्म को बदनाम कर रहे हैं। इसमें केवल उनकी गलती नहीं है बल्कि यह हमारी इस्लाम से दूरी का ही कारण है। अगर आज भी हम अपने इस्लाम को सही-सही अपना लें तो उसकी ज्योति से सारी धरती प्रकाशित हो जाएगी, मुझे मुसलमान भाईयों से आशा है कि वे दुबारा इस्लाम और इस्लामी इतिहास का अध्ययन करेंगे और उसके अनुसार अपना जीवन बिताने का प्रयत्न करेंगे। ईश्वर उनकी और हमारी कामनाओं को पूरा करे!!

मदीने में रमज़ान का स्वागत

यह सन १९६६ ई. की बात है, जब मैं मदीने पहुँचा। पहली रमज़ान को मदीने में बड़ी चहल-पहल थी। दुकानें सजी हुई, सड़कें और गलियाँ भरी हुई, प्रकाश का अनोखा प्रबंध, जिसे देखने से जान पड़ता था कि कोई श्रेष्ठ व्यक्ति इस नगर में प्रवेश करने वाला है यह किसी महान दिवस का स्वागत किया जाने वाला है। जिनके पास रेडियो है वे खोले हुए किसी नए समाचार की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

बात अनोखी है, न तो आज बी.बी.सी. से समाचार सुना जा रहा है न अमरीकी सभ्यता पर वार्तालाप हो रही है, न इस्त्राईल के अत्याचारों का वर्णन है बल्कि रेडियो की सुई किसी मीटर पर है तो वह है 'सौतुल इस्लाम' (इस्लाम की वाणी) मक्का पर है। थोड़ी देर के इन्तिजार के बार रियाज़ के गर्वनर की आवाज़ आई जो सऊदी अरब के बादशाह को इन शब्दों में मुबारकबाद दे रहे थे।

अल्लाह आप को रमज़ान का माह मुबारक करे और भविष्य में बार-बार आप को आनन्दित होने के अवसर प्रदान करे।

यह सुनना था कि बच्चे खुशी से उछलने लगे, लोग एक-दूसरे को रमज़ान की बधाई देने लगे। नबी की मस्जिद में लगा हुआ लाल बल्ब जलने लगा, सलअ नामी पहाड़ से धमाके होने लगे, जिसकी गम्भीर आवाज़ से पूरा मदीना शहर गूँजने लगा। यहाँ तक कि दूर-दूर फैले हुए देहाती भी रमज़ान के आने से बाखबर हो गए। यह चहल-पहल, यह धूम-धाम, यह सजी-सजाई दुकानें अभी खुली ही पड़ी थीं कि ईशा की अज़ान वातावरण में गूँजने लगी, आज इस स्वर में भी एक आकर्षण शक्ति थी, जो सुनता था वही मदमत्त खड़ा हो जाता था और धीमी-धीमी आवाज़ में बार-बार अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर दुहराता था।

और फिर सड़कों पर चलने—फिरने वाले एक-एक कर के मस्जिद की ओर

बढ़ने लगे। यहाँ तक कि वही सड़क जो अब से कुछ देर पहले भरी पड़ी थी वीरान और सुनसान हो गई। वे दुकानें जिन पर लोगों की भीड़ थी खाली हो गई, उनमें रौशनी वैसी ही हो रही थी, दरवाज़े वैसे ही खुले थे, बाहर लटकी हुई वस्तुएं वैसी ही पड़ी थीं। मगर न बेचने वालों का पता है न खरीदने वालों का। ऐसा जान पड़ता था जैसे अलाउद्दीन के चिराग का करिश्मा हो। दुकानें सजी-सजाई हैं, सड़के साफ-सुथरी हैं, मगर किसी मनुष्य का नामो निशान भी दिखाई नहीं दे रहा है।

बिल्कुल यही काल्पनिक दृश्य आज मदीने का है, अगर कोई अजनबी इधर-उधर निकल आए तो हैरान हो जाएगा, चकित होने वालों में से मैं भी एक हूँ, क्योंकि आज प्रथम बार अलाउद्दीन नामी पाठ का चित्रण अपनी आँखों से देख रहा हूँ, कभी-कभी मुझे अपने ऊपर शंका होने लगती है कि क्या मैं स्वप्न में अलाउद्दीन की दुनिया में तो नहीं आ गया हूँ?

इन हृदयांकित दृश्यों को देखने के बाद जब मस्जिद नबवी में गया तो तिल धरने की जगह नहीं थी। अंदर के दोनो आँगन और मस्जिद के दोनो भागों में मनुष्यों का समुद्र ठाठें मार रहा था। कोई नमाज में लीन है तो कोई कुरआन की तिलावत में मग्न है, कहीं महान विद्वानों का व्याख्यान हो रहा है तो कहीं विद्यार्थियों का समूह अध्ययन में लगा हुआ है। अर्थात् सब अपने परमात्मा की याद में लीन हैं। चेहरों पर प्रसन्नता का दिव्य प्रकाश दौड़ रहा है।

अब इशा के लिए इकामत होने लगी, लोग अपनी-अपनी कतारें ठीक कर रहे हैं लोग क्षण भर में इस प्रकार खड़े हो गए जैसे फौजी बैंड सुन कर सम्मोहित रह जाएं। ऐसा इसलिए हुआ कि ये लोग किसी नेता के सम्मुख नहीं, किसी शासक या राष्ट्रपति के स्वागत में नहीं बल्कि अपने ईश्वर के आगे खड़े हैं, जो हृदयों में उठने वाले विचारों से भी परिचित है। इमाम साहब अल्लाहु अकबर कह कर हाथों को सीने पर बाँधे पालनहार की याद में मग्न हो गए। ऐसा ज्ञात होता था कि इन लोगों को दुनिया से कोई मतलब नहीं। किसी सहाबी ने खूब कहा था:

हम लोग जब महामानव हजरत मुहम्मद ﷺ के पास बैठते हैं तो इतने अदब और आदर-सत्कार से बैठते हैं अगर पक्षी हमारे सिरों पर बैठ जाएं तो वे हम को जीवित न समझें। अर्थात् हम तनिक भी हिलते-डुलते नहीं बिल्कुल इसी प्रकार आज असंख्य मनुष्यों का समूह अपने ईश्वर के सम्मुख खड़ा है।

दोबारा अल्लाहु अकबर की आवाज आई और सारे लोग रुकुअ में चले गए। इसमें बड़े-बड़े जज हैं, गर्वनर और मजिस्ट्रेट हैं, इंस्पेक्टर और थानेदार हैं, धनवान और निर्धन हैं, बलवान और निर्बल हैं, कुली और मज़दूर हैं, बूढ़े और अपाहिज हैं अर्थात् हर प्रकार के लोग हैं, सब ईश्वर के आगे झुके हुए हैं। न छोटे-बड़े का अंतर है न धनी-निर्धन का भेद है न शक्तिशाली और दुर्बल में फर्क है।

यह है इस्लामी सभ्यता ! यह है इस्लामी समानता ! यह है इस्लामी शिक्षा ! क्या है कोई जो इस्लाम का अध्ययन करे ? क्या है कोई जो उसका जीवन मार्ग बताए ? क्या है कोई जो इसका प्रचार करे ?

अभी और देखिए ! अब सब लोग अपने पालनकर्ता के सम्मुख गिर पड़े हैं। न किसी को सुंदर कपड़ों का ख्याल है न बड़प्पन का विचार है। बल्कि वही लोग जो अब तक सिर झुकाएं खड़े थे, ईश्वर की आज्ञा पाते ही उसके आगे अपना सिर रख कर झुकाए खड़े थे, ईश्वर की आज्ञा पाते ही उसके आगे अपना सिर रख कर उसकी तौहीद बयान करने लगे, उसकी बड़ाई का इकरार करने लगे, उससे रो-रोकर दुआएं करने लगे, उसकी उपासना करने में लीन हो गए। नेकी के मार्ग पर चलने का वचन देने लगे और बुरी राहों पर चलने से पनाह माँगने लगे। इस प्रकार यह जनसमूह घंटों नमाज़ पढ़ता रहा, चार रकअत फर्ज़ पढ़ी, बीस रकअत तरावीह पढ़ी और तीन रकअत वित्र।

नमाज़ खत्म होते ही फिर शहर में चहल-पहल शुरू हो गई और यह रात के आखिरी भाग तक जारी रही।

यहाँ के लोग सहरी खाकर सुबह की नमाज़ पढ़ते हैं। दुकानें बंद हो जाती हैं। दफ्तर और ऑफिस का समय बदल जाता है अर्थात् पूरे वातावरण पर एक सन्नाटा छा जाता है।

पूरे दिन न कोई होटल खुला मिलेगा न चाए की दुकान खुली मिलेगी न कोई सड़क पर सिगरेट पीता दिखाई देगा न कोई गाली-गलौज करता नज़र आएगा। अर्थात् पूरा शहर शांतिमय समुद्र की भाँति लहराता हुआ नज़र आता है।

दोपहर की नमाज़ के बाद फिर कुछ दुकानें खुली हुई दिखाई देती हैं। अधिकतर लोग खाने-पीने की वस्तुएं खरीदते हैं। बाकी दुकानों पर दुकानदार कुरआन ही पढ़ता दिखाई देता है।

हाँ अस्त्र की नमाज़ हुई कि फिर बहार वापस आ गई। अब फिर सड़कों चहल-पहल प्रारम्भ हो गई, नबी की मस्जिद में व्याख्यान होने लगा, विद्यार्थी विद्या का अध्ययन में लग गए, मानो थके हुए मुसाफिर ने थोड़ी देर सुस्ता कर सफर प्रारम्भ कर दिया हो।

सूर्यास्त होने से एक घंटा पहले मस्जिद भरने लगी दस्तरखान बिछने लगे, लोग अपने घरों से इफ्तारी लाने लगे, सुराहियों में पानी भरने लगे। मोटरों की दौड़-धूप, कारों की आवाज और बसों की इंजनों के शोर से सारा शहर गूँज उठा।

अब फिर न किसी बड़े की बड़ाई है न छोटे की छोटाई, हर रोज़दार चाहे जहाँ अपना फल वगैरह लेकर बैठ जाए। जिधर से गुज़रिये पधारिये- पधारिये ही की ध्वनि सुनाई देती है। सूर्यास्त होने का समय ज्यों-ज्यों निकट आ रहा है लोगों के उतसाह उतने ही बढ़ रहे हैं। समुद्र की मौजें तेज होती चली जा रही हैं। जिधर देखिए मनुष्य ही मनुष्य। मानों एक विशाल पुष्पवाटिका में खिले हुए फूल पवन के झोकों से आपस में गले मिल रहे हैं। बाद में मालूम हुआ कि लोग बहुत दूर-दूर से नबी ﷺ की मस्जिद में रोजा खोलने आते हैं।

अब सूर्यास्त हो गया, लाल बत्ती जल गई। धमाके की गम्भीर आवाज़ भी कानों में गूँजने लगी। फिर क्या था दिन भर के रोज़ेदार बंदे अपने अल्लाह की आज्ञा पाते ही रोज़ा खोलने लगे। न कोई छीना-झपटी है न कोई हंगामा, बल्कि लाखों पुरुषों और स्त्रियों का समूह शांतिपूर्वक रोज़ा खोल रहा है। केवल दस मिनट के अंदर-अंदर रोज़ा खोल कर नमाज़ के लिए तत्पर हो गया है।

वमजान के पूरे माह मैं अपनी आँखों से यह दृश्य देखता रहा। जितना भी मैंने इस विषय पर विचार किया मेरा मस्तिष्क उतना ही चकराता रहा। अंत में इस नतीजे पर पहुँचा कि यह एक ऐसी जाति की सभ्यता है जिसके अंग में ईश्वरवादिता और शिष्टाचार भर दिया गया है। इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए कि इसकी सच्चाई का अच्छी तरह अध्ययन करे।

एक वे भी थे।

रात अपनी काली चादर को समेट कर रुख्सत हो रही थी। आकाश पर झिलमिलाते तारे डूबने की तैयारी कर रहे थे। ऐसा महसूस होता था कि आज आकाश पर उदासी हुई है, जिसके गमगीन चेहरे किसी की जुदाई की खबर दे रहे हैं। इतने में वातावरण के इस सन्नाटे को तोड़ते हुए मोअज़्ज़िन की आवाज़ गूँजी, मगर उसकी आवाज़ में भी बला का दर्द था, सुनेन वाले अपने बिस्तरों से उठ पड़े और वजू करके पुकारने वाले की ओर भागने लगे।

जब मस्जिद आदमियों से भर गई तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हू अपने कमरे से निकले और नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हो गए। अल्लाहु अकबर कर कर आप ने हाथ बाँध लिये और लोगों ने भी हाथ बाँध लिए।

लोग कुरआन सुनने की प्रतीक्षा करने लगे, लेकिन कुरआन की जगह यह सुन कर आश्चर्य में डूब गए: 'उसने मुझे मार डाला' और फिर आप ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ का हाथ पकड़ कर आगे बढ़ा दिया।

अब्दुर्रहमान नमाज़ पढ़ाई, नमाज़ खत्म होने के बाद आप ने इब्ने अब्बास से पूछा, देखो किसने मुझ पर हमला किया है? इब्ने अब्बास ने देखने के बाद बताया 'मुगीरा का सेवक अबू लू-लू ने।' अब आप को बड़ा आश्चर्य हुआ, फरमाया : मैंने उसके साथ भलाई की और उसने यह बदला दिया।

आप को उठाकर घर ले जाया गया। हमला इतना सख्त था कि ज़िंदगी की उम्मीद नहीं रही। लोग भविष्य के खलीफा के लिए चिंतित हो उठे। अब खलीफा के चुनाव का प्रश्न उठा तो आप ने छः व्यक्तियों की एक कमेटी बना दी, जिसमें अली, उस्मान, तल्हा, जुबैर, इब्ने औफ और साद बिन अबू वक्कास रज़ीयल्लाहु अन्हुम सम्मिलित थे, और यह फरमाया कि जिस एक पर लोगों की

राए ठहरे वह मेरे बाद खलीफा होगा।

हज़रत मुगीरा और दूसरे सहाबा ने कहा: हे अमीरुल मोमिनीन! अपने बेटे अब्दुल्लाह को खलीफा बना दीजिए, हम उनसे खुश हैं, यह सुन कर फरमाया: हे लोगों! हम को तुम्हारे धन से कोई सरोकार नहीं, और न तुम्हारे खलीफा बनने की ज़रूरत, अगर इसमें कुछ भलाई थी तो हम को मिल चुकी है, और अगर हमें कुछ गलती हुई है तो क्या यह काफी नहीं कि उमर के कुटुम्ब का एक व्यक्ति अपने परमेश्वर के सम्मुख खड़ा होकर उसका हिसाब दे।

फिर आप ने बड़े ही दुख भरे स्वर में कहा:

हे प्रभु! मैं तुझ से वंदना करता हूँ कि मेरी भलाईयों और बुराईयों को बराबर कर दे। अगर मैं प्रलय के दिन खिलाफत का हिसाब देकर बच जाऊँ तो अपने आप को बड़ा ही भाग्यशाली समझूँगा।

यह थी मुसलमानों के अमीर की भावनायें, जिसने खलीफा बनने के बाद रात की नींद हराम कर ली। भूखों का खाना पकाया, अपाहिजों और बेवाओं के घर झाड़ू लगाए, अपने बाल-बच्चों के लिए बैतुलमाल से उतना लिया जितना एक आम व्यक्ति को दिया। अपने सेवकों के संग भी समानता का वह व्यवहार किया, जिसकी मिसाल लाने में इतिहास थक गया, जिसने जीवन में प्रत्येक कदम यह सोच कर उठाया कि किसी बड़ी सत्ता के समक्ष उत्तर देना है। वह मृत्यु के समय यह कामना करता है कि प्रभु मेरी भलाईयों और बुराईयों को बराबर कर दे।

और आगे देखिए.....।

आप ने अपने बेटे अब्दुल्लाह को बुला कर कहा, बेटे! हज़रत आइशा के पास जाकर कहो कि उमर आप को सलाम कहता है, हाँ, अमीरुल मोमिनीन मत कहना, क्योंकि अब मैं मुसलमानों का अमीर नहीं हूँ और फिर कहो, उमर अपने दोनों साथियों के पास दफन होना चाहता है (अर्थात् हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ और

हज़रत अबू बक्र रज़ीयल्लाह अन्हु) अब्दुल्लाह ने हज़रत आईशा से कहा तो उन्होंने उत्तर दिया, उस स्थान को तो मैंने अपने लिए चुन रखा था, परंतु आज उमर को अपने ऊपर तरजीह दूँगी।

अब्दुल्लाह वापस आकर हज़रत उमर के पास गए और यह खुशखबरी सुनाई, जिसको सुनते ही आप का चेहरा चमक उठा। आप लेटे हुए थे उठकर बैठ गए और फ़रमया :

इससे बड़ी मेरे लिए कोई बात नहीं है कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बक्र के निकट में दफन होऊँ। और फिर कहा:

जब मैं मर जाऊँ तो फिर एक बार हज़रत आईशा से कहों कि उमर अपने दोनों साथियों के पास दफन होना चाहता है, अगर आज्ञा दें तो ठीक है, नहीं तो आम मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफन कर देना।

ये थे हज़रत उमर, जिनके पैरों तले दुनिया का दो तिहाई भाग पड़ा था, मगर मरने के पश्चात भी दो गज ज़मीन के लिए सवाल कर रहे थे। यहाँ तक कि दो-दो बार पूछने के पश्चात आप ने हज़रत आईशा के हुजरे में दफन होना पसंद किया।

इस्लामी इतिहास के ये सुनहरे पन्ने हैं, चाहिए कि हर व्यक्ति इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़े और विचार करे कि इसी पृथ्वी पर कुछ ऐसे भी शासक रह चुके हैं जिनका एक-एक पल ईश्वर की याद में व्यतीत था जो अपने हर काम के लिए ईश्वर के सम्मुख उत्तरदायी थे। कहते हैं कि गाँधी जी ने सफल राज्य की परिभाषा में इसी शासन काल का उदाहरण प्रस्तुत किया था।

वे भी व्यापार करते थे

आज ईमानदारी खत्म होती जा रही है। बाज़ार से लेकर सरकारी विभागों तक में बेईमानी आम है। बाज़ार में दूध, मलाई, घी और तेल से लेकर सोना-चाँदी तक कोई चीज़ भी तो असली और शुद्ध नहीं मिलती। दवाईयाँ तक नकली बिक रही हैं रहे विधान व नियम तो वे पुस्तकों की शोभा बने हुए हैं। कारोबार और व्यापार में उनका कोई दखल नहीं है। इस्लाम ने मानव जाति को दो विश्वास दिए हैं। अल्लाह (ईश्वर) पर विश्वास और आखिरत में पूछताछ का विश्वास। जब मानव जीवन पर इन विश्वासों का प्रभाव था उस समय की ईमानदारी का पैमाना क्या था ? इसे निम्न घटनाओं में पढ़िए:

१ . एक व्यक्ति अपना ऊँट बेचने के लिए आया। ऊँट के पाँवों में कोई ऐब था। उसने ऊँट को एक व्यक्ति के हाथों ३०० दिरहम में बेच दिया। वहाँ एक सहाबी हज़रत वासिला इब्ने असका रज़ीयल्लाहु अन्हु मौजूद थे। पहले तो उनका ध्यान इसे खरीदने और बेचने की ओर नहीं गया पर जब खरीदार ऊँट लेकर चला गया तो उनको याद आया कि ऊँट के पाँवों में ऐब है। वे दौड़े और खरीदार से मिलकर उसे बाता दिया कि ऊँट ऐबदार है और ऊँट को वापस लौटा दिया। ऊँट वाले ने कहा:

आप को क्या पड़ी थी कि आप ने मेरा सौदा खराब कर दिया।

उन्होंने फरमाया: हज़रत मुहम्मद ﷺ का कथन है कि यह सही नहीं कि कोई चीज़ बेची जाए और खरीदार पर उसका ऐब ज़ाहिर न किया जाए और उस व्यक्ति के लिए भी सही नहीं कि जो माल के ऐब को जानता हो पर खरीदार को न बताए। हुज़ूर ﷺ ने हम से इस का वचन लिया है कि लोगों का हित चाहें और उनके साथ अच्छा व्यवहार करें।

२. बसरा के एक व्यापारी को उसके सेवक ने सोस नगर से यह खबर दी कि इस साल गन्ने की फसल खराब हो गई है, यह बात किसी पर प्रकट न हो वरना चीनी की कीमत चढ़ जाएगी। व्यापारी ने सेवक के मश्विरे से बहुत सी चीनी खरीद कर रख ली और जब उसे एक व्यक्ति के हाथ बेचा तो तीस हजार दिरहम का फाएदा हुआ।

जब यह सौदा हो चुका तो व्यापारी को ख्याल आया कि उसके लिए यह सही न था कि गन्ने की फसल को छिपा कर इस-इस तरह मुनाफा उठाया जाए। ऐसा कर वह तीस हजार दिरहम लेकर उस व्यक्ति के पास गया, कहा, यह रकम वापस ले लो। उसने कारण पूछा तो कारण बता दिया। उसने कहा, जो हो, अब यह रकम आप की हो चुकी, व्यापारी के आग्रह पर भी उसने यह रकम वापस न ली, तो वह वापस चला गया। रात में उसकी अन्तरात्मा ने उसे झिझोंड़ना शुरू किया। वह सुबह फिर खरीदार के पास गया और उसका मन उसी समय शांत हुआ जब खरीदार ने रकम वापस ले ली।

३. हज़रत सकती सिरी (रहिमहुल्लाह) ऊँचे दर्जे धर्मात्मा होने के बावजूद व्यापार करते थे। उन्होंने अपना यह नियम बना लिया था कि ३% से अधिक नफा न लिया करेंगे। एक बार उन्होंने साठ दिरहम के बादाम खरीदे। इसका भाव चढ़ गया। एक दलाल बादाम का सौदा करने आया, आप ने कहा, मैं इस शर्त पर यह सौदा तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ जब तुम इसे ६३ दिरहम से ज्यादा में न बेचो। उसने कहा, अब तो १०० का माल ही है। आप ने फरमाया: मैं अपने नियम को तोड़कर अधिक मुनाफा नहीं ले सकता।

४. हज़रत मुहम्मद इब्ने मन्कदिर (रहिमहुल्लाह) बहुत बड़े धर्मात्मा थे। कपड़े की दुकान करते थे। उनकी गैर हाजिरी में उनके शिष्य ने ५ रु. वाला थान १० रु. में बेच दिया। आप दुकान पर आए और यह बात मालूम हुई तो आप खरीदार की खोज में निकले, आखिर भेंट हो ही गई। आप ने फरमाया: जो थान तुमने खरीदा है

वह १० रु. का है। या तो तुम ५ रु. वापस ले लो या फिर साथ चलें मैं तुम्हें १० रु. वाला थान दूँ। आखिर उसके ५ रु. वापस कर दिए। खरीदार चकित था कि वह कौन व्यक्ति है। लोगों ने जब आप का परिचय कराया तो आप का परिचय कराया तो समझ में आया।

तब और अब

शाम का समय था। पैगम्बरे इस्लाम ﷺ का दरबार लगा हुआ था। उसी समय एक गरीब व्यक्ति जो बेहद भूखा था, दरबार में हाज़िर हुआ। हुज़ूर ﷺ के करीब पहुँचकर उसने निवेदन किया, ऐअल्लाह के रसूल! मैं बहुत भूखा हूँ कुछ खिलवाईएगा? हुज़ूर ने उसे तसल्ली दी और घर में पूछा क्या कुछ खाना है? जवाब मिला, पानी के सिवा कुछ भी नहीं है।

जवाब सुन कर बड़ी चिंता में पड़ गए। तभी कुछ सोच कर आप ने अपने सहाबा की तरफ़ रुख कर के कहा, कोई है जो मेज़बानी का सौभाग्य हासिल करे और इस भूखे को खाना खिलाए?

एक सहाबी जिनका नाम अबू तलहा था, उठे और बोले, हुज़ूर मैं हाज़िर हूँ, मैं इन साहब को अपने साथ ले जाने की इजाज़त चाहता हूँ। हुज़ूर ने इजाज़त दी और अबू तलहा मेहमान को अपने घर ले गए, उसे घर के दरवाज़े पर खड़ा कर के खुद अंदर पहुँचे और अपनी बीवी से पूछा, क्या खाना तैयार है? अरे, आज इतने सवेरे कैसे भूख लग गई, खैरियत तो है? बीवी ने हैरत से कहा। खाना मुझे नहीं चाहिए, बल्कि मेहमान को चाहिए जिसे मैं दरवाज़े पर खड़ा कर आया हूँ। उफ़, ओह! लेकिन आज तो घर में सिर्फ़ बच्चों के लिए खाना है।

ओह! यह तो बुरी खबर सुनाई तुमने, अबू तलहा ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा, मेहमान हमारे घर से भूखा लौट जाए इससे बढ़कर दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

तभी एकाएक उन्हें एक तरकीब सूझी, मुस्कराते हुए उन्होंने कहा, सुनो, ऐसा करो बच्चों को तुम बहला कर सुला दो और जब वे सो जाएं तो खाना मेहमान के सामने लाकर रख देना। लेकिन खाना तो सिर्फ़ एक आदमी के लिए पूरा हो

सकता है जब कि मेज़बान को यानी हम को मेहमान का साथ देना जरूरी है। तुम इस बात की फिक्र न करो मेरे दिमाग में एक अच्छी तरकीब आ गई।

वह क्या ? बीवी ने आश्चर्य से पूछा। देखो जब हम खाने के लिए बैठेंगे उस समय तुम्हारा यह काम होगा तुम बत्ती बढ़ाने के बहाने चिराग गुल कर देना और। बस, बस मैं समझ गई, अच्छी तरकीब है।

तब कुछ देर के बाद जब बच्चे सो गए तो खाना परोसा गया और जैसा कि दस्तूर था मेहमान और मेज़बान एक साथ खाने के लिए बैठे। खाना शुरू करने के थोड़े ही समय बाद चिराग गुल कर दिया गया और तब मेज़बान (अबू तल्हा) अपना हाथ खाने तक ले जाकर ऐसे ही झूठ-मूठ खाना खाने जैसी आवाज़ करके यह जाहिर करने लगे कि वे खाना खा रहे हैं। इस प्रकार मेहमान ने पेट भर खाना खा लिया और मेज़बान ने इसे अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझकर संतोष की साँस ली।

इच्छाओं का अंतिम क्रेन्द

आज से हजारों साल पहले संसार के एक कोने में एक अनोखा इन्किलाब हो रहा था। ईश्वर का एक भक्त जो अपने निर्बल जीवन के अलावा किसी दूसरी चीज का मालिक नहीं था, यहाँ तक कि इसके माँ-बाप की शीतल छाया भी सिर से उठ चुकी थी, वह देखता है कि उसके आस-पास का मनुष्य बड़ी दुर्दशाओं में साँस ले रहा है। कहीं अत्याचार का बोलबाला है तो कहीं मूर्ति पूजा जैसे अंधविश्वास।

इन विभिन्न प्रकार की बुराईयों को देख कर वह मनुष्य उद्धार का बीड़ा उठाता है। यद्यपि वह निर्बल है, निर्धन है, निःसहाय है, परंतु उसके मन में अपने पालनहार का विश्वास है। उसे यकीन है कि उसका परमात्मा उसकी सहायता करेगा।

यह केवल उसके देश ही की दुर्दशा नहीं थी बल्कि उसके पड़ोसी राज्य इराक और शाम में भी यही सारी की सारी बुराईयाँ प्रचलित थीं, इंसान, इंसान से लड़ रहा था। आपस में पशुओं जैसा बरताव कर रहा था। वह चोरी, डकैती, मूर्ति पूजा और पता नहीं, किन-किन बुराईयों में लिपटा हुआ था।

स्वयं भारत जिसका कण-कण किसी न किसी ऋषि और मुनि का साक्षी है, जिसको इस बात पर गर्व है कि उसका देश ईश संदेष्टाओं का केन्द्र रहा है और धर्मपालन जिसके वासियों की मुख्य विशेषता है। परंतु समय के साथ-साथ उनकी शिक्षाएं भी लुप्त हो गई यहाँ तक कि वह समय आ गया जब ईशवाणी से भारत की धरती खाली हो गई, रामायण और वेदों का नाम तो शेष रह गया, परंतु उनकी वास्तविक शिक्षाओं को बदल दिया गया, अनेकेश्वरवाद ने अपना अधिकार जमा लिया, मूर्ति पूजा हिंदुस्तान की सभ्यता बन गई।

ऐसे अंधकारमय वातावरण में एक ईश भक्त पैदा हुआ। चालीस वर्ष तक मानव सुधार के मार्ग सोचता रहा। अंत में ईश्वर ने अपनी दया से कयामत तक के लिए

सम्पूर्ण मानव जाति की रहनुमाई के लिए उसे चुन लिया।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि जब उसने अपनी बिगड़ी जनता को सुधारने का बीड़ा उठाया तो वे लोग उस पर और बिगड़ गए। उसको विभिन्न प्रकार से सताने लगे। उसके मार्ग में काँटे बिछाए गए। उसको सामाजिक सम्बंध से अलग कर दिया गया। उसको पागल, जादूगर और पता नहीं कितने नामों से बादनाम करने की कोशिश की गई। परंतु वह यह सब कुछ सहता रहा और ईशवाणी लोगों तक पहुँचाता रहा, यहाँ तक कि उसकी ही जाति ने उनके जीवन का अंत करने का षड्यंत्र रचा तो वह ईश्वरीय आज्ञानुसार ईश्वर की रक्षा में मातृभूमि त्याग कर एक-दूसरे शहर में बस गया। जहाँ वह दस साल के भीतर ईशवाणी को सम्पूर्ण मानव जाति तक पहुँचा कर ईश्वर के पास चला गया।

आज उसकी शिक्षाओं पर लगभग चौदह सौ वर्ष बीत रहे हैं, परंतु उसकी सत्यता का सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि आज भी वह पुस्तक जो उसके द्वारा उतरी थी ज्यों का त्यों मौजूद है। एक शब्द का बल्कि एक अक्षर का भी अंतर नहीं पाया जाता। यही कारण है कि अब एक अरब से अधिक लोग उसको अपना पैगम्बर और संदेष्टा मान चुके हैं। और अपनी आन्तरिक भावनाओं का वर्णन कुछ इस प्रकार करते हैं।

'हे ईश्वर के अंतिम संदेष्टा! अगर आप न पधारते तो आज भी मानव जाति अंधकार के समुद्र में फंसी रहती और वह शांति के मार्ग से परिचित न हो पाती। वह ऐकेश्वरवाद के स्थान पर अनेकेश्वरवाद को अपनाए होती और ईश्वर की प्रसन्नता से प्रलय तक वंचित रहती। आप के इस परोपकार का हम क्या बदला दें। हम निर्धन हैं, निःसहाय हैं, निर्बल हैं, इसलिए हमारी ओर से सलाम ही स्वीकार कीजिए।'

सम्भव है अब आप को ज्ञात हो गया कि वह कौन सा नबी है? जी हाँ, वे

मुहम्मद ﷺ हैं। जिनका लाया हुआ धर्म ही अब मानव इच्छाओं का अंतिम केन्द्र है। उसी में हमारे साँसारिक तथा परलोकिक जीवन की सफलता है। इसलिए आईए उसके लिए हुए धर्म का अध्ययन करें, कहीं ऐसा न हो कि हम हिरन की तरह कस्तूरी की खोज में चमन-चमन भटकते रहें जब कि कस्तूरी स्वयं उसकी नाभी में लगी हुई है।

कुरआन जगत प्रसिद्ध विभूतियों की नज़र में

गाँधी जी ने कुरआन का अध्ययन करने के बाद कहा: “कुरआन का अनेकों बार मैंने ध्यान पूर्वक अध्ययन किया। सच्चाई और अहिंसा की शिक्षा उसमें देख कर मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हुई।”

श्रीमती सरोजनी नायडू ने पहली जनवरी १९४७ ई. को कलकत्ता में इस महान ग्रंथ के बारे में अपने विचार यों व्यक्त किए: “कुरआन मजीद शिष्टाचार और न्याय का घोषणा पत्र है। आज़ादी का चार्टर है। व्यवहारिक जीवन में सत्य और न्याय की शिक्षा देने वाली कानून की महान पुस्तक है। कुरआन के अलावा कोई अन्य धार्मिक पुस्तक जीवन के सारे ही मामलों और पहलुओं की व्यवहारिक व्याख्या और हल पेश नहीं करती।”

नेपोलियन ने कहा था: “वह दिन दूर नहीं कि सारे ही देशों के नीतिज्ञ मिल कर कुरआन के सिद्धांतों के अनुसार एक ही ढंग के शासन को अपनाएं। कुरआन की शिक्षाएं और उसके सिद्धान्त सत्य पर आधारित हैं और मानव जाति को खुशियों और खुशहालियों से मालामाल करने वाले हैं। अतः खुदा के भेजे हुए रसूल मुहम्मद ﷺ और उन पर अवतरित की हुई किताब कुरआन पर मुझे गर्व है और आप ﷺ की सेवा में श्रद्धांजलि पेश करता हूँ।”

डॉ. सेमूएल जानसन अपनी जगत प्रसिद्ध पुस्तक 'ओरियन्टल रिलिजेन्स' में लिखते हैं:

“वह (कुरआन) एक आह्वानकर्ता की पुकार है। हिक्मतों से भरी हुई, जिद्दो जेहद की ओर अमल का जोश भर देने वाली किताब है। अपने संदेश का विरोध करने वालों को चुनौती देने वाली किताब, दर्द और सहानुभूति के साथ उन्हें समझाने वाली किताब.....।”

सबसे पहले इस किताब ने अपने संदेश को अपनाने वालों के दिलों को गरमाया, फिर उनको एक सामूहिक आंदोलन में बदल दिया। यह आंदोलन तूफान की तरह उठा और ईरान तथा एशिया के विभिन्न देशों से गुजरता हुआ दूर तक जा पहुँचा।

मिस्टर राडवेल ने कुरआन मजीद के बारे में कहा: “अरब के जाहिल, अनपढ़ और असभ्य लोगों को एक थोड़ी सी अवधि में दुनिया के नेतृत्व और शासन के योग्य इस किताब ने बनाया। मानो किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी और एक महान क्रांति अरबों में तुरंत फैल गई।”

जर्मनी के विद्वान गोयटे ने कहा: “जब भी मैं कुरआन को देखता हूँ, नए-नए मायने वह खोलता चला जाता है। यह किताब अपने पढ़ने वाले को धीरे-धीरे अपनी ओर खींचती जाती है और अन्ततः उसके मन-मस्तिष्क पर छा जाती है।”

प्रसिद्ध इतिहासकार गिब्सन ने इन शब्दों में अपनी श्रद्धा प्रकट की है:

“एकेश्वरवाद को स्पष्ट शब्दों में बयान करने वाली और दिलों पर एकेश्वरवाद की छाप लगाने वाली महान पुस्तक कुरआन मजीद है।”

इन्साईक्लोपीडिया आफ ब्रिटानिका के सम्पादक लिखते हैं: “दुनिया में सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली और कठस्थ की जाने वाली पुस्तक कुरआन है। यह विशेषता दुनिया की अन्य किसी भी धार्मिक पुस्तक में नहीं है।”

डॉ. मौरिस बुकार्ई लिखते हैं: “आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में कुरआन का निष्पक्ष हो कर अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि दोनों में परस्पर मतैक्य पाया जाता है। यह सम्भव ही नहीं कि हम यह सोच सकें कि हज़रत मुहम्मद ﷺ के समय का कोई मनुष्य अपने समय के ज्ञान के आधार पर ऐसे वक्तव्यों का रचयिता हो सकता है, आधुनिक जानकारी तो उस समय उपलब्ध ही न थी।”

(प्रकाशक)